एस.सी.ई.आर.टी., बिहार
द्वारा विकसित

S9-E

दो वर्षीय सेवापूर्व डिप्लोमा इन एलिमेन्ट्री एजुकेशन

हिन्दी का शिक्षणशास्त्र

(उच्च-प्राथमिक स्तर)

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.),
महेन्द्रू, पटना, बिहार

पाठ्य पुस्तक विकास समूह

पत्र—S-9.E

(हिन्दी का शिक्षणशास्त्र, उच्च प्राथमिक)

दिशाबोध	श्री दीपक कुमार सिंह, भा.प्र.से., अपर मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार, पटना श्री सज्जन राजसेकर, भा.प्र.से., निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, महेन्द्रू, बिहार, पटना डॉ० एस.पी.सिन्हा, सलाहकार, शिक्षा विभाग, बिहार, पटना
समन्वयक	डॉ० सुरेन्द्र कुमार, विभागाध्यक्ष भाषा एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, एस. सी.ई.आर.टी. बिहार, पटना
लेखक समूह	श्रीमती आशा सिन्हा, व्याख्याता, बाईट, मूसापुर, कटिहार
	श्रीमती निर्मला, व्याख्याता, डायट नूरसराय, नालन्दा
	श्री आनंद कुमार सिंह, व्याख्याता, पी.टी.ई.सी. सासाराम
	श्री ब्रजेश कुमार, व्याख्याता,पी.टी.ई.सी. नगरपारा, भागलपुर
	श्रीमती सुहानी शुभम, प्रभारी प्राचार्या, पी.टी.ई.सी. फुलवरिया, भागलपुर
समीक्षक	श्रीमती पम्मी कुमारी, प्रभारी प्राचार्या, बाईट माधोपट्टी, दरभंगा
	श्रीमती ज्योति सिंह, व्याख्याता, सी.टी.ई., भागलपुर
भाषा समीक्षक	भूपेन्द्र सिंह यादव ,व्याख्याता, डायट डुमरांव, बक्सर

पाठ–सूची

इकाई	इकाई का नाम	पृष्ठ संख्या
1	उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी शिक्षण, उपागम एवं सहायक सामग्री	4–18
2	साहित्य और साहित्य के द्वारा शिक्षण	19–40
3	प्रशिक्षुओं की भाषाई क्षमताओं का विकास	41–66
4	कक्षा प्रक्रियाएँ तथा आकलन	67–76
5	संदर्भ–सूची	77

इकाई–1

परिचय

विद्यार्थियों की सम्पूर्ण शिक्षा–प्रक्रिया में भाषा का विशेष महत्व है। भाषा न केवल संप्रेषण का माध्यम है बल्कि वह अन्य विषयों के अध्ययन–अध्यापन का माध्यम भी है। हिन्दी भाषा अपने विविध रूप–रंग में विद्यालयी पाठ्यचर्चा में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। हिन्दी भाषा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में यह जरूरी है कि उस भाषा की संरचना से परिचित हुआ जाये और उसका अनुप्रयोग करते हुए भाषा–प्रयोग की दक्षता हासिल करना, हिन्दी भाषा–शिक्षण का सर्वोपरि उद्देश्य है। हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं का परिचय प्राप्त करते हुए उसकी समझ तथा अनुभूति हिन्दी भाषा–शिक्षण का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष है। एक हिन्दी भाषा शिक्षक में यह योग्यता होनी चाहिए कि वह हिन्दी भाषा की प्रकृति, शिक्षण उद्देश्यों तथा प्रभावी प्रयोग विधियों से परिचित होकर कक्षा में उनका प्रभावी प्रयोग कर सके। साथ–ही, विभिन्न प्रकार की शिक्षण–सामग्री, शैक्षिक क्रियाओं, गतिविधियों के आयोजन में दक्षता प्राप्त करना भी उतना ही जरूरी है। हिन्दी शिक्षण का संप्रेषणपरक उपागम अपनाते हुए बेहतर शिक्षण कार्य परिणति ही इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

मातृभाषा के रूप में हिन्दी भाषा सीखने का अर्थ यही है कि बच्चे अलग–अलग संदर्भों में हिन्दी भाषा का प्रभावी प्रयोग कर सकें। यदि हम अपने जीवन मे विभिन्न संर्दभों को ध्यान से देखें तो ज्ञात होगा कि हम अलग–अलग संर्दभों में अलग–अलग उद्देश्यों के लिए हिन्दी भाषा का प्रयोग करते हैं। इन्हीं उद्देश्यों को पूरा करना हिन्दी भाषा–शिक्षण का उद्देश्य है। अब प्रश्न यह उठता है कि हिन्दी भाषा का प्रयोग कहाँ–कहाँ हो सकता है, हो रहा है, होता है?

प्रायः हम हिन्दी भाषा का प्रयोग संप्रेषण के माध्यम के रूप में देखने के आदि हैं। जबकि हम जानते हैं कि विचार करने के लिए भी हिन्दी/भाषा की आवश्यकता होती है। भाषा विचारों को वहन करती है और विचारों का निर्माण भी करती है।

राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा 2005 और हिन्दी भाषा शिक्षण

किसी बच्चे/बच्ची के व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। भाषा के इस रूप को बच्चे/बच्ची अपने माता–पिता, परिजनों से सुनकर और उस माहौल में रहकर अनायास ही सीख जाते हैं। वे जब स्कूल जाते/जाती हैं तब उनके पास इस भाषा का समृद्ध संसार होता है। साथ–ही, स्कूल की भाषा का भी एक रूप होता है। कुल मिलाकर उनके पास अनेक भाषाओं का संसार होता है। इसे समाज की बहुभाषिक स्थिति कह सकते हैं। दरअसल बहुभाषिकता भारतीय समाज के भाषा बोध की रचनात्मक सच्चाई है। वह हमारी परम्परा और संस्कृति का अभिन्न अंग है। बच्चे/बच्ची की मौलिकता एवं सहज रचना शक्ति को सामने लाना, हिंदी भाषा शिक्षक का प्राथमिक दायित्व है। लिहाजा आत्मीय माहौल बनाना उसकी ही जिम्मेदारी है। इस माहौल में ही विभिन्न भाषाई कौशलों का विकास संभव है। कहना न होगा हिंदी शिक्षण का दायरा इतना व्यापक होना चाहिए कि उसमें उल्लेखित सारे सरोकार शामिल

हों। भाषा बच्चे/बच्ची के रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा है यह समझे बिना स्कूल में हिन्दी शिक्षण की कोई अवधारणा नही बन सकती।

भाषा शिक्षण के लिए स्कूल में कोई कार्यक्रम शुरू होता है तो हमें बच्चे की सहज भाषाई क्षमता को पहचानना होगा और समझना होगा और समझाना होगा कि भाषाएँ सामाजिक–सांस्कृतिक रूप से बनती है एवं हमारे प्रतिदिन के व्यवहार से बदलती है। – 41:2005 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एन.सी.ई.आर.टी, दिल्ली

हिन्दी अनेक रूपों से प्राथमिक बच्चें/बच्चियों के जीवन का हिस्सा बनती है। कहीं वह माध्यम भाषा के रूप में तो कहीं विषय के रूप में। इस तरह हिन्दी शिक्षण को केवल साहित्य तक सीमित करना, उसके व्यापक दायरे को संकुचित करना होगा। विभिन्न विषयों के अध्ययन के दौरान समझ, अवधारणाएँ भाषा में ही बनती है। लिहाजा अन्य विषयों के अध्ययन के दौरान भी हिन्दी की भूमिका है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या इसे विशेष तौर पर रेखांकित करती है।

भाषा शिक्षण केवल भाषा कक्षा तक ही सीमित नही होता है। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित की कक्षाएँ भी एक तरह से भाषा सीखने का अवसर प्रदान करती है। किसी विषय को सीखने का मतलब है उसकी अवधारणाओं को सीखना, उसकी शब्दावली को सीखना उनके बारे में आलोचनात्मक ढंग से चर्चा करना और उनके बारे में लिख सकना। – 42:2005 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एन.सी.ई.आर.टी, दिल्ली

बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखां 2008 और हिन्दी भाषा शिक्षण

बिहार पाठ्यचर्या यह साफ तौर पर रेखांकित करती है कि भाषा केवल संवाद और संप्रेषण का काम ही नहीं करती अपितु वह शिक्षण के सम्पूर्ण कार्यकलापों के लिए माध्यम की भूमिका का भी निवर्हन करती है। समाजीकरण और संस्कृतिकरण की प्रक्रियाएं भी भाषा के द्वारा सम्पन्न होती है। समाजीकरण और संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में जिस सांस्कृतिक अस्मिता का निर्माण होता है उसके निर्माण में विभिन्न परिवेशों, जो जन्म के साथ ही घरेलू, सामाजिक और विद्यालयी वातावरण से प्राप्त है की आधारभूत भूमिका होती है। बिहार पाठ्यचर्या इस बात की चिंता करती है कि स्कूल में अपनी शुरुआत और फिर विकास करने वाले छोटे शिक्षार्थियों के भाषाई कौशल को कैसे विकसित किया जाय और समृध्द बनाया जाय ? सहानुभूति पूर्ण संवाद और संवेदना से समृध्द ज्ञान के आधार पर ही भाषाई कौशल का विकास किया जा सकता है। पाठ्यचर्या की टिप्पणी गौरतलब है, बच्चा व्यक्ति, स्थान और विषय के अनुसार अपने भाषिक व्यवहार में परिवर्तन कर सकता है, लेकिन वह भाषा की इन जटिल संरचनाओं के नियम नहीं बता सकता है। कक्षा में बच्चे की इन विशेषताओं को ध्यान में रखकर उसके भाषाई कौशल का विकास सहानुभूति संवाद तथा संवेदनात्मक ज्ञान के द्वारा किया जाना चाहिए **(37:2008 बिहार पाठ्यचर्या की रुपरेखा, एस.सी.ई.आर.टी. पटना)** कहना न होगा भाषाइ जटिलताओं को समझने और प्रसंगानुकूल उनके व्यवहार की बारीकियों से रू–ब–रू हुए बिना विभिन्न भाषाई कौशलों को अर्जित करना संभव नहीं।

बिहार में प्रथम भाषा के रूप में स्वाभाविक पसंद हिन्दी ही है। राज्य में बोली जाने वाली भाषाओं (संथाली आदि भाषाओं को छोड़कर) और हिन्दी में एक ही भाषा परिवार की भाषाएँ होने के कारण एक स्वाभाविक संबंध है। सच तो यह है कि बिहार में बोंली जाने वाली हिन्दी को समृध्द बनाने में बिहार की भाषाओं का महती योगदान है। अधिगम में इस समझ को शामिल कर बेहतर भाषाई पुल का निर्माण संभव है।

हिन्दी में आंचलिक भाषाओं की सुगंध इसे और भी सुवासित, सशक्त और समृद्ध बनाती है। सभी प्रमुख विधाओं और ज्ञान के क्षेत्रों में इसका समृद्ध साहित्य भंडार है। 38:2008, बिहार पाठ्यचर्या की रुपरेखा, एस.सी.ई.आर.टी. पटना

कक्षा 06 से 08 (उच्च प्राथमिक) तक के बच्चों के लिए यह समय संधिकाल है,जब वे अपने उम्र के एक पड़ाव को पूरा करते हुए दूसरे पड़ाव की ओर प्रस्थान करते हैं। इस समय उनकी मानसिक क्षमताओं, संवेगात्मक स्थिति में परिवर्तन होता है और वे जीवन जगत को एक नई दृष्टि से देखने के लिए प्रवृत्त होते हैं। भाषा के स्तर पर वे अनेक प्रकार की कुशलता प्राप्त कर लेते हैं और उनके चिंतन का स्तर भी अपेक्षाकृत अधिक होता है। वस्तुओं और घटनाओं को और भी पैनी दृष्टि से देखने की क्षमता रखते हैं। इस स्तर पर उनकी भाषिक कुशलताओं का उत्तरोत्तर विकास जरूरी है। साहित्य के सौंदर्यबोध और अपनी लेखन–शैली के विकास की दृष्टि से भी यह समय महत्वपूर्ण है। पाठय् सामग्री में निहित विभिन्न प्रकार के पूर्वाग्रहों को समझकर अपना निर्णय ले सके, यह आवश्यक है।

हिन्दी शिक्षण का उद्देश्य (उच्च प्राथमिक स्तर)

- विद्यार्थियों को इस योग्यता तक पहुँचना है कि निर्धारित पाठ्यक्रम के समकक्ष स्तर की शब्दावली को समझ सके।
- विद्यार्थियों के उच्चारण को शुद्ध बनाना तथा पाठ्यक्रम के स्तर की भाषा को भली–भांति बोल सके, ऐसी क्षमता प्रदान करना।
- स्वयं के अनुभवों के आधार पर भाषा का सृजनशील प्रयोग।
- विद्यार्थियों के शब्द–भण्डार में क्रमशः वृद्धि करना।
- ध्वनि रूपों में शुद्ध उच्चारण को समझना।
- शब्दों के शुद्ध उच्चारण को समझना।
- वर्णों और शब्दों को उचित आकार व उचित क्रम में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विराम चिह्न का प्रयोग करते हुए लिखने की क्षमता विकसित करना।
- वाक्य पढने की क्षमता विकसित करना।
- व्याकरण का सटीक उपयोग।
-

उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यक्रम एवं पाठय् पुस्तकों की समझ –

परिचय–

आदि काल में शिक्षा का स्वरूप पूर्णतया अनौपचारिक होता था अर्थात्, शिक्षा किसी विधि या क्रम से बंधी हुई नहीं थी। उस समय बालकों की शिक्षा उनके परिवार एवं समाज की जीवन चर्या के मध्य चलती रहती थी तथा बालक उसमें भागीदार बनकर अनुभव एवं निरीक्षण के माध्यम से तथा अपने बड़ों एवं पूर्वजों के अनुभव सुनकर शिक्षा प्राप्त करता था, किन्तु सभ्यता के विकास के साथ–साथ मानव के ज्ञानराशि के संचित कोष में निरन्तर वृद्धि होती गयी तथा

मनुष्य के जीवन में जटिलताएँ एवं विविधताएँ आती गयीं। परिणामस्वरूप व्यक्ति के पास समय और साधन का अभाव होने लगा तथा उसकी शिक्षा अपूर्ण रहने लगी। अतः प्रत्येक विकासशील समाज ने अपने बालकों को समुचित शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से इसे विधिवत एवं क्रमबद्ध बनाने के प्रयास प्रारम्भ किए। विद्यालयों का उद्‌भव तथा उनकी स्थापना इन्ही प्रयासों का परिणाम है। विद्यालयों द्वारा बालकों को जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त करने तथा उन्हे समुचित ढंग से शिक्षा प्रदान करने हेतु जो ज्ञानराशि निश्चित एवं निर्धारित की गयी तथा की जाती है उसे ही पाठ्यक्रम का नाम दिया गया। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि पाठ्यक्रम अध्ययन का ही क्रम है जिसके अनुसार चलकर विद्यार्थी अपना विकास करता है। अतः यदि शिक्षा की तुलना दौड़ से की जाय तो पाठ्यक्रम उस दौड़ के मैदान के समान है जिसे पार करके दौड़ने वाले अपने निश्चित लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं।

माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार–

पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक विषयों से नहीं है जो विद्यालयों में परम्परागत रूप से पढाएँ जाते हैं बल्कि इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता भी सम्मिलित होती है, जिनको विद्यार्थी विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कार्यशाला, खेल के मैदान तथा शिक्षक एवं विद्यार्थियों के अनेक अनौपचारिक संपर्कों से प्राप्त करता है जो विद्यार्थियों के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करता है और उनके संतुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायता देता है।

<u>पाठ्यक्रम निर्धारण के सिद्धान्तः</u>–

- पाठ्यक्रम शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति का एक प्रभावी साधन है। इसके अन्तर्गत विद्यालय के समस्त कार्यकलाप आ जाते हैं। मातृभाषा शिक्षण के सम्बन्ध में जब अध्यापक प्रत्येक स्तर के पाठ्यक्रम की परिधि से परिचित होंगे तभी वह मातृभाषा–शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने में बालक की सहायता कर पाएंगे।
- किसी भी कक्षा का पाठ्यक्रम निर्धारित करने के पूर्व बालक की पूर्व–अर्जित जानकारी एवं अनुभवों को जानना आवश्यक है।
- पाठ्यक्रम पूर्व जानकारी पर आधारित होना चाहिए।
- बालक की आयु, योग्यता और रूचि के अनुसार पाठ्यक्रम होना चाहिए।
- पाठ्यक्रम बालक की उन्नति की एक सीढी है इसलिए बच्चों की अवस्था, योग्यता और रूचि के अनुसार सगंठित किया हुआ पाठ्यक्रम सदा बालकों को उन्नति की ओर अग्रसर करेगा।
- पाठ्यक्रम में क्रमबद्धता होनी चाहिए।
- पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त अभिनय, गीत, संवाद, परिचर्चा, अन्त्याक्षरी, घटना वर्णन, प्रश्नोत्तरी, भाषण, खेल–कूद व अन्य महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम सहगामी क्रिया–कलापों के आधार पर भाषा और साहित्य का उपयोग।
- मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति के संदर्भ और आवश्यकतानुसार समुचित भाषा–शैली व प्रयोग को चुनने की समझ का विकास।
- भाषा की नियमबद्ध प्रकृति को पहचानना और उसका विश्लेषण करना।

- सुनी, पढी और समझी हुई भाषा को सहज और स्वाभाविक लेखन द्वारा अभिव्यक्ति करने की क्षमता का विकास करना।
- विभिन्न साहित्यिक विधाओं और ज्ञान से संबंधित अन्य विषयों की समझ का विकास तथा उनसे आनंद प्राप्ति की क्षमता का विकास।
- दृश्य और श्रव्य माध्यमों की सामग्रियों बाल साहित्य, पत्र–पत्रिकाएँ, दूरदर्शन व कम्प्यूटर जनित कार्यक्रम, नाटक, सिनेमा, परिचर्चा, भाषण आदि को पढकर, देखकर और सुनकर समझने तथा उस पर स्वतंत्र व स्वाभाविक मौखिक एवं लिखित प्रतिक्रिया व्यक्त करने की क्षमता का विकास।

पाठ्य पुस्तकों की समझ

भाषा शिक्षण में पाठ्य–पुस्तकें महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। प्राचीन भारत में पाठ्य पुस्तक के लिए ग्रन्थ शब्द का प्रचलन था। ग्रन्थ का अर्थ है – गुंथना, बांधना, नियमित ढंग से जोड़ने के क्रम में रखना आदि।

गुड के अनुसार, ''एक निश्चित पाठ्यक्रम के अध्ययन के प्रमुख साधन के रूप में एक निश्चित शैक्षिक स्तर पर प्रयुक्त करने के लिए एक निश्चित विषय पर व्यवस्थित ढंग से लिखी हुई पुस्तक पाठ्य पुस्तक है।''

प्रो० हेरोलिकर के अनुसार – पाठ्य पुस्तक ज्ञान के विभिन्न तत्वों, आदतों भावनाओं, क्रियाओं तथा अभिरूचियों का पुंज है।

पाठ्य पुस्तक की आवश्यकता

प्राचीन काल में लिपि के आविष्कार से पूर्व भाषा की शिक्षा मौखिक ही थी। लिपि का आविष्कार हो जाने से हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का प्रयोग होने लगा। पाण्डुलिपियाँ कम हुआ करती थी। अतः अध्यापक मौखिक रूप में पढ़ा देते थे और विद्यार्थी उस सामग्री को याद कर लिया करते थे। मुद्रण कला के आविष्कार ने पाठ्य पुस्तकों को सुलभ बना दिया और धीरे–धीरे पाठ्य–पुस्तकें सम्पूर्ण शिक्षा–प्रणाली का आधार बन गयी।

पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता के विषय में निम्नलिखित बातें कहीं जा सकती हैः–

- पाठ्य पुस्तकों में अनेक प्रकार की सूचनाएँ एक ही स्थान पर मिल जाती हैं। अतः सूचनाओं के लिए इनकी आवश्यकता है।
- इनके प्रयोग से पाठ को पढ़ने और पढ़ाने में सहायता मिलती है।
- पठित पाठ को पुनः स्मरण करने–कराने में सबल साधन है।
- इनसे ज्ञानोपार्जन में सहायता प्राप्त होती है।
- अध्यापक अपनी सुविधानुसार बालकों की योग्यता का ध्यान रखते हुए शिक्षा दे सके, इसके लिए पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता है।
- भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने के लिए पाठ्य पुस्तकों का होना अति आवश्यक है। इनकी आवश्यकता अध्यापक और विद्यार्थी दोनों को है।
- सम्पूर्ण कक्षा को एक साथ पढ़ाने में पाठ्य पुस्तकें बड़ी उपयोगी होती हैं। इनकी सहायता से एक अध्यापक अनेक विद्यार्थियों को एक साथ सरलता से पढ़ा सकता है। इससे समय और शक्ति का अपव्यय नही होता है।

- विद्यार्थियों को गृह–कार्य देने में इनसे सुविधा होती है।

हिन्दी विषय के पाठ्य पुस्तक (उच्च्व प्राथमिक स्तर)

मौखिक तथा स्वतंत्र भाव प्रकाशनः–

- कहानी कहना, बाल जीवन सम्बन्धी बातचीत।
- स्पष्ट तथा शुद्ध भाव–प्रकाशन और प्रवाह पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।

पढनाः–

- पाठ्य–पुस्तकः– शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण तथा शब्द समूह का ध्यान रखते हुए पढ़ना। उचित विरामों के साथ पढ़ना। गद्य–पाठों का आनन्द लेना। समझ के साथ मौन पाठ करना।
- सहायक पुस्तकः– सहायक पुस्तकों का अधिक से अधिक प्रयोग करने की रूचि को बढ़ावा देना।

लिखना तथा रचनाः–

- श्रुतलेख।
- सुलेख।
- गद्य एवं पद्य (तुकबन्द) में मौलिक रचना करना।
- कहानियों के छोटे–छोटे कथानक बनाना।
- अधिक योग्यता के पत्र लिखना।

व्याकरणः–

- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण के भेद तथा उनकी पद–व्याख्या से परिचय।
- भाषा के सभी अंगों का सम्यक् ज्ञान।

शिक्षण के विभिन्न उपागम, विधियाँ तथा रणनीतियाँ

परिचय

शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है जिस पर प्रत्येक देश की शासन प्रणाली, सामाजिक दर्शन, सामाजिक परिस्थितियाँ तथा मूल्यों एवं संस्कृति का प्रभाव पड़ता है। प्रजातन्त्र शासन प्रणाली के कारण भारत में जनता की इच्छा को वरीयता देते हुए सम्मान दिया जाता है। इस प्रकार की शिक्षण प्रणाली में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों सक्रिय रहते हैं और उनके मध्य शाब्दिक और अशाब्दिक अन्तःक्रिया चलती रहती है। शिक्षक का उद्देश्य विद्यार्थी को अधिक से अधिक सीखाना है। वह बालक को शिक्षण के द्वारा सिखाता है। शिक्षक बालक को नवीन तथ्यों की सूचना देता है। विद्यार्थियों का शिक्षण करते समय अध्यापक अपनी सभी क्षमताओं का उपयोग करता है। अध्यापक अपने पूर्ण मनोयोग, अपने पूर्व अनुभव दक्षताओं के साथ विभिन्न प्रविधियों, विधियों तथा विधाओं का उपयोग करते हैं, अध्यापक द्वारा प्रयोग में लायी गयी विधाएँ या उपागम उसकी शिक्षण कला को सुगम बनाती हैं।

उद्देश्य

- शिक्षण की नवीन विधाओं (उपागम) की जानकारी देना।
- शिक्षण के व्यवहारवादी, रचनात्मक और आलोचनात्मक उपागम की विधियों तथा रणनीतियों के बारें में समझ बनाना।

व्यवहारवादी उपागम

व्यवहारवादी उपागम वह विज्ञान है जो शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षार्थियों के व्यवहार का वैज्ञानिक विधियों द्वारा अध्ययन करता है और आवश्यकता के अनुसार उनके व्यवहारों का अध्ययन करता है। इसका मुख्य उद्देश्य सीखने की प्रक्रिया का परिमार्जन करना है, जिससे विद्यार्थियों में सरलता से वांछित उद्देश्यों के अनुकूल व्यवहार में बदलाव किया जा सके।
व्यवहार अनुक्रियाओं का कुल योग होता है जिसे कोई भी प्राणी जीवन की परिस्थितियों के प्रति करता है, जिनसे उनका सामना होता है। शैक्षिक परिस्थितियों, समस्याओं के प्रति व्यक्ति के व्यवहार एवं उसके परिवर्तन से सम्बन्धित ज्ञान, कौशल, क्रिया की जब जानकारी प्राप्त की जाती है तो वहाँ व्यवहार तकनीकी निहित होती है। व्यवहार उपागम शिक्षा, शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। इसका मुख्य सम्बन्ध शिक्षक–शिक्षार्थी के व्यवहार के निरीक्षण, परीक्षण एवं मूल्यांकन से होता है। मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान होता है, इसलिए इसमें मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त अत्यधिक सहायक होते हैं।
व्यवहारवादी उपागम इनपुट–आउटपुट सिद्धान्त के अनुसार सीखने की व्याख्या करता है। यह उपागम सीखने का मकसद, सीखने वाले के व्यवहार को नियन्त्रित करता है। इसलिए इसमें अनेक विधियों का उपयोग किया जाता है जिसमें सूचनाओं, तथ्यों और विचारों का एकतरफा प्रवाह होता है, जैसे – व्याख्यान विधि। इसमें माना जाता है कि ज्ञान बाहर से सीखने वाले के भीतर प्रवेश करता हैं और जरूरत पड़ने पर सीखने वाले उसी ज्ञान को संप्रेषित कर देते हैं।

रचनात्मक उपागम

रचनात्मक उपागम ''ज्ञान के निर्माण के लिए अधिगम'' के अनुमान पर आधारित है। यह ऐसा प्रतिमान है जो पारंपरिक उद्देश्यपूर्ण उपागम के विपरीत है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा NCF 2005 में बालक को एक सहज शिक्षार्थी के रूप में पहचानने की आवश्यकता पर बल दिया जाता है तथा कहा कि ज्ञान उसकी अपनी ही क्रियाशीलता का परिणाम है जिसमें एक ऐसे अधिगम पर बल दिया जा रहा है जहाँ बच्चे अपने ज्ञान की रचना कर सके एवं अपनी क्षमताओं का विकास कर सकें तथा एक सक्रिय शिक्षार्थी बने रहें। एक शिक्षक को अधिगम को प्रोत्साहन देने हेतु रचनावादी उपागम के अनुरूप होना होगा। रचनात्मक उपागम की विशिष्टताएँ निम्नलिखित हैं:–

- ज्ञान एक सक्रिय अर्थ निर्माण की प्रक्रिया है जिसमें शिक्षार्थी अपने अनुसार अर्थ का निर्माण करता है।
- किसी भी परिस्थिति के बारे में शिक्षार्थी के अपने ही विचार होते हैं जो अधूरे भी हो सकते हैं परन्तु ये अर्थ निर्माण में तथा परिस्थिति समझने में अहम भूमिका निर्वाह करते हैं।
- शिक्षार्थी अपने ज्ञान का निर्माण पारस्परिक क्रिया, अवबोध तथा अनुभव द्वारा करते हैं।

- शिक्षार्थी की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का उसके विचारों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

इसमें गतिविधि आधारित शिक्षण विधि का उपयोग किया जाता है इसमें विद्यार्थियों के चिन्तन क्षमता पर बल दिया जाता है जिससे उसकी चिन्तन क्षमता का विकास हो एवं विद्यार्थियों के सोचने समझने की क्षमता विकसित हो जाए। इसलिए इसमें व्याख्यान विधि की अपेक्षा गतिविधि आधारित शिक्षण का उपयोग किया जाना उपयुक्त है।

आलोचनात्मक उपागम

आलोचनात्मक उपागम का श्रोत आलोचनात्मक शिक्षण शास्त्र है। यह शिक्षणशास्त्र मानता है कि शिक्षा की पूरी प्रक्रिया राजनैतिक होती है। इसलिए शिक्षण में पढ़ाने के तरीकों को राजनीति से अलग नहीं किया जा सकता है। किसे, कितनी, क्या, कैसे कब–तक क्यों पढ़ाना हैं। ये सारे राजनैतिक सरोकार है। यह शिक्षण शास्त्र मानता है कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य समाज में व्यक्त शक्ति समीकरणों की पहचान करके उनमें इस प्रकार हस्तक्षेप करना है कि समाज में समता न्याय तथा मानवीयता की स्थापना हो । इसके लिए जरुरी है कि पढ़ाने के तरीके ऐसे हो जिनसे विधाथियों का चयन समाज में फैली विषमताओं, अन्यायों, अंधविश्वासों, मिथकों में अन्तनिर्हित शक्ति समीकरणों की तरफ टिके और वे इनके टकराने के लिए आवश्यक समझ तथा साहस का विकास करे। जाहिर सी बात है कि व्याख्यान विधि या निजी अनुभवों पर केन्द्रित पढ़ने के तरीके सामाजिक संरचनाओं में अन्तनिर्हित मान्याताओं की पहचान कर पाने के कमज़ोर रास्ते है। ऐसा तभी संभव है जब सामाजिक घटनाओं तथा तथ्यों पर संवाद किया जाय। इसलिए आलोचनात्मक उपागम संवाद को शिक्षण की प्रक्रिया के केन्द्र में रखता है। संवाद करना सामान्य बातचीत करना नहीं है। संवाद का अर्थ है कही जा रही बातों में अन्तनिर्हित मान्यताओं को सामने लाना और उनमें निहित शक्ति समीकरणों को उजागर करने के बाद उनके समतामूलक बनाने के विकल्प प्रस्तुत करना। आलोचनात्मक उपागम का उद्देश्य शिक्षा को मुक्तिदायी बनाना है। मुक्तिदायी किसी भाववादी अर्थ में नहीं जिसमें किसी परमसत्ता के अस्तित्व में स्वयं को विलीन कर देने का स्वप्न संजोया जाता है बल्कि उत्पीड़नों, तथा उत्पीड़नकारी संरचनाओं से मुक्त होना चाहें। वे उत्पीड़नकारी संरचनाएँ धार्मिक हों, आर्थिक हों, सांस्कृतिक हों, या राजनैतिक। इसलिए आलोचनात्मक उपागम में "विवेकीकरण" को एक महत्वपूर्ण संकल्पना माना जाता है।

शिक्षण सहायक–सामग्री

पाठ को ठीक से समझने के लिए शिक्षक जिन–जिन सामग्रियों का प्रयोग करता है वह शिक्षण–सामग्री या शिक्षण–अधिगम सहायक सामग्री कहलाती है। इसमें पाठयपुस्तक आदि परम्परागत सामग्रियाँ तो हैं ही एनिमेशन आदि नयी सामग्री भी इसमें जुड़ गई है। इन सामग्रियों के माध्यम से सीखा ज्ञान न केवल विद्यार्थियों में उत्साह जागृत करता है वरन् सीखे हुए ज्ञान को लम्बे समय तक अपने स्मृति पटल में संजोए रखने में भी सहायक होता है। दूसरी ओर शिक्षक भी अपने अध्याय के प्रति उत्साहित रहते है। परिणामस्वरूप कक्षा का वातावरण हमेशा सकारात्मक बना रहता है।

वही शिक्षक विद्यार्थियों के लिए आदर्श होता है और उसी शिक्षक का शिक्षण आदर्श कहलाता है जो अपनी पाठ्य–सामग्री को रोचक सहायक सामग्री के माध्यम से प्रस्तुत करता है क्योंकि ये न केवल विद्यार्थियों का ध्यान केन्द्रित करती है बल्कि उन्हें उचित प्रेरणा भी देती है चाहे वह वास्तविक वस्तु हो, चित्र, चार्ट या कोई तकनीकी उपकरण। सभी से विद्यार्थियों के मस्तिष्क में एक बिंब निर्माण होता है। अध्यापन में नवीनता लाने के लिए शिक्षण में सहायक सामग्री अनिवार्य है।

डेण्ड के अनुसार, "सहायक सामग्री वह सामग्री है जो कक्षा में या अन्य शिक्षण परिस्थितियों में लिखित या बोली गई पाठ्यसामग्री को समझने में सहायक होती है।

सहायक सामग्री के उद्देश्य

सहायक सामग्री का उपयोग निम्नांकित उद्देश्य प्राप्ति हेतु किया जाता हैः—

- पाठ के प्रति विद्यार्थियों में रूचि जागृत करना।
- विद्यार्थियों में तथ्यात्मक सूचनाओं को रोचक ढ़ग से प्रस्तुत करना।
- विद्यार्थियों को अधिक क्रियाशील बनाना।
- सीखने की गति में सुधार करना।
- जटिल विषयों को भी सरस रूप में प्रस्तुत करना।
- अभिरूचि पर आशानुकूल प्रभाव डालना।
- तीव्रबुद्धि एवं मन्दबुद्धि विद्यार्थियों को योग्यतानुसार शिक्षा देना।
- विद्यार्थी का ध्यान अध्ययन (पाठ) की ओर केन्द्रित करना।
- अमूर्त पदार्थों को मूर्त रूप देना।

शिक्षण अधिगम सामग्री

1. श्रव्य सहायक सामग्रीः— मौखिक, उदाहरण, रेडियो, टेप रिकॉर्डर, ग्रामोफोन इत्यादि।
2. दृश्य सहायक सामग्रीः— श्यामपट्ट, बुलेटिन बोर्ड, मानचित्र, ग्लोब, चित्र, रेखाचित्र, कार्टून, मॉडल, पोस्टर, इत्यादि।
3. श्रव्य—दृश्य सामग्रीः— चलचित्र, नाटक, कठपुतली, टेलीविजन इत्यादि।

1. श्रव्य सहायक सामग्री

श्रव्य सहायक सामग्री में विद्यार्थी अपनी इन्द्रियों के द्वारा सुनकर ज्ञान ग्रहण करता है।

- मौखिक उदाहरण — मौखिक उदाहरणों का प्रयोग प्रमुख रूप से सूक्ष्म भावों को शब्द चित्र खींचने के लिए किया जाता है। किसी वस्तु, विचार को मौखिक वार्तालाप के माध्यम से सरल स्वरूप प्रदान करने में उदाहरणों का प्रयोग जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में किया जाता है।
- रेडियो — रेडियो श्रव्य साधन और मनोरंजन उपकरण की दृष्टि से सबसे अच्छा सुलभ और सस्ता उपकरण है। ज्ञानवाणी नाम से रेडियो कार्यक्रम इन के द्वारा संचालित किया जा रहा है जिसके माध्यम से विद्यार्थी घर बैठे शिक्षण कर सकते हैं।

- टेपरिकॉर्डर – टेपरिकॉर्डर के माध्यम से महत्वपूर्ण भाषण अथवा सामग्री रिकॉर्ड करके स्थाई तौर पर रखी जा सकती है और भविष्य में कभी भी सुना जा सकता है।
- ग्रामोफोन – ग्रामोफोन श्रव्य साधनों का सबसे पुराना उदाहरण है। इसके माध्यम से किसी घटना, विवरण, गीत इत्यादि को सुनने में प्रयोग किया जाता है।

2. दृश्य सहायक सामग्री –

दृश्य सहायक सामग्री के द्वारा विद्यार्थी अपनी दृश्य इन्द्रियों के द्वारा देखकर ज्ञान अर्जित करता है।

- श्यामपट्ट – इसे अध्यापक का विश्वसनीय मित्र भी कहा जाता है। यद्यपि यह स्वयं कोई दृश्य सामग्री नहीं है तथापि इसका उपयोग एक अच्छी दृश्य सामग्री के रूप में किया जा सकता है। श्यामपट्ट कार्य की सफलता अध्यापक पर निर्भर करती है। श्यामपट्ट का प्रयोग रेखाचित्र, मानचित्र, पाठ सार, गृह कार्य देने के लिए किया जा सकता है।
- प्रतिरूप (मॉडल) – पर्यावरण अध्ययन शिक्षण में प्रतिरूप का बहुत बड़ा महत्त्व है। प्रतिरूप को कक्षा में प्रदर्शित करने से विद्यार्थियों को वास्तविक वस्तु का ज्ञान होता है। जो वस्तु आकार की दृष्टि से बहुत बडी हो उनको कक्षा–कक्ष में लाना संभव नहीं है। अतः उस वस्तु का प्रतिरूप छोटे आकार का होता है आसानी से कक्षा–कक्ष में प्रस्तुत किया जा सकता है।
- रेखाचित्र – रेखाचित्र विभिन्न विषयों के शिक्षण में बड़ी प्रभावी सहायक सामग्री है। इसमें रेखाओं तथा प्रतीकों के द्वारा अतःसंबंध स्पष्ट किए जाते हैं।
- मानचित्र – इसके द्वारा विद्यार्थियों के सम्मुख अमूर्त वस्तुओं का ज्ञान मूर्त रूप से दिया जाता है। यह भूगोल शिक्षण में बहुत–ही प्रभावशाली सामग्री है।
- चित्र – चित्र बच्चों की जिज्ञासा वृद्धि एवं कल्पनाशक्ति को बढ़ाने में मदद करता है। चित्र सरल, सही और सत्य रूप में प्रदर्शित होना चाहिए। चित्र का आकार कक्षा के आकार के अनुकूल तथा उसमें शीर्षक दिया हुआ होना चाहिए।

3. श्रव्य–दृश्य सामग्री

श्रव्य–दृश्य सामग्री में विद्यार्थी अपने श्रव्य–दृश्य इन्द्रियों दोनों के द्वारा देखकर तथा सुनकर ज्ञान ग्रहण करता है। इस सहायक सामग्री के द्वारा प्राप्त ज्ञान अधिक स्थाई होता है।

- चलचित्र – चलचित्र में विद्यार्थी व्यक्तियों को वास्तविक परिस्थितियों में कार्य करते हुए देखता है। चलचित्र विद्यार्थी की सभी ज्ञान इन्द्रियों को प्रभावित करता हैं। शिक्षाप्रद चलचित्रों को विद्यार्थियों को देखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- नाटक – किसी भी विषय को रंगमंच पर नाटक के माध्यम से सजीव बनाया जा सकता है। इसके द्वारा संवाद बोलने एवं रंगमंच पर अभिनय करने की कला में दक्षता आती है।
- दूरदर्शन – टेलीविजन जनसंपर्क का अत्यन्त प्रभावशाली माध्यम है, जिसके द्वारा समाचार–पत्रों, रेडियो, सिनेमा इत्यादि सभी की एकसाथ पूर्ति हो सकती है। ज्ञानदर्शन नामक शैक्षिक दूरदर्शन चैनल के द्वारा संचालित किया जा रहा है। जिसके माध्यम से विद्यार्थी घर बैठे शिक्षण का कार्य कक्षा–कक्ष जैसा कर सकते हैं।
- कठपुतली – निर्जीव कठपुतलियों के माध्यम से पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण की अधिकांश विषय–वस्तु का अध्यापन नाटकीय विधि से बड़े प्रभावशाली ढ़ंग से किया जाता है।

अधिगम सामग्री की विधियाँ और तारतम्यता

पहले के समय में प्रचलित शिक्षक प्रधान–प्रणाली में इस बात पर जोर होता था कि सामग्री का उपयोग इस प्रकार होना चाहिए कि शिक्षक अपनी बात बच्चे को ठीक से समझा सके। लेकिन आज के समय में यह सोच बदली है और यह महसूस किया गया कि सामग्री के साथ बच्चों का जुड़ाव जरूरी है। बच्चों को शैक्षिक सामग्री के निर्माण में भागीदार होना तथा उसके साथ अन्तःक्रिया करने का मौका होना चाहिए। यदि शिक्षण–अधिगम सामग्री के वर्गीकरण पर ध्यान दें तो यह कई प्रकार से किया जा सकता है। एक प्रमुख वर्गीकरण है कि ऐसी सामग्री जो शिक्षकों के लिए हो और दूसरी सामग्री जो बच्चों के उपयोग के लिए हो। इन दोनों वर्गीकरण के उपयोग के तरीके और लक्ष्य अलग–अलग हैं। शिक्षण कार्य में कोई भी सहायक सामग्री अपने आप कोई भूमिका तय नहीं कर सकती है। यह इस बात पर निर्भर है कि सामग्री का उपयोग किस तरह से करवाने की योजना है, यह कितना संभव है और इसके लक्ष्य क्या हैं? विद्यार्थियों के सीखने में उनकी पहले की समझ के साथ जुड़ाव होना जरूरी है। विद्यार्थी इसी प्रक्रिया से सीखते हैं। ठोस व मूर्त अनुभव बच्चों के सीखने–समझने में प्रभावकारी होते हैं। अमूर्त धारणाओं को सीखने में शिक्षण सहायक–सामग्री के माध्यम से (ठोस व मूर्त रूप से आगे बढ़ने में) समझ समृद्ध होती है और यह ठोस प्रतिमानों की अवधारणाओं को समझने में सहायक होती है। किसी भी विधि के निर्माण में सीखने वालों की क्षमता और स्तर को समझना जरूरी है। अलग अलग सीखने का स्तर, उम्र, विभिन्न अवधारणाएँ और विषय के लिए किसी टी.एल.एम. और विधि का एक ही अर्थ नहीं हो सकता है। शिक्षण विधियों और रचना में यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों की समझ, उसकी आयु, मानसिक स्तर सभी को ध्यान रखते हुए उसमें तारतम्यता स्थापित किया जाए। कभी–कभी बच्चों को चित्र कार्ड व शब्द कार्ड मिलाने के लिए दिया जाता है और इन्हे जोड़कर कहानियाँ रचने की क्रिया को सम्मिलित किया जाता है।

शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता

बहुत–सी सामग्रियाँ हमारे परिवेश में उपलब्ध है, जो विद्यालय शिक्षण कार्य में सहायक होती हैं और इसे सहज रूप से प्राप्त कर सकते हैं लेकिन कुछ सामग्री ऐसी होती है जो सहज रूप से प्राप्त नहीं होती हैं। उसे ढूँढ़ना या खरीदना पड़ता है। यह जरूरी है कि उपयोग के लिए जिस सामग्री का चयन करते हैं वह बहुत ज्यादा महंगी न हो और आसानी से उपलब्ध हो जाए। स्कूलों में प्रायः देखा जाता है कि सरकार द्वारा सामग्री को उपलब्ध कराया जाता है तो दूसरी ओर स्कूलों के प्रधानाध्यापक और शिक्षकों के द्वारा भी खरीदा जाता है। बहुत बार ऐसा भी देखा जाता है खरीदी गई सामग्री उपलब्ध तो हो जाती है लेकिन उसका विशेष उपयोग नहीं होता है। कई बार देखा जाता है कि स्कूलों की उदासीनता के कारण राशि उपलब्ध होने के बावजुद शैक्षिक सामग्री की खरीदारी नहीं की जाती है। तब इन परिस्थितियों पर गंभीरता से विचार होना चाहिए। सभी शिक्षकों को सोचना पड़ेगा कि वह किस तरह की सामग्री जुटाएँ, कौन–कौन सी चीजें खरीदी जाएँ और किस पर कितना ज़ोर दिया जाय।

शिक्षण सामग्री की उपलब्धता का वर्गीकरण

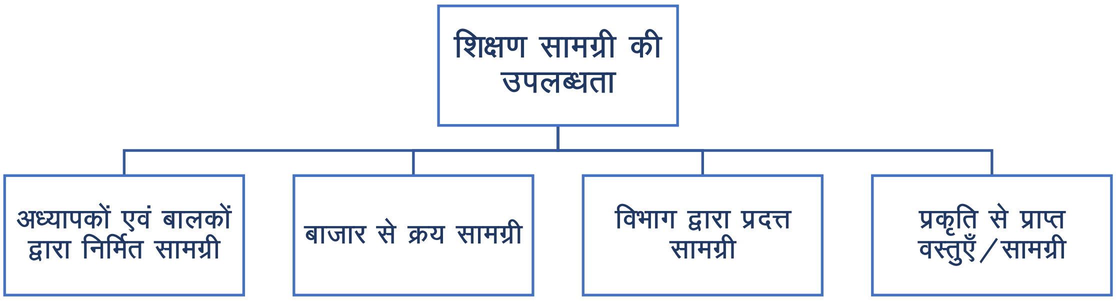

अध्यापकों एवं बालकों द्वारा निर्मित सामग्री

दृश्य सामग्री के अन्तर्गत कुछ शिक्षण–अधिगम सामग्री इस प्रकार की है जो कि शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के द्वारा तैयार की जा सकती है तथा जिनका प्रयोग शिक्षण के समय किया जा सकता है। छोटे बालकों को मिट्टी के खिलौने से एवं मिट्टी से खेलने में बहुत आनंद आता है। यदि अध्यापकों के द्वारा बालकों से कहा जाय कि वे अपने घर से मिट्टी की 10 गोलियाँ बनाकर लायेंगे तो अध्यापक इन गोलियों को गणित शिक्षण के समय गिनती पढ़ाने के लिए उपयोग कर सकते हैं। इस प्रकार, शिक्षक द्वारा अनेक प्रकार शिक्षण सामग्री का निर्माण किया जा सकता है, जैसे – लकड़ी के चौकोर टुकड़ों पर हिन्दी वर्णमाला के सम्पूर्ण अक्षरों को पृथक रूप से लिखना।

स्वयं बनाने से विद्यार्थियों की सभी इन्द्रियों व मांसपेशियों का समुचित उपयोग होने से उनमें कौशल विकसित होगा तथा सीखी हुई विषय–वस्तु का ज्ञान स्थायी हो जाएगा।

बाजार से क्रय सामग्री

शिक्षण सामग्री के निर्माण में समय की बचत के लिए बाजार से भी सामग्री क्रय करके उसका प्रयोग किया जा सकता है।

बाजार से क्रय सामग्री में ध्यान देने वाले बिन्दुः–

- बाजार से क्रय सामग्री की गुणवत्ता का परीक्षण करके ही उसका प्रयोग किया जाय।
- सामग्री उद्देश्यपूर्ण हो।
- सामग्री का आकार कक्षानुरूप होना चाहिए।
- धन तथा बजट का ध्यान रखना चाहिए।

विभाग द्वारा प्रदत्त सामग्री

शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता बढ़ाने हेतु तथा शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने हेतु शिक्षा विभाग द्वारा भी शैक्षिक सामग्री उपलब्द्ध करायी जाती है। इसमें ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड सामग्री, गणित किट, विज्ञान किट, पाठ्यपुस्तकें, प्रशिक्षण साहित्य, अनुपूरक अध्ययन सामग्री, तथा शिक्षक संदर्शिकाएँ इत्यादि प्रमुख होती हैं। इनके प्रयोग द्वारा शिक्षण कार्य सरल हो जाता है।

प्रकृति से प्राप्त वस्तुएँ या सामग्री

प्रकृति से प्राप्त अनेक वस्तुएँ ऐसी होती हैं, जिसका प्रयोग सरलता से शिक्षण–अधिगम सामग्री के रूप में किया जा सकता है। इन वस्तुओं को प्राप्त करने में किसी प्रकार का व्यय नहीं होता तथा वास्तविक रूप में वस्तुओं का ज्ञान होता है। वर्त्तमान समय में भारतीय विद्यालयों में प्रकृति शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग करने पर अधिक बल दिया जाता है क्योंकि प्रत्येक कार्य के लिए धन की उपलब्धता संभव नहीं होती। अतः प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं का प्रयोग ही सर्वोत्तम माना जाता है।

चर्चा बिन्दु – आप भावी शिक्षक के रूप में अपनी कक्षा में बच्चों को पढ़ाते समय किन–किन शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग करते हैं?

शिक्षण सहायक सामग्री की उपयोगिता

शिक्षण–अधिगम सामग्री का निर्माण उसकी शैक्षिक उपयोगिता को ध्यान में रखकर करना चाहिए अर्थात्, इन सामग्रियो का उद्देश्य विषयवस्तु को स्पष्ट रूप से विद्यार्थियों के लिए बोधगम्य रूप में प्रस्तुत करना है। शिक्षण–अधिगम सामग्री का निर्माण एवं प्रयोग उसकी आवश्यकता एवं उपयोगिता को ध्यान में रखकर होनी चाहिए।

बालकों की रूचि, आयु एवं मानसिक स्तर के अनुरूप

वर्त्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप बालकेन्द्रित है। अर्थात्, शिक्षण–अधिगम सामग्री की उत्तमता के लिए आवश्यक है कि यह विद्यार्थियों की रूचि, आयु, मानसिक स्तर के अनुकूल होनी चाहिए। जो विद्यार्थियों के लिए रोचक एवं आकर्षक हो और विषयवस्तु को समझने में वे उस सामग्री की आवश्यकता का अनुभव करें, जैसे – बालको को गिनती एवं पहाड़े सिखाने के लिए कंकड़ो एवं चार्ट का प्रयोग होना चाहिए। यदि विद्यार्थी 8 से 14 वर्ष के मध्य है तो उनके लिए शिक्षण–अधिगम सामग्री के रूप में प्रतिरूप, चार्ट, प्रोजेक्टर, टेप रिकार्डर एवं दूरदर्शन के शैक्षिक कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया जा सकता हैं।

सरलता से उपयोग में लायी जाने योग्य सामग्री

उत्तम शिक्षण–अधिगम सामग्री की विशेषता है कि वह उपयोग में सरल एवं बोधगम्य है। इसे निर्माण करने में अधिक समय व धन का अपव्यय नहीं करना चाहिए तथा न ही किसी विशेष व्यवस्था का आयोजन करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, उत्तम शिक्षण–अधिगम सामग्री उसे कहते हैं, जो प्रयोग एवं निर्माण में सरल होती है, जैसे – चार्ट, पोस्टर, मॉडल एवं प्रकृति प्रदत वस्तुएँ इत्यादि।

हानि–रहित शिक्षण सामग्री

अधिगम सामग्री की एक विशेषता यह भी होनी चाहिए कि उसके उपयोग करने पर विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार की हानि नहीं पहुँचनी चाहिए। विद्यार्थियों को चलचित्र या वीडियो रिकॉर्डिंग से सम्बन्धित कार्यक्रम का उपयोग ज्यादा देर तक नहीं करना चाहिए क्योंकि ये विद्यार्थियों की आँखों पर हानिकारक प्रभाव डाल सकते हैं। इसी प्रकार रेडियो या टेपरिकार्डर के माध्यम से प्रस्तुत कार्यक्रम में ध्वनि की तीव्रता सामान्य होनी चाहिए।

शिक्षण सामग्री के उपयोग में कुछ सामान्य बातों का और भी ध्यान रखना आवश्यक है

- सामग्री की उपलब्धता ससमय सुनिश्चित होना चाहिए एवं शिक्षक की यह जिम्मेदारी है कि कौन सामग्री कैसे और किन परिस्थितियों में तथा किन उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल की जाय।
- शिक्षण सामग्री के इस्तेमाल में, जैसे लेने, देने, रखने, प्रदर्शन करने आदि की प्रक्रिया में बच्चो को जिम्मेदार एवं भागीदार बनाना चाहिए।
- भिन्न सामग्रियों के एकसाथ उपयोग से बचा जाना चाहिए। इनका इस्तेमाल एक क्रम में ठीक रहता है। यदि इनसे आपस के संबधो को शिक्षण में शामिल करना है तो इसकी एक सुनिश्चित योजना होनी चाहिए।
- सामग्री हमारे पास एक साधन के रूप में उपलब्ध होती है। अपने आप मे ं इसकी कोई भुमिका नहीं है इसलिए षिक्षक की जिम्मेदारी है कि कौन सामाग्री कैसे एवं किन परिस्थितियों में तथा किन उद्‌देष्यों के लिए इस्तेमाल की जाय। षिक्षक को यह भी ध्यान रखना है कि बच्चों के लिए सिर्फ देखने की चीज न होकर उसके करने की चीज हो।
- जब सामाग्री का उपयोग किया जाएगा तो वे टूट–फूट सकती हैं, नष्ट हो सकती हैं। इप स्थितियों के लिए स्पष्ट नियम एवं जगह होनी चाहिए। यदि सामाग्री षिक्षक एवं बच्चों द्वारा इस्तेमाल की जाएगी तो यह साथ–साथ चलता रहेगा। इन सब चीजों के लिए यदी तैयारी नहीं रहेगी तो अपने–आप शैक्षिक साम्रगियों का उपयोग कम होता जाएगा, ध्यान सिखने–सिखाने पर केंद्रित होने की जगह–इनके सुरक्षा एवं बचाव पर केंद्रित होगा। बहुत बार ऐसा देखा जाता है कि ऐसो करणों की वजह से उपलब्ध सामाग्री का भी उपायोग नहीं किया जाता है। हमारे सभी स्कूलों में पुस्तकालय की किताबें उपलब्ध है लेकिन अधिकांष विद्यालयों में बच्चों को निर्गत नहीं किया जाता है। बात–चीत से पता चलता है कि गायब होने एवं फट जाने के भय से भी किताबें बच्चों को निर्गत नहीं कि जाती है।

भाषा शिक्षण में स्वंय भाषा के विभिन्न उपयोगों तथा रूपों को सामग्री के रूप मे उपयोग करना

बिहार पाठ्‌यचर्या की रूपरेखा 2008 यह साफ तौर पर रेखांकित करती है कि भाषा केवल संवाद और संप्रेषण का काम ही नहीं करती अपितु यह शिक्षण के सम्पूर्ण कार्यकलापों के लिए माध्यम की भूमिका का भी निर्वहन करती है। सामाजीकरण और संस्कृतिकरण की प्रक्रियाएँ भी भाषा के द्वारा सम्पन्न होती है। समाजीकरण और संस्कृतिकरण की प्रक्रियाएँ भी भाषा के द्वारा सम्पन्न होती है। उसके निर्माण में विभिन्न भाषिक परिवेशों, जो जन्म के साथ–ही घरेलू, सामाजिक और विद्यालयी वातावरण से प्राप्त होती है।

हिन्दी भाषा का अध्ययन अपने परिवेश की विविधताओं एवं विशेषताओं को समाहित करते हैं, तभी वह रचना के समृद्ध अनुभवों, सन्दर्भों को सहज संभव कर सकती है। कहानी, कविताएँ आदि की रचनाओं को भी प्रोत्साहन प्रदान करती है। किसी भी रूप में भाषा सीखने–सिखाने का एक–ही उद्देश्य सर्वोपरि होता है और वह है – विभिन्न स्थितियों में भाषा का प्रयोग करना। भाषा में संप्रेषण करना, अपनी बात कहना और दूसरों की बातों को समझना। फिर चाहे उसमें

भाषा का मौखिक प्रयोग हो या लिखित रूप। भाषा–शिक्षण का यह उद्देश्य बच्चों को भाषा सीखने में प्रेरणा स्वरूप होता है।

इकाई – 2

साहित्य और साहित्य के द्वारा शिक्षण

साहित्य और साहित्य के द्वारा शिक्षण

परिचय

मानव जीवन में साहित्य का सबसे अधिक महत्व है क्योंकि साहित्य ही मनुष्य की बुराईयों का अंत करता है। समाज को साहित्य से ज्ञान की प्राप्ति होती है। हर युग में साहित्यकारों के द्वारा साहित्य लिखा जाता है। साहित्य की अनेक विधाएँ होती हैं, जैसे – निबंध, संस्करण, जीवनी, रेखाचित्र, पत्रसाहित्य, खंडकाव्य, कहानी, महाकाव्य, नाटक इत्यादि। साहित्य के माध्यम से ही हमें राजनीति साहित्य, विज्ञान साहित्य, इतिहास साहित्य, पत्र साहित्य आदि पढ़ने को मिलता है। साहित्य ने मनुष्य जीवन को सरल बनाया है। साहित्य भाषा अभिव्यक्ति का वह विशिष्ट रूप है जो समाज या व्यक्ति के विशिष्ट अनुभव को निष्पन्न करने के लिए प्रयुक्त होता है। साहित्य का जीवन के सतही और निगूढ़ तत्वों की अभिव्यंजना स्व–संवेदना तथा मनोभावों के सहारे करता है। प्रत्येक भाषिक समाज का साहित्य उसकी जनता की चित्रवृत्ति तथा संचित प्रतिबिम्ब होता है। अतः भाषा, भाषा अध्येता को उस भाषा के समाज के लोगों के सोचने–विचारने, रहन–सहन, समृद्धि हीनावस्था, उत्थान–पतन इत्यादि को जानने के लिए उसकी भाषिक संस्कृत साहित्य का अध्ययन करना उपादेयता की दृष्टि से आवश्यक है। इस इकाई में हम 'उच्च प्राथमिक' स्तर पर साहित्य और साहित्य के द्वारा शिक्षण में भाषा सीखने में साहित्य की भूमिका पर विचार करेंगे।

उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

- साहित्य के स्वरूप एवं प्रकार से परिचित हो पाएंगे।
- भाषा अर्जन में साहित्य की भूमिका का विश्लेषण कर पाएंगे।
- साहित्यिक विधाओं तथा भाषा के शिक्षण में उनके उपयोग की समझ बनाएंगे।
- हिन्दी के पाठ्यक्रम में दी गई विधाओं और पाठों को आधार बनाकर साहित्य के बारे में समझ बनाएंगे।
- साहित्य की समझ का उपयोग विद्यार्थियों की भाषायी क्षमताओं को विकसित करने हेतु करेंगे।
- हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं कहानी/कविता/नाटक आदि की विशेषताओं को समझकर 'कल्पनाशीलता' विकसित कर सकेंगे।
- प्रशिक्षु व्याकरण पढ़ाने के संदर्भगत तरीकों व विश्लेषणात्मक तरीकों का उपयोग करने में साहित्य का उपयोग कर सकेंगे।
- साहित्य शिक्षण का उद्देश्य जीवन में सरसता लाकर विद्यार्थी में मानवीय गुणों का विकास करना है।

<u>इकाई के विषय</u> – साहित्य और साहित्य के द्वारा शिक्षण

- साहित्य की संकल्पना और उसकी विधाओं का सामान्य परिचय
    - पाठ्यपुस्तकों में शामिल सभी विधाएँ
    - शब्द शक्ति एवं अन्य साहित्यिक तत्वों को समझना तथा शिक्षण में उनका उपयोग करना
- भाषा के विकास में साहित्य का उपयोग
    - कहानियों आदि का उपयोग कर विद्यार्थियों की भाषायी–कुशलताओं का विकास करना
    - साहित्य का उपयोग कल्पना करने, समझने, चिन्तन करने, व्यक्त करने हेतु स्थितियाँ रचने के लिए करना
    - साहित्यिक रचनाओं के उपयोग से व्याकरणिक तत्वों का संदर्भगत शिक्षण करना
    - साहित्य की मदद से हिन्दी की बहुभाषिक विशेषताओं की समझ बनाना।
- पाठ्यपुस्तकों में दी गयी रचनाओं के उपयोग से व्याकरणिक तत्वों का संदर्भगत शिक्षण

साहित्य और साहित्य के द्वारा शिक्षण

हिन्दी भाषा के विकास हेतु साहित्य की समृद्धि आवश्यक है, क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण है, जब से समाज का अस्तित्व इस दुनिया में है तभी से साहित्य का भी। डॉ० हरदेव बाहरी के अनुसार, ''साहित्य की भूमिका प्राचीन वैदिक काल से चली आ रही है। अपभ्रंश अवस्था से ही हिन्दी साहित्य का आविर्भाव माना जाता रहा है। सातवीं–आठवीं शताब्दी के पद्यों में इसकी झलक देखी जा सकती है।''
साहित्यिक दृष्टि से पद्यबद्ध रचनाएं दोहे के रूप में सर्वप्रथम दिखाई देती हैं। राजाओं की प्रशंसा में चारण कवि नीति व श्रृंगार इसी विधा के माध्यम से प्रस्तुत करते थे। नानक, रहीम, तुलसी ने अपने दोहों के माध्यम से समाज को सुधारने का कार्य किया। आगे चलकर हिन्दी साहित्यकार डॉ नगेंद्र ने काल का विभाजन किया जो आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक काल के नाम से जाना जाता है। इसमें भक्तिकाल साहित्य का स्वर्ण युग कहलाया, क्योंकि इस समय धार्मिक भावनाओं से प्रेरित विभिन्न मतवादी काव्य साधनाओं का जन्म हुआ और समाज को एक नई दिशा दी गई।

आधुनिक काल को भी भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग, आधुनिक युग के रूप में विभाजित किया गया। तत्पश्चात् आधुनिक काल में कहानी रिपोतार्ज, संस्मरण, यात्रा वृतांत, एकांकी, उपन्यास जैसी विधाओं को बहुत ख्याति मिली और साहित्य आज अपनी इन्हीं सब विधाओं को समेटे अपने मुख्य उद्देश्य की ओर अग्रसर है।

आज साहित्य का स्वरूप इंटरनेट, गूगल, व्हाट्सएप्प के माध्यम से परिवर्तित अवश्य हो गया है, किन्तु इस क्रान्तिकारी परिवर्तन ने साहित्य को समाज से और ज्यादा–से–ज्यादा लोगों से जोड़ने का कार्य किया है। साथ–ही, साहित्य सृजन में नए–नए युवा साहित्यकारों को मंच देने का कार्य भी साहित्य कर रहा है, ताकि युवा आज अपनी पीढ़ी का दर्द, समस्याएं, देश व समाज के सामने बेहतर ढंग से रख सकें। टी.वी. एवं फिल्म उद्योग के माध्यम से भी साहित्य ने

प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से अपनी भूमिका निभाई है और समाज के हर वर्ग को इंसाफ दिलाने की पूरी तरह कोशिश जारी है।

राजनीति में भी साहित्य के प्रखर चेतना पुरूषों ने अपनी बात खरी–खरी कहकर राजनेताओं को मार्ग दिखाने का प्रयास किया है। आजकल हास्य–व्यंग्य के माध्यम से भी प्रतिदिन लेखक–कवि अपनी कविताओं द्वारा नेताओं के कुत्सित कर्तव्यों पर प्रहार करते हैं और उन्हें सचेत करने का प्रयास करते हैं।

साहित्य चूंकि समाज का दर्पण है और सदा ही उसने इसके विभिन्न रूपों में देश की आर्थिक–राजनीतिक समस्याओं और समाधानों से आम जनता को अवगत कराने तथा दिशा देने का कार्य किया है। इस तरह साहित्य की भूमिका स्वस्थ समाज के लिए सुधारक और जागरूक करने की बनी रहेगी, यही आशा करते हैं।

साहित्य की संकल्पना और उसकी विधाओं का सामान्य परिचय

साहित्य

ज्ञानराशि के संचित कोष का नाम साहित्य है। स + हित = समाज हित, कल्याण, समाज का कल्याण, जिसमें समाज का कल्याण हो, उसे हम साहित्य कहते हैं। साहित्य समाज का दर्पण है। जिस प्रकार रूपवती भिखारिन दर्पण को देखकर अपने सौन्दर्य को समझती है, उसी प्रकार साहित्य रूपी दर्पण में समाज का प्रतिबिम्ब दिखलाई पड़ता है। साहित्य ही वह भंडार है, जिसमें हमें अपनी सभ्यता, संस्कृति एवं रहन–सहन की झलक मिलती है।

साहित्य की विधाएँ

हिन्दी भाषा शिक्षण में साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे – कविता, कहानी, नाटक, एकांकी, जीवनी, संस्मरण, उपन्यास, निबंध, रेखाचित्र इत्यादि का इस्तेमाल पाठ्य सामग्री के रूप में विभिन्न कौशलों के विकास के लिए किया जा सकता है।

नाटक – नाटक में किसी महापुरूष के जीवन की घटनाओं का अनुकरण किया जाता है। जो कलाकार इन घटनाओं का अनुकरण कर हमारे सामने पेश करता है, अभिनेता कहलाता हैं। नाटक का आनंद देख कर लिया जाता है, इसलिए यह दृश्य–काव्य कहलाता है।

एकांकी – एकांकी में एक घटना होती है और वह नाटकीय कौशल से चरम सीमा तक पहुंचती है। एकांकी में जीवन के किसी एक पक्ष को लिया जाता है। कम–से–कम पात्र होते हैं। इसमें छोटी–छोटी घटनाओं का वर्णन नहीं किया जाता हैं। संक्षिप्तता एकांकी के लिए आवश्यक है।

उपन्यास – उपन्यास में लेखक मानव जीवन की तस्वीर को इस निपुणता से प्रस्तुत करता है कि हम उसमें डूब जाते हैं और उसमें वर्णित कथा हमें अपनी सी लगती है। उपन्यास में जीवन का व्यापक चित्रण किया जाता है।

कहानी – कहानी एक ऐसा आख्यान है जो एक–ही बैठक में पढ़ा जा सके और पाठक पर किसी एक प्रभाव को उत्पन्न कर सके। कहानी में जीवन के किसी एक अंक का चित्रण रहता है। बड़ी–से–बड़ी कहानी भी छोटे–से–छोटे उपन्यास से छोटी होती है। कहानी में विचारों को सांकेतिक रूप में रखा जाता है।

निबंध – निबंध गद्य की वह विधा है जिसमें विचारों को क्रमबद्ध रूप में रखा जाता है। बाबू गुलाबराय के शब्दों में 'निबंध सीमित आकार वाली वह रचना है जिसमें विषय का प्रतिपादन निजीपन, स्वच्छता, सौष्ठव, सजीवता और आवश्यक संगति तथा संबद्धता के साथ किया जाता है।'

आत्मकथा – किसी व्यक्ति द्वारा लिखी गई अपनी जीवनी आत्मकथा है। इसमें लेखक अपने बीते हुए जीवन के बारे में लिखता है। अपने अतीत का विश्लेषण करता है।

जीवनी – जीवनी का लेखक किसी दूसरे व्यक्ति के बारे में लिखता है। यानि जब कोई लेखक किसी अन्य व्यक्ति के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को रोचक ढंग से प्रस्तुत करता है तो उसे जीवनी कहते है।

यात्रा वृतांत – जब लेखक अपनी यात्रा के दौरान देखे गये स्थानों का वर्णन करता है तो उसे यात्रा वृत या यात्रा साहित्य कहते हैं। यात्रा वृतांत में लेखक यात्रा के विवरणों में स्थान, दृश्य, घटनाएँ तथा व्यक्ति में सम्बन्धित कटु एवं मधुर स्मृतियों का चित्रण करता है।

कविता – कविता लयात्मक होती है। अमूर्त होती है। उसमें बिंबों का प्रयोग होता है। कविता मुक्त छंद में लिखी जाती है और दूसरी तरफ छंदोबद्ध कविताएँ भी होती हैं। कविता का अनुवाद कठिन होता है।

रेखाचित्र – जब किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, घटना, दृश्य इत्यादि का इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि पाठक के मन पर उसका हू–ब–हू चित्र बन जाता है तो उसे रेखाचित्र कहते हैं।

शब्द शक्ति एवं अन्य साहित्यिक तत्वों को समझना तथा शिक्षण में उनका उपयोग करना

शब्द शक्ति – साहित्य में दूसरा स्थान शब्द की शक्तियों का है। क्योंकि ध्वनियों के समूह से शब्द का निर्माण होता है और उससे ध्वनित होने वाला बोध हमें शब्द के तात्पर्य से अवगत कराता है। अतः शब्द बोधक है और बोध्य है। लेकिन भाषा में या साहित्य में शब्द के अंदर अनेक अर्थ सन्निहित रहते हैं। शब्द का अर्थ देशकाल परिस्थिति के साथ–साथ वक्ता की प्रस्तुति, श्रोता की स्थिति और संदर्भों व प्रसंगों की अवधारणा से भी संबंधित रहती है। काव्यशास्त्रियों ने शब्द शक्तियों का निम्न प्रकार निरूपण किया हैः–

शब्द शक्ति का नाम	शब्द	अर्थ
अभिधा (अभिधेय) मूल प्रतिपादित अर्थ	वाचक	वाच्य
लक्षणा प्रयोजन के आधार ग्रहण किया गया अर्थ)	लक्षक	लक्ष्य
व्यंजना (शब्द और अर्थ से व्यंजित होने वाला अर्थ)	व्यंजना	व्यंजना

साहित्य के तत्व – साहित्य को ठीक से समझने के लिए उसके प्रमुख तत्वों की पहचान भी आवश्यक है। काव्य बनाने के लिए, उसका अस्तित्व सिद्ध करने के लिए जो तत्व होते है उन्हें ही काव्य का तत्व कहा जाता है।

काव्य में एक विशिष्ट प्रकार का भाव होता हैः इस भाव को ठीक से परखने वाला सोचने वाला एक विचार होता है, इसे सजाने वाला भी एक तत्व होता है तथा इसे प्रकट करने वाला भी एक तत्व होता है। इन सभी का मिला हुआ जो रूप होता है, उसे ही काव्य का तत्व कहा जाएगा। इस आधार पर काव्य के निम्नांकित तत्व हैः–

भाव तत्व – भाव तत्व साहित्य में सबसे अधिक प्रभाव उत्पन्न करने वाला साहित्य का प्राण तत्व है। भाव तत्व के कारण साहित्य को शास्त्र से पृथक माना जाता है। साहित्य की सरसता का आधार भाव तत्व ही होता है। भाव विचारों की अपेक्षा अधिक संप्रेषणशील होता है। इसलिए साहित्य का विचार तत्व भाव तत्व के द्वारा नियंत्रित होता है।

विचार तत्व या बुद्धि तत्व – विचार तत्व का महत्व इसी में है कि भाव, कल्पना आदि का ठीक संयोजन और शब्द का प्रयोग औचित्यपूर्ण हो। औचित्य के बिना विश्वसनीयता और प्रभाव नष्ट हो जाते हैं। विचार तत्व का संबंध अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों से है।

बुद्धि तत्व के आधार पर ही काव्य में विचार लाए जाते हैं। बुद्धि तत्व का संबंध विचारों और तत्वों से है। प्रत्येक साहित्य में किसी–न–किसी मात्रा में तथ्यों, विचारों और सिद्धांतों का समावेश किया जाता है। बुद्धि तत्व के आधार पर काव्य में विशिष्ट विचारों का निर्माण किया जाता है। इन्हीं विचारों के आधार पर व्यक्ति मन तथा समाज संस्कारित किए जाते हैं।

कल्पना तत्व – साहित्य में भावनाओं का चित्रण कल्पना के द्वारा ही संभव है। इसी कल्पना के कारण कवि औरों के सुख–दुःख और दूसरों की अनुभूतियों का चित्रण इस प्रकार कर देता है कि वह हमारा सुख–दुःख बन जाता है। वह परोक्ष की घटना को प्रत्यक्ष रूप में, अतीत की घटना को वर्तमान में और सूक्ष्म भावों को स्थूल रूप में प्रस्तुत कर देता है। वास्तव में कल्पना का प्रयोग भावना के सार्थक चित्रण में होना चाहिए अन्यथा उसका अपना कोई स्वतंत्र महत्व नहीं है।

शैली तत्व – काव्य के कला पक्ष से संबंधित इस तत्व को 'शब्द तत्व' भी कहा जाता है। रचनाकार जिस भाषा जिस रूप और जिस पद्धति से अपनी अनुभूति को अभिव्यंजित करता है, उसे शैली कहा जाता है।

शब्द शक्ति एवं अन्य साहित्यिक तत्वों का शिक्षण में उपयोग करना

साहित्य का बहुत महत्व है और समाज में इसका अध्ययन होना जरूरी हैं क्योंकि यह मानवीय रिश्तों को जोड़ने की क्षमता प्रदान करता है और हमें बताता है कि क्या सही है और क्या गलत है। साहित्य हमेशा जिस युग में लिखा होता है उसी समय के वातावरण को चित्रित करता है। साहित्य के अध्ययन से हम उस युग की विशेषताओं के बारे में जान सकते हैं।

''अन्धकार है वहाँ जहाँ साहित्य नहीं है।''

''मुर्दा है वह देश जहाॅ साहित्य नहीं हैं''

–देवी प्रसाद 'पूर्ण'

साहित्य ही समाज को सुदृढ़ बना सकता है। साहित्य एक कला के रूप में माने जाने वाले लेखन को संदर्भित करता है।

जो संवेदना जागृत करने का कार्य करता है वह साहित्य के जरिये ही होता है। प्राचीन और आधुनिक काल की कहानियों, महाकाव्यों, पवित्र ग्रंथों की जानकारी हम साहित्य के द्वारा ही जान पाते हैं और ऐतिहासिक बातों को जीवित रख पाते हैं।

साहित्य के जरिये हम अपनी कलाओं को लेखनी के माध्यम से उकेरते हैं। कुछ ऐसे महान व्यक्ति होते हैं जो केवल कला के लिए जीते हैं व कला के लिए मरते हैं और अपने विचारों को साहित्य की कई शैलियों जैसे कविता, उपन्यास, कहानी, निबंध के रूप में सजीव कर जाते हैं।

हर क्षेत्र का अपना साहित्य हो सकता है। जैसे हिन्दी साहित्य, संस्कृत साहित्य, तेलुगु साहित्य, अंग्रेजी साहित्य, अफ्रीकन साहित्य आदि। लगभग हर साहित्य अपने–अपने क्षेत्र की भावनाओं को अपनी रचनाओं के रूप में प्रस्तुत करता है जो साहित्य को बढ़ाने में मदद करता है।

साहित्य समाज – 'विकास के उद्देश्य से जीवन की आलोचना करते हुए यथार्थ और आदर्श से समन्वित चित्रण द्वारा, धर्म और नीति के लक्ष्यों को भय या प्रलोभन और तर्क या उपदेश के बजाय, सौंदर्य प्रेम और मानसिक अवस्थाओं द्वारा व्यक्त करता है।'

– डॉ. राजेश्वर गुरू

साहित्य जीवन की नींव है। यह हर तरह के क्षेत्र से जुड़े हुए ज्ञान को एक जगह पर शब्दों में समेट देता है और ये शब्द हमेशा के लिए साहित्य के रूप में जीवित रहते हैं। साहित्य लोगों को दूसरों के लेंस के माध्यम से देखने में सक्षम बनाता है, कभी–कभी निर्जीव वस्तुओं को भी, इसलिए यह दुनिया में एक दिखने वाला ग्लास बन जाता है, जैसा कि अन्य लोग इसे देखते हैं। यह एक यात्रा है जो पृष्ठों में अंकित है, और पाठक की कल्पना द्वारा संचालित है।

साहित्य वही है जिसमें उच्च चिंतन हो, सौंदर्य का सार हो, स्वाधीनता का भाव हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाई हो, हर एक क्षेत्र साहित्य के बिना अधूरा है। वह कोई भी घटना हो सकती है जो लेखनी के माध्यम से साहित्य की किसी–न–किसी शैली में समाहित है।

हमारे धर्मों, ऐतिहासिक कहानियों, तकनीकियों और विज्ञान सभी को साहित्य में संकलित करके जीवित रखा गया है। अर्थात, हम इन साहित्य पर रिसर्च करें तो हमें हर तरह के क्षेत्रों का ज्ञान हो सकता है।

साहित्य, दुनिया को नए सिरे से देखने की क्षमता के साथ पाठक को अपने स्वयं के जीवन को प्रतिबिंबित करने के लिए प्रेरित करता है। साहित्य एक ऐसी सामग्री है जो पाठक के लिए भरोसेमंद है, उन्हें नैतिकता सिखाती है और उन्हें अच्छे निर्णय लेने का अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

साहित्य न केवल जीवन के प्रति चिंतनशील सिद्ध होता है अपितु इसका उपयोग पाठक को अच्छे निर्णय का पालन करने और अभ्यास करने के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में भी सिद्ध होता है। वर्तमान समय में साहित्य ने अनगिनत पुस्तकालयों और कई लोगों के मन में मानवता और उनके आसपास की दुनिया की समझ और जिज्ञासा के प्रवेश द्वार के रूप में विस्तार किया है।

साहित्य का बहुत महत्व है और समाज में इसका अध्ययन होना जरूरी है क्योंकि यह मानवीय रिश्तों को जोड़ने की क्षमता प्रदान करता है और हमें बताता है कि क्या सही है और क्या गलत है। क्योंकि शब्द हमेशा जीवित रहते है या यह कह लीजिये कि साहित्य हमारे इतिहास का प्रतिबिंब है।

साहित्य हमेशा जिस युग में लिखा होता है उसी समय के वातावरण को चित्रित करता है। साहित्य के अध्ययन से हम उस युग की विशेषताओं के बारे में जान सकते हैं। जब हम साहित्य का अध्ययन करते हैं तो हम हर तरीके की शैली को समझ पाते हैं।

हम साहित्य के माध्यम से इसके उदय से लेकर अभी तक के समय में हुए बदलाव, साहित्यकारों के विचार जान सकते हैं।

साहित्य, संस्कृति और विश्वास को फैलाता है और साहित्य को प्रतिबिंबित करने और समुदायों को चित्रित करने के लिए आवश्यक घटक को दर्शाता है। साहित्य की भाषा समाज में जीने की संस्कृति की व्याख्या करने में मदद करती है। साहित्य दुनिया को बेहतर ढंग से समझने की अनुमति देता है।

हिन्दी साहित्य में निराला जी, दिनकर जी, जयशंकर प्रसाद, मुंशी प्रेमचन्द्र, महादेवी वर्मा, संस्कृत साहित्य में कालिदास, भवभूति, बाणभट्ट, अंग्रेजी साहित्य में शेक्सपियर, विलियम वर्ड्सवर्थ, जॉन कीट्स आदि की कृतियों को पढ़कर उस युग के बारे में जान सकते हैं। किसी–भी क्षेत्र का साहित्य उस समय की सभ्यता को दर्शाता है। इस प्रकार साहित्य का अध्ययन जरूरी है। साहित्य के जरिये हम उस ज्ञान को समेट सकते है जो किताबों में बन्द हो जाता है। उनका अध्ययन करके हम उसे पुनः पल्लवित कर सकते हैं।

'यदि हमें जीवित रहना है और सभ्यता की दौड़ में अन्य जातियों की बराबरी करना है तो हमें श्रमपूर्वक बड़े उत्साह से सत्साहित्य का उत्पादन और प्राचीन साहित्य की पूजा करनी चाहिए।'

साहित्य एक व्यक्ति को समय से पहले कदम रखने और पृथ्वी पर जीवन के बारे में जानने की अनुमति देता है। साहित्य दुनिया को बेहतर ढंग से समझने की अनुमति देता है। साहित्य की महत्ता को बताते हुए कहा गया है किः–

उदाहरण – साहित्य संगीत कला विहीनः, साक्षात पशु पुच्छ विषाण विहीनः ।।

तृषम न खाद्न्नपि जीवमानः, तद भाग देयम परम पशुनाम ।।

इस श्लोक से अभिप्राय है – जो मनुष्य साहित्य, संगीत अथवा कला से विहीन है, वो साक्षात् बिना पूँछ और सींग वाले जानवर के समान है। इस तरह का जीव न तो घास खाता है न अन्न खाकर जीवित रहता है। ऐसे मनुष्य को पशुओं की श्रेणी में रखना ही उचित होता है। अर्थात साहित्य का हमारे जीवन में बहुत महत्व है।

भाषा के विकास में साहित्य का उपयोग

भाषा और साहित्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। भाषा है तो साहित्य है और जब साहित्य होता है तब भाषा स्वतः ही विकासमान होती है। वर्तमान में हिन्दी भाषा दुनिया भर में अपनी पहचान बना चुकी है। इस विकास का एकमात्र आधार है–समन्वय। हिन्दी भाषा न केवल भारत

की अपितु विश्व की अनेक भाषाओं के शब्दों से अपने आपको समृद्ध किया है और आज भी अनेक शब्दों को अपने अंदर समाहित कर रही है। भाषा और साहित्य निम्न प्रकार से एक–दूसरे से सम्बन्धित हैं:–

भाषा और साहित्य का सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ट है। वह पूर्ण रूप से एक–दूसरे पर आश्रित है। भाषा के अभाव में साहित्य का शायद उदय ही नहीं होता वह मात्र आन्तरिक भाव बनकर ही रह जाता और साथ–ही साहित्य के अभाव में शायद भाषा को संसार में वह सम्मान नहीं प्राप्त होता।

भाषा जीवित हो अथवा मृत उसका अध्ययन हम उस भाषा के साहित्य के आधार पर करते हैं। साहित्य के द्वारा जीवित भाषा की सजीवता व उसके उत्कर्ष से परिचित होते हैं। साहित्य के द्वारा ही हम जीवित भाषा के शब्दों की शक्ति से अवगत होते हैं।

भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने के लिए साहित्य का गहन अध्ययन करना अनिवार्य है साहित्य में हमें भाषा की विभिन्न शैलियों के दर्शन होते हैं। साहित्य के अध्ययन से ही उत्तम विकास सम्भव है।

भाषा और साहित्य एक–दूसरे को समाज में व विश्व में पहचान प्रदान करते है।

भाषा समाज में ही उत्पन्न होती है एवं समाज में ही उसका पालन–पोषण होता है। समाज के विकास के साथ–साथ भाषा की क्षमताएँ भी विकसित हो जाती है। नए–नए शब्दों, मुहावरों, सूक्तियों, लोकोक्तियों का प्रवेश होता है। उत्तम एवं समृद्ध साहित्य से भाषा समृद्ध होती है। अतः भाषा और साहित्य दोनों का सम्बन्ध सामाजिक वातावरण से है।

कहानियों आदि का उपयोग कर विद्यार्थियों की भाषायी–कुशलताओं का विकास करना

परिभाषा

1. कहानी एक लघु वर्णनात्मक रचना है, जिसमें वास्तविक जीवन को कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

कहानी मनुष्य के जीवन से सम्बन्धित तथा उनके हृदय पर एक भावात्मक प्रभाव डालने वाली छोटी किन्तु मनोरंजक गद्य रचना है।

कहानी के तत्व – पात्र, चरित्र–चित्रण, कथोपकथन, भाषा शैली और भावात्मक अभिव्यक्ति।

2. कहानी से तर्क, विवेक, संकल्प और कल्पना शक्ति की वृद्धि होती है।
3. कहानी वक्ता एवं श्रोता के मध्य धनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करती है।
4. कहानी बालक का क्रमिक रूप से विकास करती है।

कहानी शिक्षण की विधियाँ–

1. वार्तालाप विधि
2. चित्र विधि
3. प्रश्नोत्तर विधि
4. कहानी कथन विधि

5. गहन अध्ययन प्रणाली

कहानी से भाषायी–कुशलताओं का विकास करना

1. कहानी शिक्षण का उपयोग विद्यार्थियों में समस्त पाठों के प्रति रूचि जागृत करता है, जिसमें बच्चों के भाषायी–कुशलताओं का विकास होता है।
2. कहानी शिक्षण के प्रयोग से बच्चों में स्थायी ज्ञान की प्राप्ति होती है।

भारतीय साहित्य में पचंतंत्र, हितोपदेश, सरित–सागर तथा पुराण आदि में लिखे गये कथा–साहित्य को ही कहानी कहते है।

कहानी का जीवन में महत्व

1. मनोरंजन का साधन।
2. उद्देश्य की प्राप्ति।
3. जीवन की वास्तविकता।
4. घटनाओं या भावनाओं की प्रधानता।
5. कल्पना शक्ति का विस्तार।

अच्छी कहानी के गुण

1. वास्तविकता भरपूर हो।
2. वार्तालाप और संवाद दोनों सही हो।
3. सरल वाक्य और सरल शब्द हो।
4. कहानी घटना प्रधान हो।
5. चरित्र निर्माण में सहायक हो।

कहानी का उद्देश्य

1. कहानी उपन्यास का लघु रूप है। इसे पढ़ने में कम समय लगता है।

2. विद्यार्थियों को उनकी उपलब्धियों को बढ़ाने के लिए सीखने की क्षमता का विकास करना।
3. विषय प्रवेश एवं कक्षा–कक्ष के वातावरण को अच्छा बनाने में प्रयोग करते है।
4. मन्द व तीव्र बुद्धि सभी प्रकार के बच्चों में शिक्षा के प्रति जागरूकता को बनाये रखने में सहायक।
5. कहानी सुनाने, सीखने–सिखाने की सबसे पुरानी और शक्तिशाली विधि है।
6. कहानियां कल्पनाशीलता को बढ़ाती हैं।
7. कहानी कहने और सुनने वाले के बीच समझ स्थापित करने के लिए सेतु का काम करती है और बहुसांस्कृतिक समाज का आधार तैयार करती है।

कहानी शिक्षण के ज्ञानात्मक उद्देश्य

ज्ञानात्मक उद्देश्यों के अन्तर्गत निम्नलिखित उद्देश्य आते हैंः—

1. विद्यार्थियों को शब्द, सूक्ति लोकोक्ति व मुहावरों का ज्ञान कराना।
2. विद्यार्थियों को गद्य की विभिन्न लेखन शैलियों का ज्ञान कराना।
3. विद्यार्थियों को व्याकरण की विभिन्न प्रणालियों का ज्ञान कराना।
4. विद्यार्थियों को प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक घटनाओं का ज्ञान कराना।
5. विद्यार्थियों को पौराणिक कथाओं, मूल्यों, धार्मिक विश्वासों व मानव जीवन के विविध पक्षों का ज्ञान कराना।

कौशलात्मक उद्देश्य

कौशलात्मक उद्देश्यों के अन्तर्गत निम्नलिखित उद्देश्य आते हैंः—

1. विद्यार्थियों में पूर्ण मनोयोग से सुनने व सुनकर अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना।
2. विद्यार्थियों में पूर्ण मनोयोग से सुनने व सुनकर अर्थ ग्रहण करने की क्षमता का विकास करना।
3. विद्यार्थियों की मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति में विकास करना।
4. विद्यार्थियों को समीक्षा करने योग्य बनाना।
5. विद्यार्थियों में शब्दों, मुहावरों, उक्तियों आदि को प्रसंगानुकूल समझने व प्रयोग करने की दक्षता विकसित करना।

रूच्यात्मक उद्देश्य

इस उद्देश्य के अन्तर्गत निम्नलिखित उद्देश्य आते हैंः—

1. साहित्य के प्रति रूचि उत्पन्न करना।
2. साहित्य रचनायें करने के लिये रूचि उत्पन्न करना।
3. सृजनात्मक शक्तियों को जागृत करना।
4. मातृभाषा सीखने में रूचि विकसित करना।
5. पाठ्यपुस्तकों एवं साहित्यिक रचनाओं में निहित ज्ञान प्राप्त करने के प्रति रूचि विकसित करना।

अभिवृत्यात्मक उद्देश्य

इस उद्देश्य के अन्तर्गत निम्नलिखित उद्देश्य आते हैंः—

1. विद्यार्थियों में देश, जाति, धर्म के प्रति आदर भाव उत्पन्न करना।
2. सामाजिक आदर्शों के अनुकूल आचरण करने की अभिवृत्ति का विकास करना।
3. विद्यार्थियों द्वारा साहित्यिक महत्व की पत्र—पत्रिकायें एकत्रित करना।
4. साहित्य की विविध विधाओं में सौन्दर्य बोध के दर्शन कराना।
5. साहित्यकारों की जीवनियों तथा रचनाओं को संग्रहित करने के लिये प्रेरित करना।

साहित्य का उपयोग कल्पना करने, समझने, चिन्तन करने, व्यक्त करने हेतु स्थितियाँ रचने के लिए करना

भाषा के माध्यम से अपने अंतरंग की अनुभूति, अभिव्यक्ति कराने वाली ललित कला 'काव्य' अथवा 'साहित्य' कहलाती है। साहित्य की सभी विधाओं को पढ़ने और उन्हें समझने से बच्चों की कल्पना शक्ति तथा चिन्तन शक्ति का विकास होता हैं। साहित्य के माध्यम से बच्चों में निम्नलिखित प्रकार से कल्पना, समझ और चिन्तन का विकास होता हैः–

कहानी – कहानी के माध्यम से बच्चे ग्रहित विचारों के साथ अपने विचारों को मिलाकर व्यक्त कर सकते हैं, जिससे बच्चों में कल्पना करने, समझने, चिन्तन करने की क्षमता का विकास होता है।

लेख – साहित्य की एक विधा लेख है जिसे लिखकर या अन्य लेखकों द्वारा लिखी हुई कृतियों की आलोचना कर अपने कल्पना शक्ति तथा चिन्तन शक्ति का विकास कर सकते हैं।

साहित्य की विधा निबंध और पत्र जिसके माध्यम से बच्चे अभिव्यक्ति में अपनी बुद्धि और कौशल का परिचय दे सकते हैं। विभिन्न प्रकार के पत्र और निबंध को पढ़ने और लिखने से बच्चों में कल्पना शक्ति और चिंतन शक्ति का विकास होता है।

कविताएँ जो कि साहित्य की एक विधा है, के माध्यम से बच्चों में सद्–प्रवृत्तियाँ विकसित होती हैं। जिससे उनमें कल्पना और चिन्तन का विकास होता है।

महापुरूषों की जीवन–गाथाएँ– जिसके माध्यम से बच्चे जीवन में सत्य, न्याय और अहिंसा के मार्ग को अपना सकेंगे। महापुरूषों की शिक्षाओं को जीवन में ढ़ालने का प्रयत्न करेंगे। अच्छे–बुरे में भेद कर सकेंगे। स्पष्ट रूप से अपने विचारों को व्यक्त कर सकेगें! जीवन–गाथाओं के माध्यम से भी बच्चों की कल्पना शक्ति, समझ और चिंतन शक्ति का विकास होता है।

नाटक में बच्चे जीवन की आवश्यकताओं तथा विषमताओं की चर्चा करते है। बालक इन सब को देखता है और सोचता है कि किन परिस्थितियों के अन्दर पात्रों ने कौन–कौन सा कार्य किया जिनसे कि उन्हें सफलता मिली। क्या वह भी ऐसा कर सकते हैं? क्या उसके लिए ऐसा सम्भव नहीं कि वह परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना लें। इस प्रकार नाटकों के द्वारा विद्यार्थी विभिन्न परिस्थितियों का सामना करना सीखते हैं।

साहित्य पढ़ते–पढ़ते बच्चों में कुछ इस प्रकार की शक्तियों का सहज विकास हो जाता है कि वह सम्प्रेषण के स्तर पर आकलन करने लगते हैं। साहित्य से बच्चों में आकलन की शक्ति का विकास होता है इनमें भाषा शक्ति का विकास होता है। साहित्य को पढ़ने और लिखने के माध्यम से ही शब्द भंडार में वृद्धि होती है जिससे कि उनकी कल्पना शक्ति और चिंतन शक्ति विकसित होती है।

साहित्य द्वारा भाषा सीखने के दौरान सांस्कृतिक संदर्भ के अंतर्गत वैयक्तिक विकास के मौके मिलने चाहिए। इसलिए विद्यार्थियों को समाज के सांस्कृतिक जीवन से परिचय कराया जाना चाहिए और उन्हें भागीदारी के अवसर मिलने चाहिए।

साहित्य का उपयोग केवल भाषा व्यवहार या सांस्कृतिक विषय–वस्तु को समझने के लिए नहीं होना चाहिए बल्कि संवाद निर्माण के लिए भी होना चाहिए। साहित्यिक सामग्री न केवल पठन कौशल को बढ़ाने में सहायक है बल्कि श्रवण, वाचन और लेखन कौशल के विकास में मदद करती है।

वास्तव में, साहित्यिक सामग्री के विश्लेषण और इस्तेमाल के द्वारा वास्तविक जीवन की घटनाओं और अनुभवों से जुड़ी सामान्य सूचनाओं को प्राप्त करना और समझना संभव है। इससे वैयक्तिक और सामाजिक विकास को महसूस करने में हमें मदद मिलती है। अपने संवेगात्मक लक्षणों के अनुसार यह सांस्कृतिक और शैक्षिक दृष्टि से पाठकों की उन्नति का अवसर प्रदान करती है। मातृभाषा के व्यावधानों को दूर करती है तथा विद्यार्थियों में विश्लेषण करने और समीक्षा करने का कौशल विकसित करती है। इसके अन्तर्गत भाषा, शब्द चयन, अलंकारों का प्रयोग, शब्द का उपयोग साहित्य स्वरूप आदि का समावेश होता है। इस तत्व को अंधिकांश भारतीय विद्वान शरीर तत्व के रूप में परिभाषित करते हैं। इस तत्व का आधार भाषा है। अतः इसे भाषिक संरचना भी कहा गया है। शैली काव्य के बाहरी अंग से संबंधित होती है। जिस प्रकार शरीर के अभाव में प्राण का अस्तित्व नहीं होता, उसी प्रकार भाषा के अभाव में साहित्य की कल्पना संभव नहीं होती।

साहित्य का शिक्षण में उपयोग करना – हिन्दी शिक्षण में साहित्य का उपयोग निम्नलिखित तरीके से किया जाता हैः –

साहित्यिक सामग्री पढ़कर विद्यार्थी अपनी स्वायत्तता और स्वतंत्रता, परिकल्पना बनाने और अपिरिचित शब्दों के अर्थ का अनुमान लगाने जैसे कौशलों का विकास कर सकते हैं।

यदि हम विद्यार्थी को खास साहित्यिक संसार और माहौल प्रदान करते हैं तो वह मनोसामाजिक संदर्भ से अपने आपको जोड़ सकता है।

वह साहित्य के इस्तेमाल से अपनी विचार प्रक्रिया को नियंत्रित करना सीखता है तथा समाज में सकारात्मक रूप से योगदान करने की अपनी शक्ति और संभावना को महसूस करता है।

साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे ंप्रार्थना–पत्र, निबंध, आत्मकथा, कहानी, कथोपकथन निर्देशन और आदेश, संवाद द्वारा निम्न शक्ति चिंतन का विकास होता हैः–

1. वाचन करने से शब्दों का शुद्ध उच्चारण करने का कौशल विकसित होता है।
2. उचित विराम, उतार–चढ़ाव एवं प्रवाह के साथ बोलने के कौशल का विकास होता है जिससे कल्पना शक्ति और चिंतन और उसे समझने का कौशल का विकास होता है।
3. साहित्य की विधाओं को पढ़ने से शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों का सही प्रयोग करना सीखते हैं इससे भी कल्पना, समझ और चिंतन शक्ति विकसित होती है।
4. साहित्य को पढ़कर व्याकरण की दृष्टि से सही भाषा का प्रयोग करना बच्चे सीखते हैं।
5. साहित्य के ज्ञान द्वारा ंविचारों को स्पष्ट रूप से लिख सकेंगे तथा शुद्ध वाक्यों का गठन करना सीखेंगे।
6. साहित्य के ज्ञान से वह भाषा में सौन्दर्यता ला सकेंगे।
7. प्रसंगानुकूल भावों, विचारों की अभिव्यक्ति हेतु रचना के किसी विशेष रूप का चयन कर क्रमबद्धता बनाए रख सकेंगे।
8. बच्चे साहित्य के ज्ञान द्वारा वांछित सामग्री को तार्किक ढ़ंग से प्रस्तुत कर सकेंगे।

9. साहित्य की विधाओं के ज्ञान द्वारा अभिव्यक्ति के रूप शैली का रसास्वादन कर सकेंगे।
10. वह पत्रिकाओं से अच्छी–अच्छी कविताएँ याद कर सकेंगे।
11. साहित्य द्वारा बच्चें उत्सवों, सभा के कार्यक्रमों, अन्त्याक्षरी, वाद–विवाद, कविता पाठ आदि में भाग लें सकेंगे, इससे भी उनकी कल्पना, समझ और चिंतन शक्ति विकसित होगी।
12. साहित्यिक विधाओं के माध्यम से बच्चें पुस्तकालय में रखी पुस्तकों से अपनी संग्रह तैयार कर सकेंगे। अच्छी–अच्छी कविता, चुटकुले, कहानी व उक्तिओं को संकलित कर अपनी कल्पना, समझ और चिंतन कौशल को विकसित कर सकेंगे।
13. साहित्य के ज्ञान द्वारा बच्चे अपने से बड़ों के प्रति श्रद्धा की भावना प्रकट कर सकेगें।
14. साहित्य के ज्ञान से वह निर्बल व्यक्तियों के प्रति प्राणी मात्र व प्रकृति के प्रति सहृदय व संवेदनशील बन सकेंगे।
15. साहित्य के ज्ञान द्वारा ही वह जीवन में सत्य, न्याय और अहिंसा के मार्ग को अपना सकेंगे।

साहित्यिक रचनाओं के उपयोग से व्याकरणिक तत्वों का संदर्भगत शिक्षण करना

1. **बाबू गुलाबराय के अनुसारः–** 'साहित्य संसार के प्रति मानसिक प्रतिक्रिया अर्थात विचारों, भावों और संकल्पों की शब्दिक अभिव्यक्ति है और हमारे किसी–न–किसी प्रकार के हित का साधन करने के कारण संरक्षित हो जाती है।'
2. **आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनूसार** :– 'ज्ञान–राशि के संचित कोष का नाम साहित्य है।'

साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से व्याकरणिक तत्वों का संदर्भता शिक्षण करना

हिन्दी साहित्य की दो विधा होती हैं– गद्य और पद्य विधा। पद्य् विधा में कविता तथा गद्य विधा में उपन्यास, कहानी, लघुकथा, बोधकथा, रिपोर्ताज, पत्र, निबंध, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, समीक्षा और यात्रा वृतान्त आदि शामिल है। साहित्य की विभिन्न विधाओं द्वारा व्याकरणिक तत्वों का संदर्भगत् शिक्षण होता है।

कविता भाषा का एक माध्यम है, जिसके द्वारा मन की भावना की अभिव्यक्ति की जाती है। **आचार्य रामचंद्र शुक्ल** के शब्दों में 'कविता वह साधन है जिसके द्वारा सृष्टि के साथ मनुष्य के रागात्मक संबंध की रक्षा और निर्वाह होता है।' साहित्य के आचार्यों ने रसात्मक वाक्य को ही 'कविता' कहा है। साहित्य की पद्य विधा 'कविता' के माध्यम से 'व्याकरणिक' रूप से कविता के 'रस' और स्थायी भावों का ज्ञान होता है। 'रस' और 'स्थायी भाव' जो कविता में शामिल होते हैं वे निम्नलिखित हैं :–

रस	स्थायी भाव
1. श्रृंगार	रति या प्रेम
2. हास्य	हंसी
3. करूण	शोक
4. वीर	उत्साह
5. रौद्र	क्रोध
6. भयानक	भय

7. वीभत्स	जुगुप्सा
8. अद्‌भुत	आश्चर्य
9. शांत	निर्वेद
10. वात्सल्य	अनुराग
11. भक्ति	ईष अनुराग

कविता शिक्षण के माध्यम से 'रस' और 'स्थायी भाव' का ज्ञान होता है। कविता के ज्ञान और पढ़ने से निम्नलिखित कौशल विकसित होते हैंः–

- स्वयं पढ़कर कविता के मुख भाग/अर्थ को समझना।
- कविता से एक विधा के रूप में परिचित होना और उसकी खासियतें जानना – शब्दावली और संरचना से परिचित होना।
- कविता की लय और ताल का आनंद उठा पाना।
- कविता में निहित भाव को अपने परिवेश से जोड़कर देख पाना।
- कल्पनाशीलता को बढ़ाना।
- अन्य कविताएँ पढ़ने के लिए प्रेरित करना।

साहित्य की गद्य विधाओं, जैसे – कहानी, नाटक, एकांकी जीवनी, संस्मरण के माध्यम से निम्नलिखित व्याकरण का ज्ञान होता हैः–

1. साहित्य के शिक्षण से बालकों को हिन्दी भाषा की विभिन्न ध्वनियों का ज्ञान होता है।
2. साहित्य शिक्षण के माध्यम से रचना तथा सृजनात्मक पद्धति का विकास होता है।
3. साहित्य शिक्षण द्वारा ही बालकों को भाषा से संबंधित नियमों का ज्ञान होता है।
4. साहित्य शिक्षा द्वारा ही बालकों में भाषा की शुद्धता के प्रति आस्था विकसित होती है।

गद्य शिक्षा के उद्देश्य

1. व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग करना।
2. शब्दों का प्रभावशाली प्रयोग करना।
3. शब्द भंडार की वृद्धि करना।
4. संक्षिप्त जीवनी लिख सकना।
5. सभाओं व उत्सवों का प्रतिवेदन तैयार करना।
6. लिपि के मानक रूप का व्यवहार करना।
7. रूप विज्ञान तथा ध्वनि विज्ञान के आधार पर शब्दों की वर्तनी का ज्ञान होना।
8. शब्दकोष को देखने की योग्यता का विस्तार करना।
9. विराम चिन्हों का सही प्रयोग करना।
10. शब्दों, मुहावरों और पद्‌बन्धों का उपयुक्त प्रयोग करना।
11. उपयुक्त अनुच्छेदों में बॉटकर लिखना।
12. देखी हुई घटनाओं का वर्णन करना।
13. सार, संक्षेपीकरण, भावार्थ, व्याख्या लिखना।
14. अपठित रचना का सारांश लिख सकना।

15. किसी विषय की वर्णनात्मक तथा भावात्मक शैली में अभिव्यक्ति कर सकना।
16. पठित रचना की व्याख्या करना।
17. विभिन्न साहित्यिक विधाओं के माध्यम से अपने भाव, विचारों, अनुभव, प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करना।

<u>साहित्य की मदद से हिन्दी की बहुभाषिक विशेषताओं की समझ बनाना</u>

भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ सैकड़ों भाषाएँ और हजारों बोलियाँ प्रचलित है।

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में निम्नलिखित 22 भाषाएँ शामिल हैः—

1. असमिया
2. बंगाली
3. गुजराती
4. हिन्दी
5. कन्नड़
6. कश्मीरी
7. कोंकणी
8. मलयालम
9. मणिपुरी
10. मराठी
11. नेपाली
12. उड़िया
13. पंजाबी
14. संस्कृत
15. सिंधी
16. तमिल
17. तेलुगू
18. उर्दू
19. बोडो
20. संथाली
21. मैथिली
22. डोंगरी

ये सभी भाषाएँ पर्याप्त मात्रा में विकसित हैं। संस्कृत, सिन्धी, उर्दू को छोड़कर इन भाषाओं को बोलने वाले करोड़ों लोग हैं और इनका क्षेत्र तथा राज्य भी क्षेत्रफल की दृष्टि से पर्याप्त विस्तृत है।

हिन्दी भाषा बोलने व समझने वाले लोगों की संख्या सर्वाधिक है। इनका क्षेत्र भी अन्य भाषाओं की अपेक्षा अधिक विस्तृत है, यथा (1) उत्तर प्रदेश (2) मध्य प्रदेश (3) बिहार (4) दिल्ली (5) राजस्थान (6) हिमाचल प्रदेश (7) हरियाणा (8) उतराखण्ड (9) झारखण्ड

यद्यपि उन विस्तृत क्षेत्रों में कई बोलियाँ या उपभाषाएँ बोली जाती हैं, तथापि ये हिन्दी भाषा—भाषी ही बन जाते हैं।

बहुभाषिक वातावरण

हमारे प्रांत के विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चें प्रायः अलग–अलग जनपदों के रहने वाले और कभी–कभी अन्य प्रदेश के रहने वाले भी होते हैं। उनकी मातृ–बोली या मातृभाषा भिन्न–भिन्न होती हैं। भिन्न परिवारों में भिन्न–भिन्न बोलियाँ बोली जाती हैं। चूँकि बालक पारिवारिक वातावरण में पला व बड़ा होता है, अतः उन पर उनकी मातृ बोली का पूरा प्रभाव होता है। जब ऐसे बच्चे विद्यालय में पढ़ने आते है तो विद्यालय और कक्षा में बहुभाषिक वातावरण का सृजन होता हैं।

प्रायः देखा जाता है कि भाषा–शिक्षक और विद्यार्थी ऐसे वातावरण में स्वयं को सहज अनुभव करते हैं। एक भाषा–शिक्षक को कक्षा में उपस्थित इस बहुभाषिक वातावरण के प्रति सकारात्मक व रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाकर इसका उपयोग हिन्दी सीखने में करना चाहिए।

<u>साहित्य की मदद से हिन्दी की बहुभाषिक विशेषताओं की समझ बनाई जा सकती</u>

साहित्य की मदद से हिन्दी की बहुभाषिक विशेषताओं की समझ विकसित करने में कक्षा के बहुभाषिक वातावरण का उपयोग निम्नलिखित रूप में कर सकते हैंः–

1. **<u>शब्दार्थ खेल</u>** – अध्यापक कक्षा में शब्दार्थ खेल की रचना कर सकता है। किसी शब्द विशेष कक्षा के श्यामपट्ट पर लिखकर विद्यार्थियों को इनके समानार्थी अन्य शब्दों को लिखने के लिए कह सकता है। इस प्रकार से विद्यार्थी कक्षा में स्वयं को सहज अनुभव भी करेंगे और इससे उनके शब्द भंडार में वृद्धि भी होगी।
2. **<u>वाक्य रचना में अन्तर</u>** – भाषा शिक्षक श्यामपट्ट पर हिन्दी का सरल बोलचाल का वाक्य लिखकर बालकों से कुछ पूछ सकता है कि वे अपनी बोली/भाषा में इसे किस प्रकार बोलेंगे। यह बहुभाषिक वातावरण में पढ़ाने की मनोरंजक प्रणाली है।
3. **<u>लोक बालगीत प्रस्तुति</u>** – अध्यापक या तो स्वयं या बालकों से घर–परिवार में सीखे गये गीतों को अपनी भाषा–बोली में सुनाने के लिए कह सकता है। प्रस्तुति के पश्चात् हिन्दी भाषा में तत्संबंधी प्रश्न पूछ सकता है या हिन्दी भावसाम्य की कविता प्रस्तुत कर सकता है।
4. **<u>कहानी कथन</u>**–कक्षा में विभिन्न भाषा बोलने वाले बच्चों से घर में सुनी गई कहानी सुनाने के लिए कहा जा सकता है। फिर अध्यापक उस कहानी को हिन्दी भाषा में सुना सकता है या फिर हिन्दी में कहानी सुनाकर बच्चों से उसे अपनी भाषा में सुनाने के लिए कह सकता है।
5. **<u>लोकोक्ति एवं मुहावरों का प्रयोग</u>** – हिन्दी में लोकोक्ति और मुहावरों को बोलने के बाद उनका अर्थ व वाक्य प्रयोग बताकर उससे मिलते–जुलते अन्य भाषा में प्रचलित लोकोक्ति और मुहावरों को पूछा जाता है।

<u>पाठ्यपुस्तकों में दी गयी रचनाओं के उपयोग से व्याकरणिक तत्वों का संदर्भगत शिक्षण</u>

'शिक्षा' जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है और शिक्षण 'शिक्षा' की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया। इस रंग–बिरंगी दुनिया में फूल भी है और काँटे भी, अवसाद है, रूदन है। इन विषम परिस्थितियों में

व्यक्ति या बालक समायोजित होकर अधिक–से–अधिक सुखपूर्वक रह सकें। इसके लिए हमें शिक्षा की आवश्यकता है। शिक्षार्थियों को शिक्षा देने के लिए शिक्षक विभिन्न साधनों को अपनाता है। उन सभी साधनों और युक्तियों का सम्मिलित स्परूप ही शिक्षण है तथा पाठ्य–पुस्तकें शिक्षण का एक उपकरण। इस प्रकार पाठ्यपुस्तकें और उसकी रचनाओं शिक्षा का एक महत्वपूर्ण अंग हैं।'

व्याकरणिक तत्वों का संदर्भगत शिक्षण के लिए पाठ्यपुस्तकें एक महत्वपर्ण साधन हैं। शिक्षक इनका प्रयोग निम्नलिखित आवश्यकता को पूरा करने के लिए करता हैः–

1. बच्चों को ज्ञान देने के लिए।
2. पाठ्यपुस्तकें पढ़ाने के समय शिक्षकों का और पढ़ते समय विद्यार्थियों का पथ प्रदर्शन करती हैं।
3. पाठ्य पुस्तकें विद्यार्थी की सबसे बड़ी सम्पति हैं।

रचनाओं के उपयोग से व्याकरणिक तत्वों का संदर्भगत शिक्षण

रचनात्मक शिक्षण में माध्यमिक स्तर पर रचना का पाठ्यक्रम निम्नवत हैः–

1. विद्यार्थियों द्वारा मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग।
2. रूपरेखा के आधार पर निबन्ध लिखना।
3. कहानी की रचना संवाद रूप में करना।
4. ऐतिहासिक स्थलों का वर्णन करना।
5. महापुरूषों का जीवन–चरित्र लिखना।
6. रूपरेखा के आधार पर कहानियों की रचना करना।
7. शब्दों को शुद्ध रूप में लिखना।
8. शब्दों के पर्यायवाची लिखना।
9. अनेक अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग।
10. अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करना।
11. देखी और सुनी हुई घटनाओं का वर्णन लिखना।
12. त्योहारों, उत्सवों, मेलों, समारोहों, यात्राओं इत्यादि का विस्तारपूर्वक वर्णन करना।
13. कल्पना–शक्ति का परिचय देने वाले निबन्धों को लिखना, जैसे यदि मैं प्रधानमंत्री होता, यदि मैं शिक्षामंत्री होता।
14. पत्र लिखना, उदाहरणार्थ – किसी यात्रा का वर्णन करना, व्यवसाय सम्बन्धी आदि।
15. पाठ्यपुस्तक की कहानियों, निबन्ध, जीवनियों को कई बार पढ़कर उन्हें अपने शब्दों में लिखना आदि।

पाठ्य–पुस्तक की रचनाओं से व्याकरण शिक्षा – पाठ्य–पुस्तक की रचनाओं के माध्यम से बच्चे निम्नलिखित व्याकरण को सीखते हैंः–

- हिन्दी वाक्य की रचना करना।
- किसी भी 'अनुच्छेद रचना' को अपने शब्दों में लिखना।
- पत्र–लेखन की कला को सीखना।
- पर्यायवाची शब्द लिखना सीखना।

- अनेकार्थवाची शब्दों के अर्थ लिखना।
- समानवाची शब्दों का वाक्य प्रयोग।
- मुहावरों का प्रयोग।
- अपठित गद्यांश पर कार्य करना।
- किसी महापुरूष की जीवनी लिखना।
- निबन्ध रचना करना।
- कहानी लेखन कार्य करना।
- गद्य अवतरणों का अनुकरण करना।
- हिन्दी भाषा शिक्षण और ई–लर्निंग

हिन्दी शिक्षण और डिजिटल माध्यम

किसी भी भाषा के सर्वांगीण विकास के लिए यह आवश्यक है कि उससे संबंधित सामग्री डिजिटल साधनों पर अधिकाधिक मात्रा में उपलब्ध हो। ई–लर्निंग वर्तमान समय की सर्वाधिक सशक्त डिजिटल तकनीक है। हिन्दी के विकास और वैश्विक प्रचार–प्रसार में ई–लर्निंग साधनों की भूमिका अतुल्य है।

मानव सभ्यता के विकासक्रम में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं। 'कम्प्यूटर' के आविष्कार से हुई डिजिटल क्रान्ति इसी प्रकार का एक क्रान्तिकारी परिवर्तन है। कम्प्यूटर ने मनुष्य के औद्योगिक, व्यापारिक, यातायात संबंधी, शिक्षा संबंधी और यहां तक कि दैनिक जीवन संबंधी क्रियाकलापों में गहरी पहचान बनाई है। डिजिटल क्रान्ति के बाद यह स्थिति है कि 'कंप्यूटर' के बिना मानव समाज के वर्तमान स्वरूप की कल्पना नहीं की जा सकती। इंटरनेट के अविष्कार ने मनुष्य को एक ऐसा ऑनलाइन प्लेटफार्म दिया है जिसके माध्यम से वह बिना किसी बाधा के एक ही क्लिक के साथ सम्पूर्ण विश्व में अपने विचारों, कार्यों आदि को पाठ, चित्र और ऑडियो–विजुअल सामग्री के रूप में पहुँचा सके।

वर्तमान समय में शिक्षा मनुष्य के मौलिक अधिकारों में से एक है। सरकारों द्वारा निरंतर इसे जन–जन तक पहुँचाने का कार्य किया जा रहा है। समय, स्थान और उसकी सीमितता इसमें एक प्रमुख बाधा रही है। 'दूर शिक्षा' के माध्यम से इस बाधा को भी कुछ हद तक दूर करने का प्रयास किया गया, किन्तु इस क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति कंप्यूटर और इंटरनेट के आगमन के बाद ही हो सकी है। शिक्षण और अधिगम की विकसित इसी तकनीक को ई–लर्निंग नाम दिया गया है। वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व में यह एक चिर–परिचित शब्द है। आज विश्व की प्रमुख भाषाओं में सभी प्रमुख विषयों में पर्याप्त मात्रा में ई–लर्निंग की सामग्री प्राप्त की जा सकती है। हिन्दी भी इस क्षेत्र में निरन्तर प्रगति कर रही है।

ई–लर्निंग एक आधुनिक तकनीकी शब्द है, जिसमें 'ई' का प्रयोग 'electronic' के लिए किया गया है तथा 'लर्निंग' का अर्थ है – अधिगम। अतः इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का प्रयोग करते हुए की जाने वाली लर्निंग 'ई–लर्निंग' है।

हिन्दी भारत की राजभाषा और संपर्कभाषा है। भारत एक बहुभाषिक देश है। यहॉ अनेक विविध प्रकार की भाषाओं का प्रयोग होता है। इसलिए उत्तर भारत में हिन्दी प्रथम भाषा होने के साथ–साथ देश के अनेक राज्यों में हिन्दी की स्थिति द्वितीय भाषा और कुछ राज्यों में तृतीय

भाषा की है। इसके अलावा विश्व के अन्य अनेक देशों के विद्यार्थी भी हिन्दी सीखते है। इन सभी रूपों में हिन्दी भाषा का 'शिक्षण' है। अतः हिन्दी भाषा शिक्षण को निम्नलिखित रूपों में समझ सकते हैं:–

- प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण
- द्वितीय (और तृतीय) भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण
- विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण

प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण हिन्दी भाषी क्षेत्रों में किया जाता है। इन क्षेत्रों में किसी–न–किसी रूप में हिन्दी का व्यवहार होता रहता है, इसलिए हिन्दी के औपचारिक और साहित्यिक स्वरूप का ही शिक्षण किया जाता है। द्वितीय, तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी सीखाने के लिए अधिक प्रयास की आवश्यकता हैं। विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के लिए और अधिक सामग्री की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि वहाँ हिन्दी का परिवेश भी उपलब्ध नहीं होता। अतः हिन्दी भाषा शिक्षण एक बड़ा क्षेत्र हैं, जिस पर भाषा की दृष्टि से अलग–अलग विचार किया जा सकता है, क्योंकि भाषा शिक्षण की प्रविधि और सामग्री इस बात पर भिन्न हो जाती है कि अध्येता किस रूप में हिन्दी को सीखना चाहता है।

वर्तमान परिवेश में हिन्दी भाषा शिक्षण को तकनीकी माध्यमों से जोड़ना नितांत आवश्यक है। यदि हिन्दी भाषा शिक्षण को वर्तमान तकनीकी जगत के साथ अद्यतन करना हैं तो यह आवश्यक है कि डिजिटल माध्यमों का हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए प्रयोग किया जाए। डिजिटल माध्यमों से तात्पर्य है कंप्यूटर और मोबाईल। आज मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर की भूमिका अपरिहार्य है। शिक्षण–प्रशिक्षण भी इससे अछूता नहीं है। अतः हिन्दी भाषा शिक्षण में कंप्यूटर का उपयोग आवश्यक हैं।

वर्तमान समय में मोबाईल केवल संचार का माध्यम नहीं रहा, बल्कि यह मिनी–कंप्यूटर के रूप में कंप्यूटर द्वारा किए जाने वाले अनेकानेक कार्यों को हमारी मुट्ठी में रहते हुए सम्पन्न कर रहा है। इसलिए सामान्य संचार के लिए प्रयुक्त मोबाईल फोनों से अलग इन्हें स्मार्टफोन कहा जाता है। हिन्दी भाषा शिक्षण को जन–जन तक पहुँचाने के लिए मोबाईल और स्मार्टफोन प्लेटफार्म का भी अधिकाधिक प्रयोग किया जाना अपेक्षित हैं।

हिन्दी भाषा शिक्षण संबंधी सामग्री दो प्रकार से पहुँचाई जा सकती है – ऑनलाइन और ऑफलाइन। ऑनलाइन से तात्पर्य इंटरनेट की सहायता से सामग्री उपलब्ध कराने से है। इसे तकनीकी रूप से 'system Independent' भी कहते हैं। हिन्दी भाषा शिक्षण के लिए दोनों ही प्रकार के डिजिटल माध्यमों का प्रयोग आवश्यक है।

ऑनलाइन शिक्षा ज्यादा प्रचलित और लोकप्रिय हो गयी है। ऑनलाइन शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसका उपयोग करके शिक्षक देश और दुनिया के किसी भी कोने से ऑनलाइन अपने विद्यार्थियों के साथ जुड़ सकते है। ऑनलाइन शिक्षा के लिए तीव्र गति की इंटरनेट और लैपटॉप कंप्यूटर की आवश्यकता है। आज लोग मोबाईल से भी ऑनलाइन पढ़ने के लिए जुड़ रहे है। ऑनलाइन शिक्षा के कई फायदे है और यह एक प्रकार का महत्वपूर्ण शिक्षण माध्यम है। ऑनलाइन सीखने के बारें में सबसे अच्छी बात यह है कि आप आराम से और तनाव रहित होकर सीख सकते हैं। आपको केवल सीखने के लिए जुनून की जरूरत है। एक त्वरित ऑनलाइन खोज की आवश्यकता है जो आपको सही पाठ्यक्रम तक ले जाएगी। ऑनलाइन

शिक्षा का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। ऑनलाइन शिक्षा से सिर्फ स्कूल या कॉलेज की शिक्षा ही नहीं बल्कि विभिन्न तरह की उच्च शिक्षा भी प्राप्त की जा सकती है। ऑनलाइन शिक्षा द्वारा व्यक्ति विभिन्न प्रकार के मार्केटिंग कोर्स जैसे डिजिटल, एफिलिएट मार्केटिंग इत्यादि कोर्स घर बैठे कर सकते हैं। ऑनलाइन शिक्षा द्वारा विद्यार्थी अध्यापक से किसी भी समय अपने समस्याओं को साझा कर सकते हैं। इसके लिए उन्हें इंस्टिटयूट जाने की आवश्यकता नहीं होती।

समेकन

साहित्य समाज का दर्पण है। एक साहित्यकार समाज की वास्तविक तस्वीर को सदैव अपने साहित्य में उतारता रहा है। मानव जीवन समाज का ही एक अंग है। मनुष्य परस्पर मिलकर ही समाज की रचना करते हैं। इस प्रकार समाज और मानव जीवन का संबंध भी अभिन्न है। समाज और जीवन दोनों ही एक–दूसरे के पूरक हैं। आदिकाल के वैदिक ग्रंथों व उपनिषदों से लेकर वर्तमान साहित्य ने मनुष्य जीवन को सदैव ही प्रभावित किया है।

दूसरे शब्दों में, किसी भी काल के साहित्य के अध्ययन से हम तत्कालीन मानव जीवन के रहन–सहन व अन्य गतिविधियों का सहज ही अध्ययन कर सकते हैं या उसके विषय में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। एक अच्छा साहित्य मानव जीवन के उत्थान व चारित्रिक विकास में सदैव सहायक होता है।

साहित्य से उसका मस्तिष्क तो मजबूत होता ही है साथ–ही, वह उन नैतिक गुणों को भी जीवन में उतार सकता है जो उसे महानता की ओर ले जाते हैं। यह साहित्य की ही अद्भूत व महान शक्ति है जिससे समय–समय पर मनुष्य के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलते हैं। साहित्य ने मनुष्य की विचारधारा को एक नई दिशा प्रदान की है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य की विचारधारा परिवर्तित करने के लिए साहित्य का आश्रय लेना पड़ता है। आधुनिक युग के मानव जीवन व उनसे संबंधित दिनचर्या को तो हम स्वयं अनुभव कर सकते हैं परंतु यदि हमें प्राचीन काल के जीवन के बारें में अपनी जिज्ञासा को पूर्ण करना हैं तो हमें तत्कालीन साहित्य का ही सहारा लेना पड़ता है।

वैदिक काल में भारतीय सभ्यता अत्यंत उन्नत थी। हम अपनी गौरवशाली परंपराओं पर गर्व करते हैं। तत्कालीन साहित्य के माध्यम से हम मानव जीवन संबंधी समस्त जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, जिन्हें आत्मसात् करके तत्कालीन समाज उन्नत बना।

इस प्रकार जीवन और साहित्य का अटूट संबंध है। साहित्यकार अपने जीवन में जो दुःख, अवसाद, कटुता, स्नेह, प्रेम, वात्सल्य, दया आदि का अनुभव करता हैं उन्हीं अनुभवों को वह साहित्य में उतारता है। इसके अतिरिक्त जो कुछ भी देश में घटित होता है जिस प्रकार का वातावरण उसे देखने को मिलता है उस वातावरण का प्रभाव अवश्य ही उसके साहित्य पर पड़ता है।

यदि हम इतिहास के पृष्ठों को पलट कर देखे तो हम पाते हैं कि साहित्यकार के क्रान्तिकारी विचारों ने राजाओं–महाराजाओं को बड़ी–बड़ी विजय दिलवाई है। अनेक ऐसे राजाओं का उल्लेख मिलता है जिन्होने स्वयं तथा अपनी सेना के मनोबल को उन्नत बनाए रखने के लिए कवियों व साहित्यकारों को विशेष रूप से अपने दरबार में नियुक्त किया था।

मध्यकाल में भूषण जैसे वीर रस के कवियों को दरबारी संरक्षण एवं सम्मान प्राप्त था। बिहारी लाल ने अपनी कवित्व–शक्ति से विलासी महाराज को उनके कर्त्तव्य का भान कराया था। संस्कृत के महान साहित्यकारों कालीदास और बाणभट्ट को अपने राजाओं का संरक्षण प्राप्त था।

इस प्रकार हम देखते है कि जीवन और साहित्य को पृथक नहीं किया जा सकता। उन्नत साहित्य जीवन को वे नैतिक मूल्य प्रदान करते हैं जो उसे उत्थान की ओर ले जाते हैं। साहित्य के विकास की कहानी वास्तविक रूप में मानव सभ्यता के विकास की ही गाथा है।

जब हमारा देश अंग्रेजी सत्ता का गुलाम था तब साहित्यकारों की लेखनी की ओजस्विता राष्ट्र के पूर्व गौरव और वर्तमान दुर्दशा पर केंद्रित थी। इस दृष्टि से साहित्य का महत्व वर्तमान में भी बना हुआ है। आज के साहित्यकार वर्तमान भारत की समस्याओं को अपनी रचनाओं में पर्याप्त स्थान दे रहे हैं।

नई शिक्षा नीति 2020

- संवाद और संप्रेषण के रूप में भाषा का महत्व।
- व्यक्तित्व विकास और विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़ने के संदर्भ में हिन्दी का महत्व।
- हिन्दी भाषा के साथ परिचय बढ़ाना।
- भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता में विश्वास।
- बिहार में मौजूद भाषिक विविधता की चर्चा
- सामाजिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान में भाषा एक उपकरण के रूप में।
- शुरूआती वर्षों में हिन्दी भाषा शिक्षण के संदर्भ में उच्चारणगत शुद्धता के प्रति कठोर रवैया न अपनाने की ताकीद।
- अवधारणाओं के निर्माण और ज्ञान के सृजन में भाषा की भूमिका।
- विद्यालय में प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी का स्थान।

पाँचवी कक्षा तक की शिक्षा में मातृभाषा/स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने पर बल दिया गया है। साथ ही मातृभाषा को कक्षा और आगे की शिक्षा के लिये प्राथमिकता देने का सुझाव दिया गया है।

इन सभी बिन्दुओं में भाषा/हिन्दी भाषा के शिक्षण के उद्देश्यों की चर्चा की गई है और यह समझने–समझाने की कोशिश की गई है कि हिन्दी भाषा केवल आपसी बातचीत का माध्यम ही नहीं है बल्कि ज्ञानार्जन और विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति का माध्यम है। अतः हिन्दी भाषा शिक्षण में केवल साहित्य पर ही बल न दिया जाय बल्कि विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी के लिए उसे माध्यम भी बनाया जाए। हिन्दी भाषा शिक्षण का एक और उत्तरदायित्व है कि वह मूल्यों को आत्मसात करने में भी मदद करें। इस रूप में हिंदी भाषा की पाठ्यचर्चा बृहद रूप से भाषा के उद्देश्यों की चर्चा करती है। हिन्दी के साथ–साथ यह किसी भी भाषा की पाठ्यचर्या पर लागू किया जा सकता है। हिन्दी भाषा क्यों सीखाई जाए, इसका अन्य विषय–क्षेत्रों के साथ क्या जुड़ाव है, इसके शिक्षण में किन अन्य बिन्दुओं को सम्मिलित किया जाय ? इत्यादि बिन्दुओं की जानकारी और एक समेकित, विस्तृत समझ विकसित करने का दायित्व हिन्दी की पाठ्यचर्चा का है।

मूल्यांकन

1. साहित्य की संकल्पना और उसकी विधिओं का स्पष्ट कीजिए।
2. शब्द शक्ति एवं अन्य साहित्यिक तत्वों को समझना तथा शिक्षण में उनका उपयोग के महत्त्व पर प्रकाश डालें।
3. साहित्य की मदद से हिन्दी की बहुभाषिक विशेषताओं पर प्रकाश डालें।
4. भाषा के विकास में साहित्य के उपयोग पर प्रकाश डालें।
5. व्याकरणिक तत्वों के संदर्भगत शिक्षण की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।
6. हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तकों में दिए गए अभ्यास प्रश्नों की महत्ता पर प्रकाश डालें।
7. हिन्दी साहित्य की पाठ्यपुस्तकों में किस सीमा तक हिन्दी भाषा–शिक्षण के उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम है? कक्षाई अनुभव, उदाहरण और तर्क के साथ अपना विचार प्रस्तुत कीजिए।
8. तर्क और उदाहरण सहित बताइए कि हिन्दी साहित्य की भाषा की पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न साहित्य की विधाओं के पाठ क्यों रखे जाते हैं?
9. कहानी आदि के उपयोग द्वारा विद्यार्थियों की भाषायी कुशलताओं के विकास पर प्रकाश डालें।
10. हिन्दी साहित्य का शिक्षण में क्या महत्व है स्पष्ट करो।हिन्दी भाषा शिक्षण में साहित्यिक रचनाओं की क्या भूमिका है।
11. बिहार में बोली जाने वाली भाषाओं से संबंधित हिन्दी रचनाओं पर विचार कीजिए और उनकी विशेषताओं का दस्तावेजीकरण कीजिए।
12. हिन्दी साहित्य के जीवन में महत्व को स्पष्ट कीजिए।
13. साहित्य की सभी विधाओं–कहानी, नाटक, निबन्ध, उपन्यास कविता आदि पर प्रकाश डालें।
14. अपने शिक्षण–अनुभव के आधार पर बताइए कि आपके वर्ग के बच्चे हिन्दी साहित्य के विभिन्न विषयों में से किसी विषय को पसंद करते है और किन्हें नहीं। उनसे बातचीत करते हुए कारणों की सूची बनाइए।
15. तर्क और उदाहरण सहित बताइए कि हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं के पाठ क्यों रखे जाते हैं।

सन्दर्भ

हिन्दी भाषा–शिक्षण लेखक – भाई योगेन्द्रजीत, एम.ए., एम.एड

हिन्दी–शिक्षण–पद्धति लेखक– डॉ. सत्यनारायण दूबे 'शरतेन्दु'

आकलन एवं पुस्तिका (2009), नई दिल्ली : एनसीईआरटी

पढ़ने की समझ, (2008), नई दिल्ली : एनसीईआरटी

हिन्दी का शिक्षण–शास्त्र लेखक – रीता चौहान/रामसकल पाण्डेय

हिन्दी भाषा–शिक्षण – लेखक – डॉ० शशि राव

Jagranjosh.com/general

भाषा के विकास में साहित्य का उपयोग, संपादक – मिथिलेश वामनक

इकाई – 3
प्रशिक्षुओं की भाषाई क्षमताओं का विकास

संदर्भ– नई शिक्षा नीति 2020 की अवधारणा को देखते हुये भाषायी दृष्टिकोण से उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा के शिक्षण का एक विशिष्ट एवं क्रान्तिक महत्व हो जाता है। विशेषकर बिहार राज्य के सन्दर्भ में देखा जाय तो यह इसकी एक प्रमुख विशेषता है। बहुभाषिकता की दृष्टि से यह एक समृद्ध राज्य है। छात्र की बहुभाषिकता को उसके भाषायी विकास में बाधा के रूप में न देखकर उसकी विशिष्टता और समृद्धि के रूप में देखने पर बल दिया जाना चाहिए। हिन्दी शिक्षण का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि किन शैक्षिक सामग्रियों के आधार पर समझ को विकसित करने के साथ–साथ भाषा के आधारभूत कौशलों(सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना)को परिष्कृत किया जाय। हिन्दी शिक्षण में भाषायी क्षमता के विकास के लिये कक्षागत एवं कक्षेत्तर विषयों पर पढ़ने, बोलने, लिखने के कौशल को समझना एक विशिष्ट पहलू है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विभिन्न प्रकार के एवं बहुआयामी संचार माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी भाषा के स्वरूप को जानना, समझना, उसका लेखन एवं संकलन आदि भी प्रशिक्षु एवं विद्यार्थी कर सके। इस इकाई के माध्यम से प्रशिक्षु भाषा के मूलभूत कौशलों एवं समझ को विकसित करने में सहायता प्राप्त करेंगे साथ ही साथ छात्रों के भाषायीं कौशलों को विकसित करने के विभिन्न तरीकों से अवगत होंगे।

प्रशिक्षुओं की भाषाई क्षमताओं का विकास

उद्देश्यः–

- प्रशिक्षु विभिन्न स्थितियों में प्रभावशाली ढ़ंग से अपने विचारों को व्यक्त कर सकें।
- विभिन्न प्रकार की पाठ्य–सामग्री को स्पष्टता और प्रवाहशीलता से पढ़ते हुए समझ सकें।
- वे लिखी हुई और कही गई बातो को समझ सकें।
- वे दो–तीन मिनट की विभिन्न विषयों पर की जा रही चर्चा को सुनकर समझा सकें।
- वे किसी दी गयी स्थिति का संक्षिप्त विवरण तैयार कर सकें।
- वे विभिन्न प्रकार के संचार में प्रयुक्त हिन्दी भाषा के स्वरूप को समझ सकें।
- वे विभिन्न परिचित विषयों पर सहपाठियों का साक्षात्कार ले सके और उनका लिखित रूप प्रस्तुत कर सकें।
- विभिन्न प्रकार से साहित्यिक लेखन कर सकें।

भाषायी कौशल का अर्थः–

बालक अपने विचारों का आदान–प्रदान करने के लिए भाषा को एक साधन के रूप में प्रयुक्त करता है। वह अपने कथन को दूसरे तक सम्प्रेषित करने के लिए उपयुक्त एवं सार्थक शब्दावली को सुनकर उसी रूप मे उसका अर्थ ग्रहण करता है। वक्ता के द्वारा कही गयी बात श्रोता तक उसी रूप में पहुँचाने की क्रिया भाषायी सम्प्रेषण कहलाती है। भाषायी सम्प्रेषण के अन्तर्गत दो क्रियायें होती हैं। अपने विचारों को अभिव्यक्त करना, सम्प्रेषित करना तथा विचारों

को ग्रहण करना या समझना, विचारों का सम्प्रेषण या अभिव्यक्ति हम बोलकर या लिखकर करते हैं। जब कि विचारों को ग्रहण हम सुनकर और पढ़कर करते हैं। भषायी सम्प्रेषण के ये चार प्रमुख आयाम सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना ही भाषायी कौशल कहे जाते हैं। भाषायी कौशलों को निम्न चार्ट द्वारा समझा जा सकता है:–

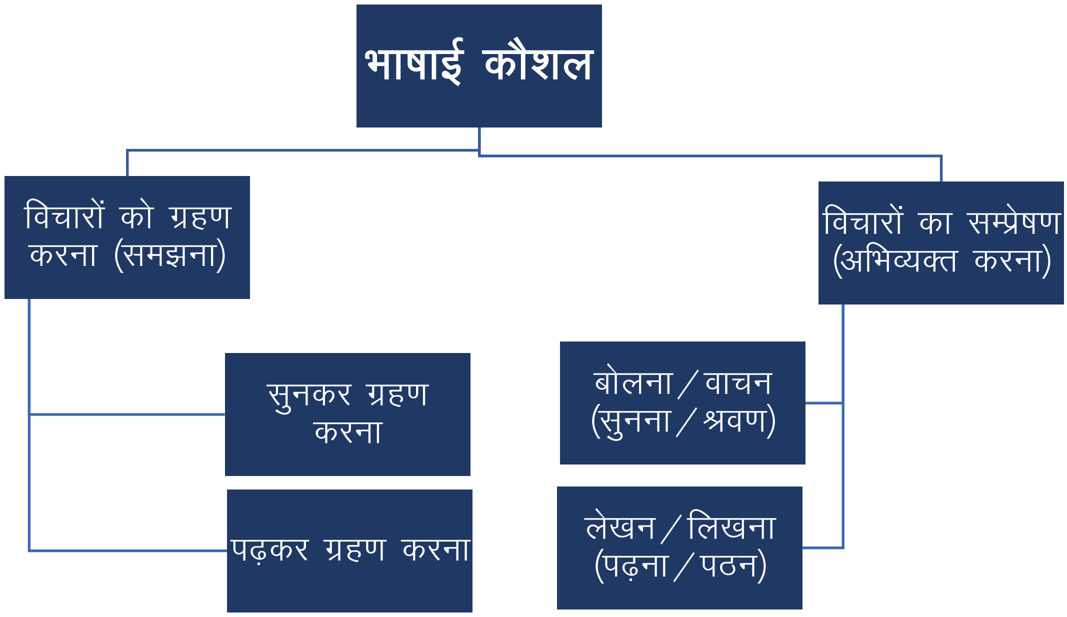

भाषाई क्षमता का विकास: श्रवण एवं मौखिक अभिव्यक्ति (सुनना एवं बोलना)

प्रस्तावना

बालकों में भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। जब उन्हे अपने परिवेश में सुनने एवं बोलने का पर्याप्त अवसर मिलता है तब वे भाषायी कौशलों को सहजता से सीख लेते हैं। भाषिक योग्यताओं के विकास क्रम में श्रवण कौशल एवं मौखिक अभिव्यक्ति की दक्षता का विशेष महत्व होता है। बालक में जब तक इन कौशलों का विकास नही होता तब तक भाषा सीखने–सीखाने की प्रक्रिया सही तरीके से नहीं चल सकती है। भाषा विकास के लिए श्रवण अनिवार्य योग्यता है। सुनने में किसी प्रकार की त्रुटि या दोष से उसका भाषायी विकास अवरूद्ध हो सकता है। इसलिए श्रवण दोष युक्त बालकों को बोलने में कठिनाई का अनुभव होता है।

भाषायी कौशल विकास की दूसरी एवं अनिवार्य योग्यता बोलना या मौखिक अभिव्यक्ति का कौशल है। इसके विकास के लिए आवश्यक है कि बालक में श्रवण कौशल का विकास समुचित ढ़ंग से हुआ हो अर्थात, वह दूसरों के विचारों को शुद्ध–शुद्ध एवं स्पष्ट सुनने में दक्ष हो। प्रायः यह देखा जाता है कि अशुद्ध सुनने वाला अशुद्ध बोलता भी है और लिखता भी है। इसलिए प्रारम्भिक कक्षाओं में श्रवण और मौखिक अभिव्यक्ति के विकास पर अधिक बल दिया जाना चाहिए।

भाषायी कौशलों का मनोवैज्ञानिक क्रम सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना होता है। ये सभी कौशल एक–दूसरे से सम्बन्धित होते हैं लेकिन सीखने–सिखाने के क्रम में सामान्यतया इन कौशलों को अलग–अलग करके देखा जाता है।

इस इकाई में हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि श्रवण एवं मौखिक अभिव्यक्ति का अर्थ क्या है? आपस में इनका सम्बन्ध क्या है? श्रवण एवं मौखिक अभिव्यक्ति के प्रति प्रशिक्षुओं का नजरिया क्या है?

उद्देश्यः—

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप—

- श्रवण (सुनना) का अर्थ, उसकी व्यापकता एवं व्यक्ति के विकास पर पड़ने वाले प्रभावों को समझ सकेंगे।
- श्रवण कौशल के विकास की क्रियाओं से अवगत होकर उनका कक्षा शिक्षण में उचित प्रयोग कर सकेंगे।
- अच्छे श्रोता के गुण बता सकेंगे।
- मौखिक अभिव्यक्ति (बोलना) के अर्थ महत्व एवं प्रकारों का विवेचन कर सकेंगे।
- अच्छे वक्ता के गुण बता सकेंगे।
- मौखिक अभिव्यक्ति के विकास की शिक्षण—अधिगम विधियों को समझकर उनका प्रयोग कक्षा कक्ष में कर सकेंगे।
- अभिव्यक्ति सम्बन्धी त्रुटियों के निराकरण के लिए उपयुक्त शिक्षण प्रक्रिया अपना सकेंगे।
- श्रवण कौशल एवं मौखिक अभिव्यक्ति के विकास में शिक्षक की भूमिका समझ सकेंगे।

पूर्व अनुभवः—

हम यह महसूस करते हैं कि बालक विद्यालय आने से पहले अपने परिवेश से अन्तःक्रिया करने के कारण श्रवण और मौखिक अभिव्यक्ति करने की योग्यता प्रकट करते हैं। बच्चे का परिवेश भाषायी दृष्टिकोण से जितना समृद्ध होता है वह उतना ही श्रवण (सुनना) एवं मौखिक अभिव्यक्ति (बोलना) की योग्यता अर्जित कर लेता है। भाषायी विकास की दृष्टि से शैशवावस्था एवं बाल्यावस्था जीवन का एक क्रान्तिक काल होता है। जब बालक विद्यालय आता है तो उसे अपने घर एवं परिवार से अलग भाषायी दुनिया मिलती है। जिस बालक का भाषायी विकास विद्यालयी दुनिया से जितना सन्निकट होता है उसका समायोजन उतना ही जल्दी एवं प्रभावपूर्ण तरीके से हो पाता है। इस इकाई में हम सुनने बोलने के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करेंगे।

श्रवण कौशल (सुनना) का अर्थ एवं महत्व

श्रवण शब्द 'श्रु' धातु से बना होता है जिसका सम्बन्ध सुनने की विभिन्न क्रियाओं तथा ध्यानपूर्वक सुनने, अधिगम करने तथा मौखिक संवाद आदि से है। भाषा सीखने का प्रथम स्तर श्रवण है। यह अन्य कौशलों को विकसित करने का प्रथम आधार है। साधारणतया श्रवण और सुनना समानार्थी शब्दों के रूप में प्रयोग होते हैं लेकिन मूलतः श्रवण एवं सुनने में अंतर होता है। सुनना दो प्रकार का होता हैः— बिना समझे हुए सुनना और भाषा को सुनकर अर्थग्रहण करना एवं उस पर भाषायी प्रतिक्रिया देना।

अतः परिभाषा के रूप में हम कह सकते हैं कि किसी भी व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त सार्थक ध्वनियों, शब्दों एवं भावों को कानों /श्रवण इन्द्रियों के माध्यम से ग्रहण कर, उसका अर्थ ग्रहण करने की प्रक्रिया श्रवण कही जाती है।

डिसेन्ट के अनुसार — "श्रवण कौशल तब घटित होता है जब बालक यह व्यवस्थित करते है और याद करते है कि क्या सुना गया है।"

हम कह सकते हैं कि बालक के जन्म के साथ–ही अनेकानेक निरर्थक व सार्थक ध्वनियाँ बालक के कर्ण यन्त्रो को तरंगित करती रहती हैं और इन्ही के अनुकरण से वह बोलना सीखते हैं। यदि सार्थक ध्वनियाँ बालक के कान में बार–बार पड़े तो वह बहरा और गूंगा हो जायेगा। विद्यालय में प्रवेश पाने से पूर्व बालक अनुकरण/सुनकर मौखिक अभिव्यक्ति करना सीख जाता है। भाषा सुनकर ही सीखी जाती है। अतः परिवेश का भाषा सीखने से सीधा सम्बन्ध होता है। आरम्भिक कक्षाओं में बालक 84 प्रतिशत समय सुनने में व्यक्त करता है। प्राथमिक कक्षाओं में यह 58 प्रतिशत रह जाता है। पुनः माध्यमिक कक्षाओं में सुनने का प्रतिशत बढ़ जाता है। मनोवैज्ञानिक शोध बताते है कि विद्यार्थी पढ़कर सीखने के बजाय सुनकर ज्यादा सीखता है।
उदाहरण के फलस्वरूप यदि हम बालक को कहें कि वह एक गाय है। इस वाक्य को सुनकर वह केवल आपकी तरफ देखता है तो हम कह सकते हैं कि सुनने की प्रक्रिया हुई है। लेकिन यदि किसी गाय को पहचान करके उसे बता भी देता है तो कहा जायेगा कि उसने श्रवण किया है।

बालक की अधिकांश भाषायी शिक्षा उसकी श्रवण द्वारा ग्रहित ध्वनियों पर ही अवलम्बित होती है। श्रवण शक्ति के इस महत्व के कारण ही यह किवदंती है कि अभिमन्यु ने चक्रव्यूह भंग करने की शिक्षा अपनी माता के गर्भ से उस समय सीख लिया था जब अर्जुन अपनी पत्नी सुभद्रा को चक्रव्यूह भंग करने की विधि सुना रहे थे। वैदिक काल में वेद या साहित्य को सुनकर याद किया जाता था। यही कारण है कि वेद को श्रुति भी कहा जाता है।

भाषा के अर्जन एवं व्यवहार के लिए श्रवण कौशल का बहुत महत्व है, जैसे – अधिकतर बधिर (बहरे) व्यक्ति भाषा के द्वारा बोलकर अपनी अभिव्यक्ति नहीं कर पाते हैं। उसका कारण यह नही है कि उनकी वागेद्रिंयॉ खराब हैं, बल्कि भाषा की ध्वनियों को न सुन पाने से उनका शब्द–भण्डार सीमित हो जाता है और वे अर्थग्रहण भी नही कर पाते हैं। यदि इन बालकों को उचित यन्त्रों द्वारा सुनने का प्रशिक्षण दिया जाय तो बधिर बालक भी भाषा का प्रयोग कर सकते है। अतः हम कह सकते हैं कि बिना सुने भाषा अर्जित नही की जा सकती है। अच्छी तरह सुनने के कारण ही बालक इन ध्वनियों में सूक्ष्म अन्तर कर पाता है।

श्रवण कौशल शिक्षण के उद्देश्यः–

- श्रवण /सुनना मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण क्रिया है। नवीन शोध से प्राप्त आकड़ों के अनुसार मनुष्य अपनी प्रतिदिन की कार्यप्रणाली में सम्प्रेषण सम्बन्धी व्यवहार के कुल समय का 45 प्रतिशत सुनने में, 30 प्रतिशत बोलने में तथा शेष 25 प्रतिशत संयुक्त रूप से पठन और लेखन में प्रयोग करते हैं। श्रवण कौशल के इस महत्व को ध्यान में रखकर इसके विकास के लिए सुनियोजित प्रयास करने चाहिए एवं हमें छात्रों/सीखनेवालों से ऐसी क्रियाओं को सम्पादित कराना चाहिए जिससे विद्यार्थीः–
- ध्यानपूर्वक एवं धैर्य से सुनने की कुशलता अर्जित कर सकें।
- सामान्य जानकारियों को सुनकर याद करने की योग्यता विकसित कर सकें।
- शुद्ध और अशुद्ध उच्चारण ध्वनियों एवं शब्दों में भेद करने में समर्थ हो सकें।
- श्रवण के शिष्टाचार का पालन कर सकें।
- श्रवण सामग्री को समझकर स्वराघात, बलाघात एवं स्वर के आरोह–अवरोह के अनुसार अर्थग्रहण कर सकें।
- श्रवण सामग्री के केन्द्रीय भाव या विचार को ग्रहण कर सकें।
- सामान्य निर्देशों आदि को समझकर उसके अनुरूप व्यवहार कर सकें।

- चिन्तन की योग्यता विकसित कर सकें।
- सुनी हुई विषयवस्तु के आधार पर शिष्टाचारपूर्वक प्रश्न पूछ सकें तथा अपनी शंका का समाधान कर सकें।
- कल्पना शक्ति विकसित कर सकें।
- विभिन्न संचार माध्यमों से प्राप्त समाचारों संवादों एवं वक्ताओं को सुनकर समझ सकें एवं उस पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकें।

श्रवण कौशल के सिद्वान्तः–

शिक्षकों को विद्यार्थियों में श्रवण कौशल के विकास के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिक सिद्वान्तों का आवश्यकतानुरूप प्रयोग करना चाहिए। श्रवण कौशल को विकसित करने के लिए निम्नलिखित बातो को ध्यान में रखना चाहिएः–

- सुनाने वाली भाषा श्रोता के स्तर के अनुकूल होनी चाहिए।
- वक्ता का उच्चारण स्पष्ट व शुद्ध होना चाहिए अन्यथा भ्रम के कारण अर्थ बदल सकता है।
- वक्ता को श्रोता की रूचि, जिज्ञासा एवं उत्सुकता का ध्यान रखना चाहिए।
- अपनी बात को श्रोता तक उचित ढ़ंग से पहुचाने के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण करना चाहिए।
- श्रोता को भय दिखाकर सुनने के लिए विवश नही करना चाहिए।
- वक्ता का उच्चारण भावपूर्ण होना चाहिए जिससे श्रोता को रसास्वादन हो सके।
- उच्चारण ऐसा हो जो श्रोता के संवेदनात्मक विकास में सहायक हो।
- श्रवण सामग्री ऐसी हो जो श्रोता को नवीनता की तरफ उन्मुख करे।

श्रवण कौशल को प्रभावित करने वाले कारकः–

श्रवण कौशल को प्रभावित करने वाले कारकों कों निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत रखा जा सकता हैः–

- शब्द भण्डार की सशक्तता विषय को समझने में सहायक होती है।
- स्मरण योग्यता क्रम को समझने में सहायक होती है।
- उपयुक्त वातावरण सुनने की क्षमता को बढ़ाता है और अनुपयुक्त वातावरण बाधक बनता है।
- अरूचि और उदासीनता श्रवण में बाधा उत्पन्न करते है।
- शारीरिक एवं मानसिक अस्वस्थता श्रवण में बाधक है।
- श्रोता एवं वक्ता के बीच तालमेल एवं विश्वास न होने पर सुनने की क्रिया सार्थक नहीं होती है।
- श्रोता की ग्रहणशीलता एवं धैर्य सुनने की क्रिया को प्रभावित करती है।
- श्रवणेन्द्रियो में दोष सुनने की क्रिया में बाधक होता है।
- शिक्षक द्वारा अशुद्ध उच्चारण शिक्षार्थी के समक्ष भ्रम पैदा करता है, जिससे श्रवण की प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न होती है।

श्रवण कौशल के प्रकारः–
जब हम बालक में श्रवण कौशल का विकास करते हैं तो हमारा आशय केवल यह नही होता कि बालक केवल ध्वनियों के सुनने में पारंगत हो, वरन वह जो कुछ सुने उसे समझे अर्थग्रहण करें, उसे याद रखे एवं उसके अनुसार कार्य करें तथा उस पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करें। श्रवण की इन अपेक्षाओं के आधार पर श्रवण कौशल के निम्नलिखित प्रकार हैंः–

- अवधानात्मक श्रवण
- रसात्मक श्रवण
- विश्लेषणात्मक श्रवण

अवधानात्मक श्रवणः–
अवधानात्मक श्रवण से आशय है कि श्रुत सामग्री को ध्यानपूर्वक सुनकर उसके मुख्य तत्वों, विचारों, आदेशों/निर्देशों तथा वार्तालाप के सूत्रों आदि को ग्रहण करना। अवधानात्मक श्रवण के विकास के लिए शिक्षार्थियों को श्रुत सामग्री के मुख्य बिन्दु सुनाने के लिए कहा जाता है अथवा उन्हे श्यामपट्ट पर या कापियों में लिखने क लिए कह सकते हैं। अवधानात्मक श्रवण कौशल के अन्य दो प्रकारो की आधारशिला है।
रसात्मक श्रवण – उचित स्वराघात एवं अनुतान, उपयुक्त गति, भाव–भंगिमा एवं आरोह–अवरोह के साथ सुनाई गयी अथवा पढ़ी गयी सामग्री में श्रोता द्वारा आनन्द की अनुभूति करना रसात्मक श्रवण कहलाता है। भाषा शिक्षण मे रसात्मक श्रवण योग्यता के विकास के लिए कविता सर्वोत्तम साधन है।
विश्लेषणात्मक श्रवण – इसमें श्रोता श्रुत सामग्री में प्रस्तुत विचारों भावों आदि पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार करता हुआ अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर उनका मूल्यांकन करता है तथा निष्कर्ष निकालता है। भाषा शिक्षक को विश्लेषणात्मक श्रवण के विकास के प्रति सहज रहना चाहिए क्योकि सामाजिक व्यवहार में हम विश्लेषणात्मक श्रवण की ही अपेक्षा रखते है।
अतः श्रवण प्रक्रिया के पहले दो रूपों की सार्थकता के लिए यह उचित होगा कि श्रोता व वाचक के बीच कोई व्यवधान न हो। विश्लेषणात्मक श्रवण की स्थिति में शिक्षार्थी वाचक के साथ–साथ स्वयं भी पुस्तक को पढ़ता जाये जिससे उसके अन्दर समीक्षात्मक दृष्टि उत्पन्न हो।

श्रवण शिक्षण की विधियाँः–
श्रवण कौशल के विकास के लिए उपयुक्त विधियाँ निम्नलिखित हैंः–

1. **सस्वर वाचन** – शिक्षक द्वारा शुद्ध उच्चारण, गति–यति, बलाघात, भावपूर्ण तरीके से शिक्षार्थियो को गीत, कहानी, कविता आदि सुनाया जाता है। इससे विद्यार्थियों में श्रवण कौशल, भाव ग्रहण क्षमता तथा एकाग्रता का विकास होता है।
2. **श्रुत लेख** – शिक्षक द्वारा बोले गये शब्दों को सुनकर उनकी ध्वनियों को पहचान कर लिपिबद्ध करना श्रुतलेख कहलाता है। विद्यार्थियों को श्रुतलेख कराकर ध्यानपूर्वक सुनने, ध्वनि पहचानने लिपि को आबद्ध करने की कला विकसित की जा सकती है।
3. **वाद–विवाद/परिचर्चा** – शिक्षक द्वारा शिक्षार्थियों को सुनने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए वाद–विवाद/परिचर्चा महत्वपूर्ण है। बिना श्रवण किये वाद–विवाद/परिचर्चा सम्भव नहीं है। अतः श्रवण कौशल को विकसित करने के लिए इनका भी आयोजन कराया जा सकता है।

4. **प्रश्नोत्तर विधि** – इस विधि का जनक सुकरात को माना जाता है। शिक्षक द्वारा प्रस्तुत किये गये विषय के आधार पर उनकी एकाग्रत समझ, रूचि को जाँचने के लिए छोटे–छोटे प्रश्न पूछना, विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त उत्तर एवं उनके द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर देकर उनकी श्रवण क्षमता को प्रभावी बनाया जा सकता है।
5. **कहानी सुनाना/कहना** – बालकों को रोचक कथाएँ, कहानियों को सुनाकर फिर उनसे उन कहानियों को सुनना चाहिए। इससे बालक कहानियों को ध्यानपूर्वक सुनेंगे। जिससे उनमें श्रवण कौशल का उचित विकास होगा।
6. **श्रव्य–दृश्य सामग्री** – श्रवण कौशल को विकसित करने तथा उच्चारण सम्बन्धी दोषों को दूर करने के लिए ग्रामोफोन, टेप–रिकार्डर, रेडियो, चलचित्र, विडियो तथा दूरदर्शन का सहारा लिया जाता है। इन साधनों की सहायता से कहानी, कविता, महापुरूषों के भाषण, नाटक तथा विभिन्न शैक्षिक महत्व के विषयों को प्रस्तुत किया जा सकता है। इससे भी श्रवण कौशल का विकास होता है।

अच्छे श्रोता के गुणः–

- वक्ता द्वारा कही गयी बात, कहानी, व्याख्यान आदि को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए।
- श्रोता को अधीर और आक्रामक नही होना चाहिए।
- एक अच्छा श्रोता, वक्ता द्वारा कही गयी बात सुनकर समझकर चिन्तन करता है और उसी के अनुरूप व्यवहार प्रकट करता है।
- एक अच्छे श्रोता के पास उच्च कोटि की निर्णय क्षमता भी होती है।
- एक अच्छा श्रोता मानसिक रूप से सक्रिय/क्रियाशील होता है। वह निरर्थक बातों का परित्याग श्रवण प्रक्रिया के दौरान करता रहता है।
- एक अच्छा श्रोता सुनाये जा रहे विषयों मे रूचि लेता है, जिज्ञासु होता है और उस पर प्रश्न भी पूछता है।

मौखिक अभिव्यक्ति/बोलना अर्थः–

मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में बेहतर समायोजन विचारो की अभिव्यक्ति एवं भावों का प्रकटीकरण भाषा के माध्यम से करता है। सामाजिक सदस्यों के भाषायी सम्पर्क का प्रथम रूप मौखिक अभिव्यक्ति या बालने का कौशल है। जब बालक अपने विचारों, भावों की अभिव्यक्ति सार्थक ध्वनियों के माध्यम से उच्चारित भाषा के रूप में करता है तो उसे बोलना या मौखिक अभिव्यक्ति कहते हैं।

प्रो. रमन बिहारी लाल के अनुसार – ''मानव अपने हृदय के भावों को व्यक्त करने के लिए जिस ध्वनि रूपी साधनों या संकेतों का प्रयोग करता है। उसे ही मौखिक भाषा या बोलना कहते हैं। ये ध्वनि संकेत समाज द्वारा स्वीकृत होते है।'' मौखिक अभिव्यक्ति में कुशलता अर्जित कर लेने पर बालक एक कुशल वक्ता बन जाता है जो अपनी अनुभूतियों एवं विचारों को रोचक एवं प्रभावशाली ढ़ंग से व्यक्त करने में सफल हो पाता है। भाषा शिक्षण में मौखिक अभिव्यक्ति कौशल या बोलने का विशेष महत्त्व होता है। प्रारम्भ में बालक का भाषायी विकास मौखिक भाषा से ही आरम्भ होता है। मौखिक भाषा ही लिपिबद्व होकर लिखित भाषा का रूप धारण करती है।

मौखिक अभिव्यक्ति/बोलने का महत्वः–

मौखिक अभिव्यक्ति के महत्त्व को निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत रखा जा सकता हैः–

- मौखिक भाषा विचारों एव भावों की अभिव्यक्ति का सरल व सशक्त माध्यम है।
- मौखिक अभिव्यक्ति लिखित अभिव्यक्ति की आधारशिला है।
- घर, परिवार, तथा मनुष्य के दैनिक क्रियाकलापों में, विचारों के आदान–प्रदान में साधारणतया मौखिक भाषा ही प्रयुक्त होती है।
- मौखिक अभिव्यक्ति की कुशलता से विचारों को प्रभावपूर्ण ढ़ंग से संक्षिप्त एवं सशक्त रूप में अभिव्यक्त कर सकते हैं।
- मौखिक भाषा ज्ञान के कोष में वृद्वि का एक प्रभावी साधन है।
- मौखिक अभिव्यक्ति या वार्तालाप द्वारा बालक आत्म–अभिव्यक्ति में निपुणता प्राप्त करता है।
- मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा बालक के व्यक्तित्व का उचित विकास सम्भव है। भाषा जितनी मधुर, स्पष्ट तथा प्रभावी होगी उतना ही वह दूसरे व्यक्ति पर प्रभाव डाल पायेगी।

मौखिक अभिव्यक्ति शिक्षण के उद्देश्यः–

मौखिक अभिव्यक्ति शिक्षण कौशल के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये जा सकते हैंः–

- बालक शुद्ध, स्पष्ट, स्वाभाविक एवं प्रवाहयुक्त वाणी में वार्तालाप करने की योग्यता अर्जित करेंगे।
- भावानुकुल आरोह–अवरोह, बल और अनुतान का ध्यान रखते हुये मौखिक अभिव्यक्ति करेंगे।
- बालक मानक भाषा में सहज भाव से अपनी बात प्रस्तुत करेंगे।
- उचित अवसरानुकूल भाषा शैली का प्रयोग कर सकेंगे तथा आत्मविश्वास एवं अपेक्षित हाव–भाव के साथ बोलने में निपुण होंगे।
- अपने मनोभावों जैसे हर्ष, विषाद, क्रोध, विस्मय आदि को स्वाभाविक रूप में व्यक्त करेंगे एवं परिचर्चाओं में भाग लेंगे।
- विद्यार्थी स्वागत, परिचय, धन्यवाद, कृतज्ञता, संवेदना एवं बधाई आदि के लिए उपयुक्त भाषा का प्रयोग करेंगे।
- विद्यार्थी विचार अभिव्यक्ति के अवसर पर दूसरों से असहमत होते हुए भी अपनी प्रतिक्रियाओ को शिष्ट एवं संयमित भाषा में व्यक्त करेंगे।

मौखिक अभिव्यक्ति शिक्षण कौशल की विशेषताएँः–

शिक्षार्थियों में मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के समुचित विकास के लिए कुछ विशेषताओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए जो मौखिक अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाती है। ये विशेषताएँ निम्नलिखित हैंः–
बोधगम्य भाषा का प्रयोग – आदर्श एवं उचित वार्तालाप के लिए आवश्यक है कि भाषा का प्रयोग बोधगम्य तथा शुद्ध हो। मौखिक भाषा हमेशा श्रोता के स्तर के अनुकूल होनी चाहिए।

शुद्धता – उच्चारण की शुद्धता मौखिक अभिव्यक्ति का प्रमुख गुण है। विद्यार्थियों के सामाजिक परिवेश की भिन्नता उनके उच्चारण पर प्रभाव डालती है। जिससे उनका उच्चारण मानक उच्चारण से भिन्न हो जाता है। स्थानीय बोलियों के परिवेश के कारण ही भाषा का उच्चारण कुछ अलग स्वरूप में हो जाता है।

स्वाभाविकता एवं स्पष्टता – विद्यार्थियों की बोलचाल एवं अभिव्यक्ति में स्वाभाविकता एवं स्पष्टता होनी चाहिए। भाषा बनावटी एवं अस्पष्ट न हो। जो बात कही जा रही हो वह पहेली के रूप में घूमा फिरा कर न कही जाय। किसी प्रश्न का उत्तर गोलमाल या अस्पष्ट रूप से न दिया जाय।

मधुरता – मौखिक अभिव्यक्ति की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि भाषा मधुर होनी चाहिए। भाषा की मधुरता में एक आकर्षक शक्ति होती है। किसी भी कड़वी बात को मधुरता व समरसता पूर्वक आकर्षक ढ़ंग से कहा जा सकता है।

तुलसीदास जी ने कहा है कि –

'''तुलसी मीठे वचन से, सुख उपजत चहु ओर।
वशीकरण इक मंत्र है, तजि दे वचन कठोर।।''

क्रमबद्धता – अपने विचारों व भावों को भलि–भाँति दूसरों तक पहुँचाने के लिए विचारों में क्रमबद्धता होनी चाहिए। विचारों की अव्यवस्थित अभिव्यक्ति के कारण प्रस्तुति का सूत्र भी बिखर जाता है और प्रभाव भी कम पड़ता है। अतः विद्यार्थियों को विचारो की क्रमबद्ध प्रस्तुति के लिए बच्चों को पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित करना चाहिए।

प्रवाह – किसी विचार या भाव को अटक–अटक कर या रूक–रूक कर प्रस्तुत करने में संदेश संवाद–विहीन हो जाता है और श्रोता वक्ता की बात को नहीं समझ पाते हैं। अतः अभिव्यक्ति कौशल में भाषा तथा भावों का प्रवाह अपेक्षित है। प्रवाह से सारा कथ्य (कही गई बात) एक इकाई के रूप में संगठित हो जाता है जिससे श्रोता उसे सरलता से ग्रहण कर लेता है।

अवसरानुकूलता – वाणी का प्रयोग विभिन्न अवसरों के अनुकूल ही करना चाहिए। अवसर के अनुरूप विभिन्न प्रकरणों का चुनाव किया जाना चाहिए। औपचारिक, अनौपचारिक हर्ष, विवाद, आदेश, अनुरोध, आदि अवसरों पर अभिव्यक्ति का रूप भिन्न–भिन्न होता है। अवसर के अनुरूप भाषा सामाजिक व्यवहार की एक अत्यावश्यक अपेक्षा है।

प्रभावोत्पादकता – मौखिक अभिव्यक्ति की सफलता का श्रेय उसकी प्रभावोत्पादकता में ही है। दूसरों पर वही व्यक्ति अपना प्रभाव जमा पाता है जो अपनी बात को प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत कर पाता है। अतः प्रभावोत्पादकता एक ऐसा गुण है जिसमें मौखिक अभिव्यक्ति से सम्बन्धित सभी गुण विद्यमान रहते हैं।

मौखिक अभिव्यक्ति कौशल विकास की विधियाँ एवं क्रियाकलाप

विभिन्न स्तरों पर शिक्षार्थी की मौखिक अभिव्यक्ति को निम्नलिखित प्रकार से विकसित किया जा सकता हैः–

अनौपचारिक बातचीत – कक्षा–कक्ष के बाहर भाषा शिक्षक एवं शिक्षिार्थियो के बीच अनौपचारिक बातचीत से भी विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति की योग्यता विकसित होती है। विभिन्न मुद्दों पर अनौपचारिक बातचीत आगे चलकर विचार–विमर्श, संवाद आदि में भाग लेने के लिए शिक्षार्थियों को अप्रत्यक्ष रूप से उत्प्रेरित करती है।

सस्वर वाचन – मौखिक कौशल के विकास के लिए सस्वर वाचन विधि विशिष्ट है। सबसे पहले शिक्षक पाठ्यपुस्तक का सस्वर वाचन करता है और शिक्षार्थियों को अनुकरण वाचन करने के

लिये प्रोत्साहित करता है। वस्तुतः बोलना, सुनना दोनों कौशलों के विकास के लिए उपयुक्त अवसर सस्वर वाचन में मिलता है।

प्रश्नोत्तर विधि – प्रश्नोत्तर विधि सुनना एवं बोलना दोनों क्रियाओं की अभिवृद्धि में सहायक है। प्रश्न पूछने के बाद बालकों से पूर्ण एवं शुद्ध उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। प्रश्नोत्तर विधि विद्यार्थियों को मौखिक शिक्षण प्रदान करने का सर्वोत्तम साधन है। स्तर के अनुरूप शिक्षक विद्यार्थी के उत्तर की लम्बाई को निश्चित करता है।

कहानी सुनाना – इस विधि में शिक्षक शिक्षार्थियों को कहानी सुनाता है एवं बीच–बीच में उनको प्रश्न पूछने तथा अपनी शंकाओं का समाधान करने का अवसर भी प्रदान करता है। बालकों को सुनी हुई कहानी को पुनः सुनाने को प्रेरित किया जाता है, जिससे उनकी मौखिक अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करने में सहायता मिलती है।

अन्ताक्षरी – इसमें बालक कविताओं को कंठस्थ करके परस्पर एक–दूसरे को सुनाते हैं। इससे बालकों में काव्य के प्रति प्रेम व उत्साह उत्पन्न होता है साथ ही वे शुद्ध उच्चारण करना सीख जाते हैं।

चित्र वर्णन विधि – चित्र दिखाकर चित्र का वर्णन करना, इन चित्रों के माध्यम से कहानियाँ बनाना, चित्रों को श्रृंखलाबद्ध करके उनसे प्रश्न पूछना इत्यादि करके भी बोलने के कौशल को विकसित किया जा सकता है।

भाषण – भाषण मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करने का एक अत्यन्त उपयुक्त साधन है। शिक्षार्थियों को अपनी रूचि एवं ज्ञान के आधार पर उपयुक्त शीर्षक देकर भाषण देने के अवसर प्रदान किये जा सकते हैं। भाषण देने की कला के समुचित विकास के लिये उन्हे प्रमुख विचारों को यथाक्रम संजोने की विधि श्रोताओं के अनुसार विषय सामग्री, उचित हाव–भाव प्रदर्शन, वाणी के आवश्यकतानुसार उतार–चढ़ाव, उपलब्ध समय पर उचित ध्यान रखने जैसी भाषण कला सम्बन्धी अपेक्षाओं से अवगत कराना चाहिए।

वाद–विवाद – मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करते समय शिक्षार्थियों में तर्क शक्ति, प्रत्युत्पन्न–मति, हास्य व्यंग्य युक्त एवं अपने विचारों को प्रभावी ढ़ंग से संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने जैसे गुणों का विकास होता है। वाद–विवाद द्वारा प्रत्युत्पन्न–मति को विकसित किया जा सकता है जिससे मौखिक अभिव्यक्ति भी बेहतर होती है।

बाल सभा/ बाल संसद – मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित किये जाने का यह एक सामाजिक एवं प्रभावी कार्यक्रम है। बाल सभा एवं बाल संसद में सक्रिय सहभागिता लेने के लिए प्रभावपूर्ण मौखिक अभिव्यक्ति अपेक्षित होती है, विशेषतः सभा के आयोजन के लिए सभापति पद के लिए प्रस्ताव रखना, अनुमोदन करना, सभापति एवं श्रोताओं को सम्बोधित करना इत्यादि। इससे बालक/बालिकाएँ केवल कुशल वक्ता या श्रोता ही नहीं बनते वरन उनमें स्वस्थ लोकतांत्रिक प्रवृत्ति का भी विकास होता है।

काव्य पाठ – विद्यार्थी कविता कंठस्थ करने और उसे सुनाने में गर्व एवं प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। वे कंठस्थ की गयी कविता को सुनाते समय हाव–भाव का प्रदर्शन भी करते हैं। उचित हाव–भाव के साथ कविताएँ सुनाने की यह प्रवृत्ति उनकी मौखिक अभिव्यक्ति को विकसित करने का सरल माध्यम हो सकती है।

इलेक्ट्रॉनिक साधनों पर बोलने का अभ्यास – शिक्षा के प्रभावी माध्यम के रूप में श्रव्य–दृश्य साधनों का प्रयोग दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अतः माध्यमिक एवं उच्च विद्यालयी स्तर पर अपने शिक्षार्थियों के मौखिक अभिव्यक्ति के सफल विकास के लिए उन्हे टेपरिकार्डर, विडियो, टेप तथा ध्वनि विस्तारक जैसे इलेक्ट्रॉनिक यन्त्रों पर प्रभावी ढ़ंग से बोलने के लिए उत्प्रेरित करना चाहिए।

एक अच्छे वक्ता के गुणः–

- वक्ता को भाषिक ध्वनियों का ज्ञान होता है।
- अभिव्यक्ति स्पष्ट होती है।
- श्रोता के स्तर एवं आयु के अनुसार भाषा का चयन करता है।
- श्रोता की प्रतिक्रिया के प्रति संवेदनशील होता है एवं उसकी रूचि व उदासीनता को समझता है।
- एक अच्छा वक्ता क्रोधपूर्ण और आक्रामक व्यवहार नहीं करता।
- श्रोता की आलोचना या उपहास नही करता।
- वक्ता श्रोता के प्रति विनम्र एवं मर्यादित होता है।
- श्रोता के साथ अपने अनुभवों को बाँटता है।
- श्रोता के प्रश्न एवं संदेह का उत्तर धैर्य और शान्ति से देता है।
- एक अच्छा वक्ता एक उच्च कोटि का श्रोता भी होता है।
- एक अच्छे वक्ता का भाषा पर अधिकार होता है। व्यापक शब्दावली का ज्ञान उसकी अभिव्यक्ति को प्रभावपूर्ण बनाता है।
- वक्ता में संवाद योग्यता, भावानुकूल अभिव्यक्ति व अभिनय का गुण होना चाहिए। इससे अभिव्यक्ति प्रभावी बनती है।

मौखिक अभिव्यक्ति सम्बन्धी त्रुटियॉ एवं उनका निराकरणः–

भाषा शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि विद्याथियों में मौखिक अभिव्यक्ति के विकास के लिए उनकी मौखिक अभिव्यक्ति सम्बन्धी त्रुटियों और उनके कारणों की जानकारी हो ताकि उनके निवारण के लिए वह उपचारात्मक कार्यक्रम आयोजित कर सकें। वार्तालाप, भाषण एवं विचार विमर्श में स्पष्टता, सरलता एवं प्रभावोत्पादकता जैसे गुणों का अभाव ही मौखिक अभिव्यक्ति को दोषपूर्ण बनाता है। इस आधार पर मौखिक अभिव्यक्ति में प्रायः निम्नलिखित दोष पाये जाते हैंः–

अधिक या न्यूनगति – इससे तात्पर्य है किसी वाक्य या वाक्य खण्ड को अधिक गति अर्थात शीघ्रता से या न्यूनगति अर्थात, धीर–धीरे बोलना। प्रवाह या ओजस्विता की कमी से कभी–कभी वीर रस युक्त काव्य पाठ सम्बन्धी मौखिक अभिव्यक्ति प्रवाह एवं ओज विहीन बन जाता है। वक्ता के स्वर में अपेक्षित ओज व वाणी में प्रभाव न होने के कारण मौखिक अभिव्यक्ति भाव एवं रसहीन हो जाती है। उदाहरणस्वरूप वीर रस की कविता का ओज विहीन होने से पाठ्य निर्जीव हो जाता है।

आरोह–अवरोह में अनिश्चितता – मौखिक अभिव्यक्ति में भावानुसार स्वर में उचित आरोह–अवरोह का प्रयोग न करना अथवा वाणी के उतार चढ़ाव में निश्चितता का न होना मौखिक अभिव्यक्ति का बहुत ही गम्भीर दोष है। कभी–कभी कविता वाचक अनावश्यक रूप में आरोह–अवरोह का उपयोग करता है या नही करता है अथवा कहीं–कहीं करता है। इससे भावाभिव्यक्ति में बाधा उत्पन्न होती है।

मनोवैज्ञानिक दोष – शिक्षार्थियों में अनावश्यक संकोच, भ्रम, झिझक, क्रोध एवं हीनता आदि के भाव उत्पन्न होने के कारण मौखिक अभिव्यक्ति में स्वाभाविक रूप से दोष आ जाते हैं।

परिणामतः मौखिक अभिव्यक्ति में हकलाना, तुतलाना, हड़बड़ाना आदि दोष दिखाई देने लगते हैं।

मौखिक अभिव्यक्ति सम्बन्धी त्रुटियों के निवारण हेतु उपचारात्मक युक्तियाँ

मौखिक अभिव्यक्ति सम्बन्धी त्रुटियों के अध्ययन के पश्चात उनके निवारण के लिए कुछ उपचारात्मक उपायों को अपनाया जाना चाहिएः–

उच्चारण अवयवों की जॉच – यदि माता–पिता एवं शिक्षकों को कहीं ऐसा अनुभव हो कि बालक की मौखिक अभिव्यक्ति में उच्चारण दोष के कारणों में उच्चारण अवयवों का दोषपूर्ण होना है, तो उसके उच्चारण अवयवों की सघन जॉच कराएं। चिकित्सक के परामर्श के अनुसार विद्यालय अथवा माता–पिता शिक्षार्थी की यथाआवश्यक चिकित्सा कराएँ।

शैक्षिक निर्देशन एवं सहायता कार्यक्रम – यदि अन्तर्मुखी शिक्षार्थी संवेगी एवं स्नायविक दोषों से ग्रसित होने के कारण भ्रम, भय, संकोच, अधैर्य, आतंक एवं झिझक इत्यादि का अनुभव कर रहा हो तो प्रशिक्षित स्नायविक चिकित्सक अथवा मनोचिकित्सक से सहायता लेकर कक्षा एवं विद्यालय में ऐसे प्रेरक वातावरण का सृजन किया जाय जिससे शिक्षार्थियों में आत्मविश्वास का विकास हो, हीन भावना न आने पाये तथा उनकी झिझक, संकोच, क्रोध, आदि स्वतः समाप्त हो जाए और वे अभिव्यक्ति के सामूहिक कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग ले सकें।

सुनियोजित शैक्षिक क्रियाकलापों का विद्यालय स्तरीय आयोजन – बालक–बालिकाओं की मौखिक अभिव्यक्ति सम्बन्धी त्रुटियों के निवारण के लिए शिक्षक अपने साथी शिक्षकों की सहायता से संकोची, भयग्रस्त, बच्चों को कक्षा, सभा, विद्यालय उत्सवों, प्रार्थना स्थल एवं सामूहिक सभाओं में उनकी क्षमतानुसार निर्धारित विषयों पर अपने विचार प्रकट करने के लिए प्रोत्साहित करें तथा उन्हे निरंतर प्रेरणा प्रदान कर यथावसर उनकी प्रशंसा भी करें।

अभिनव प्रयोगों में युक्त उपचारात्मक शिक्षण कार्यक्रम – अभिनव प्रयोगो में विश्वास रखने वाले निष्ठावान भाषा शिक्षक माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षार्थी वर्ग के लघु समूह बनाकर मौखिक अभिव्यक्ति के विकास एवं त्रुटियों के निराकरण के लिए विशेष उपचारात्मक शिक्षण का आयोजन भी कर सकते हैं।

इस प्रकार के कार्यक्रम में निम्न सोपानों का चयन करना होगाः–

- स्तरवार मौखिक अभिव्यक्ति सम्बन्धी सामान्य त्रुटियों यथा – शब्द समूह का आकलन तथा सम्बन्धित शिक्षार्थी वर्ग का चयन।
- उच्चारण अशुद्धियों एवं सामान्य त्रुटियों के संभावित कारणों की जानकारी करना।
- अशुद्धियों के संशोधन एवं त्रुटि निवारण के लिए उचित अभ्यास श्रृंखला का निर्माण तथा कार्यान्वयन।
- अभिनव प्रयोगों का मूल्यांकन।
- परिणाम निरूपण एवं अनुवर्ती कार्य।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं उपचारात्मक शिक्षण – जहाँ उच्च स्तरीय शिक्षण सुविधाएं एवं दृश्य–श्रव्य सामग्री उपलब्ध हो वहाँ भाषा शिक्षक ऐसे सुनियोजित शिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर सकता है जिनमे दृश्य–श्रव्य टेप, श्रव्य टेप आदि उपकरणों के माध्यम से मौखिक अभिव्यक्ति सम्बन्धी त्रुटियों को सुधारा जा सकता है।

पठन कौशल का विकासः–

प्रस्तावना–

लिखित भाषा को पढ़ने की क्रिया को पठन कौशल कहा जाता है जैसे – पुस्तकों को पढ़ना, समाचार पत्रों को पढ़ना आदि। भाषा के सन्दर्भ मे पढ़ने का अर्थ कुछ भिन्न होता है। भावों और विचारों को लिखित भाषा के माध्यम से पढ़कर समझने को पठन कहा जाता है। लिखने का उद्देश्य ही यही होता है कि हम अपने भावों और विचारों को दूसरे तक पहुँचाना चाहते हैं, जिससे दूसरा व्यक्ति जब उन विचारों और भावों को पढ़े तो उसके भावों एवं विचारों को समझ सकें।

लिखित भाषा के ध्वन्यात्मक पाठ को मौखिक पठन कहते हैं परन्तु बिना अर्थ ग्रहण किए हुए पढ़ने को पढ़ना नहीं कहा जा सकता। पठन की क्रिया में अर्थग्रहण आवश्यक होता है। अर्थग्रहण किस सीमा तक होता है, यह पठनकर्ता के ज्ञान, विवेक एवं कौशल पर निर्भर करता है।

पठन कौशल के माध्यम से चिरकालिक ज्ञान राशि प्राप्त की जा सकती है। अतः शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह पठन के महत्व, स्वरूप तथा उपयोग को भली–भांति समझ कर तद्नुरूप शिक्षण प्रक्रिया पर काम करें । इस इकाई में पठन के उन्ही पक्षों की चर्चा की जा रही है।

उद्देश्यः

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आपः–

- पठन का अर्थ एवं महत्व समझेंगे।
- पठन कौशल के उद्देश्य बतायेंगे।
- पठन की प्रक्रिया से परिचित होंगे।
- पठन के प्रकारों, जैसे – सस्वर पठन तथा मौन पठन आदि के विषय में जानेंगे।
- पठन अभिरूचि विकास के उपाय जान सकेंगे और उनका प्रयोग कक्षा–कक्ष में कर सकेंगे।
- पठन सम्बन्धी त्रुटियाँ कौन–सी होती हैं? उनका क्या कारण है? तथा किन उपायों से उनका निवारण होता है? जान सकेंगे।

पठन का अर्थः–

साधारणतया अंग्रेजी में Reading शब्द के लिए हिन्दी में दो शब्दों का प्रयोग होता है वे शब्द हैं – वाचन और पठन। मूलतः इन दोनों क्रियाओं में थोड़ा अन्तर है। पठन का अर्थ व्यापक है। इसमें समझ एवं भावपूर्ण ढ़ंग से आत्मसात करने पर बल दिया जाता है। वाचन का अर्थ है – जोर–जोर से पढ़ना जिसका आनन्द श्रोता भी ले सके। सामान्यता पठन और वाचन दोनों समानार्थी रूप में प्रयोग किये जाते हैं। लिखित बातें हमें स्वयं पढ़नी होती हैं अथवा किसी को पढ़कर सुनानी होती है तो हम इस लेखन सामग्री को प्रवाहपूर्ण एवं शुद्ध उच्चारण के साथ मधुर वाणी में पढ़ने का प्रयास करते हैं।

श्रीधर नाथ मुखर्जी के अनुसार – वाचन एक कला है। यह ज्ञानार्जन की कुंजी है। वाचन शक्ति ठीक होने पर मनुष्य जटिल–से–जटिल विषय को पढ़कर समझ लेता है तथा पढ़े हुए अंश का सार बोलकर अथवा लिखकर व्यक्त कर सकता है। अच्छे वाचन के बिना न तो कोई अच्छा वक्ता बन सकता है न ही अच्छा लेखक। वाचन मनुष्य का जीवन पर्यन्त साथी है।। यदि आप अकेले घर में बैठे हैं, सफर में हैं या बीमार पड़े हैं, तो ऐसे समय में कोई भी पुस्तक उठाइए और उसके पठन का आनन्द लीजिए।

जिस प्रकार मानव जीवन मे भाषा की आवश्यकता होती है ठीक उसी प्रकार भाषा को समुचित रूप से सीखने में पठन की। भाषा शिक्षण के चारों प्रमुख कौशलों में वाचन का अपना ही विशिष्ट स्थान है। पढ़ने का लिखने और सुनने से भी सीधा सम्बन्ध होता है।

पठन कौशल का महत्वः–

जीवन तथा जगत के विभिन्न पक्षों का विवरण एवं विवेचन लिखित रूप से संचित रहता है। पठन में प्रवीणता न रखने से व्यक्ति संसार की सांस्कृतिक महानता में अपने अस्तित्व का आनन्द नहीं ले पाता। पठन कौशल के बिना मनुष्य के जीवन में कई प्रकार की कठिनाईयाँ खड़ी हो जाती हैं। सामाजिक जीवन में वाचन साक्षरता का पर्याय माना जाता है। निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर पठन कौशल के महत्त्व को समझा जा सकता हैः–

- पठन ज्ञान कोष की वृद्धि में सहायक होता है। यह ज्ञानोपार्जन का साधन है।
- आधुनिक युग विशिष्टताओं का युग है। नवीनतम जानकारी प्राप्त करने में पठन का विशेष महत्व है।
- सामाजिक दृष्टिकोण से भी पठन कौशल अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कक्षागत गतिविधियों में पठन कौशल का विशिष्ट महत्व है।
- शिक्षा की प्रक्रिया का संचालन सभी शिक्षण स्तरों पर वाचन/पठन के माध्यम से किया जाता है बिना वाचन के शिक्षण प्रक्रिया का संचालन सम्भव नहीं है।
- लिखित भाषा को सीखने हेतु वाचन का विशेष महत्व है। अक्षरों को सीखने के लिये अक्षरों की ध्वनि के उच्चारण की सहायता ली जाती है। बिना पठन के भाषा का ज्ञान अधूरा होता है।
- पठन कौशल मनोरंजन का भी एक महत्वपूर्ण साधन है।
- पठन कौशल समय का सदुपयोग करने के लिए भी एक बेहतर साधन है। मनुष्य कहानी, पत्रिका इत्यादि पढ़ता है तथा आनन्द की अनुभूति करता है।
- आलोचनात्मक/समालोचनात्मक दृष्टिकोण के विकास के लिए अध्ययन अति आवश्यक है। इसके लिए पठन में प्रवीणता जरूरी है। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा साहित्यिक विकास के लिए आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास होना आवश्यक है।

पठन की प्रक्रियाः–

पठन एक सार्थक तथा चिंतन प्रधान क्रिया है। पठन प्रक्रिया के अन्तर्गत पाठक की दृष्टि जैसे–जैसे शब्दों और वाक्यों पर घूमती है, वह उनका प्रत्याभिज्ञान समझता हुआ उनमें निहित अर्थ (लक्ष्यार्थ एवं व्यग्यार्थ) को ग्रहण करता जाता है। वे लेखक के विचार भाव तथा मंतव्य को समझ कर उनका मूल्यांकन भी करता है। ऐसा करते समय उसके मन में जो प्रतिक्रिया होती है। वह उसके पूर्व अनुभवों के कारण होती है।

पठन की प्रक्रिया को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं :–

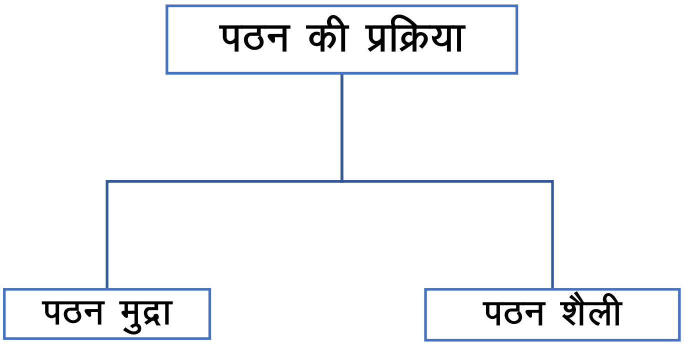

पठन मुद्रा – पठन मुद्रा के अन्तर्गत हम विषयवस्तु पढ़ाने से पूर्व योग्यताओं के विकास की बात करते हैं जिससे विद्यार्थी मानसिक और शारीरिक रूप से पढ़ने के लिए तैयार हो जाय। विद्यार्थियों में आत्मविश्वास उत्पन्न करना तथा विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार करना उन्हे पढ़ने के लिए उत्साहित करता है। बच्चो को भाषा ज्ञान के सम्प्रत्यय तथा गति नियंत्रण के लिए भी उचित निर्देश दिये जाने चाहिए। पठन कौशल के अर्न्तगत योग्यताओं को विकसित करने के लिए हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिएः–

- पुस्तक को हाथ मे पकड़ना सीखाना।
- उचित मुद्रा में बैठकर अथवा खड़े होकर पढ़ना सीखना।
- पुस्तक तथा ऑखो के बीच उचित दूरी का ज्ञान कराना।
- पुस्तक पर अधिक झुककर न पढ़ने हेतु प्रेरित करना।
- भावानुसार पढ़ने का अभ्यास कराना।
- उचित अंग संचालन/संयमित अंग संचालन हेतु प्रेरित करना।

पठन शैली

पठन शैली के अन्तर्गत अक्षर एवं शब्दोच्चारण, बल, सस्वरता, विराम, लय, यति–गति, प्रवाह आदि आते हैं। पठन शैली के अन्तर्गत चार सोपान आते हैं – प्रत्याभिज्ञान, अर्थग्रहण, मूल्यांकन तथा अनुप्रयोग।

1. **प्रत्याभिज्ञान** – प्रत्याभिज्ञान से तात्पर्य सदृश वस्तु को देखकर किसी पूर्व में देखी हुई वस्तु का स्मरण होना है। स्मृति की सहायता से होने वाले पहचान को हम प्रत्याभिज्ञान कहते हैं। लेखक के विचारों को पढ़कर समझना तथा उसका पूर्वगत सामग्री के साथ सम्बन्ध स्थापित करना।
2. **अर्थग्रहण** – पठन प्रक्रिया का द्वितीय चरण पढ़ने की क्षमता के बाद आने वाला अर्थग्रहण है। पढ़ने का अर्थ केवल सार्थक ध्वनि के प्रतीक लिपि चिन्हो को पहचानना मात्र नहीं है, अपितु पूर्वश्रुत सार्थक ध्वनियों के प्रतीक चिन्हों को पढ़कर उनका सन्दर्भानुसार अर्थग्रहण करना है। पठन एक सोद्देश्य प्रक्रिया है। जैसे–जैसे पाठक शब्दों को पढ़ता है, वैसे–वैसे उन शब्दों के निहित अर्थों को समझना, विचारों को क्रमबद्ध रूप से अर्थ ग्रहण करना, पठन सामग्री के केन्द्रीय भाव को समझना तथा विश्लेषण करना एवं सामान्यीकरण करना निहित है।
3. **मूल्यांकन** – अर्थग्रहण के साथ ही पढ़ने वाला गृहीत विचारों की उपयोगिता, औचित्य और विश्वसनीयता का निर्धारण भी करता चलता है। अच्छा पाठक वही है जो लेखक

के द्वारा प्रस्तुत घटना, विचार, चरित्र या मन्तव्य को समझते हुए उसका मूल्यांकन करता चले। पाठक लेखक के विचारों का मूल्यांकन कर यह जानने का प्रयास करता है कि उसके अनुसार या समाज की परिस्थितियों के अनुरूप लेखक के विचारों का क्या औचित्य है? इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पठन प्रक्रिया के अन्तर्गत विचारों का मूल्यांकन तथा प्रतिक्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण है।

4. **अनुप्रयोग** – अनुप्रयोग पठन प्रक्रिया का अन्तिम चरण/ सोपान है। अनुप्रयोग से तात्पर्य पठित सामग्री से ग्रहण किए गये विचारों तथा मूल्यों का अपने जीवन में प्रयोग करना है। लेखक के जिन भावों तथा विचारों से हम सहमत होते हैं, उन्हे अपने जीवन में आत्मसात करें एवं जीवन मूल्यों में सम्मिलित करें। हम कह सकते हैं कि पठन तभी सार्थक होता है यदि वह हमारे व्यवहार में परिवर्तन लाता है। किसी कवि की पंक्ति 'बिना पढ़े नर पशु कहलावे' जितनी सरल और स्वाभाविक है उतनी ही सार्थक और सारगर्भित भी है।

पठन/वाचन के प्रकार

भाषा का मूलरूप उच्चारित है तथा इसका प्रतीक लिपिबद्ध होता है। मुद्रित रूप लिपिबद्ध रूप का ही प्रतिनिधि है। भाषा शिक्षण में बालक पठन कार्य दो प्रकार से करता है। पठन के प्रकारों को अग्रांकित रेखाचित्र द्वारा समझा जा सकता है:–

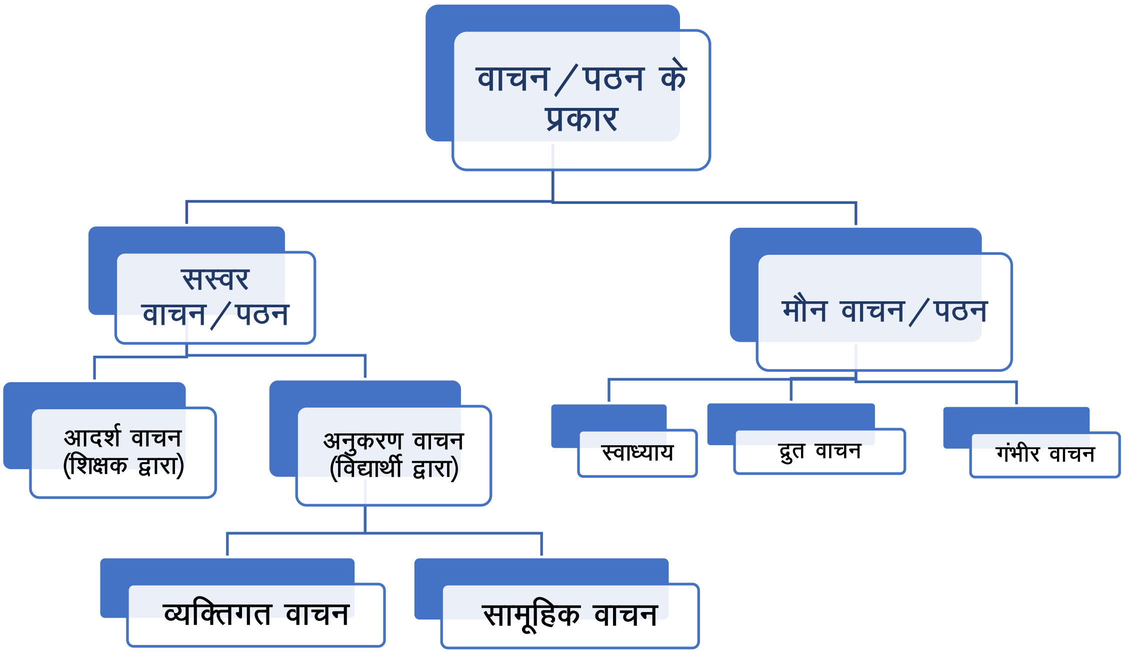

सस्वर पठन/वाचन

स्वर सहित पढ़ते हुये अर्थग्रहण करने को सस्वर पठन कहा जाता है। यह पठन की प्रारंभिक अवस्था होती है। वर्णमाला में लिपिबद्ध वर्णों की पहचान सस्वर पठन के द्वारा की करवायी जाती है। सस्वर पठन भावानुकूल करना चाहिए। इस प्रक्रिया से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का विकास होता है। सस्वर पठन के माध्यम से आरोह–अवरोह, बल, उतान–अनुतान, गति–यति का भी अभ्यास हो जाता है। विषयवस्तु के साथ पाठक का जितना अधिक तादात्मय होगा, उसके पठन में उतनी ही स्वाभाविकता और प्रभाव उत्पन्न होगा। सस्वर पठन में उच्चारण की

शुद्धता व स्पष्टता और उचित गति के साथ–साथ पाठ्य सामग्री की ग्राह्यता के लिए यह भी आवश्यक है कि विराम चिन्हों के अनुरूप (ध्यान में रखकर) पढ़ा जाय अन्यथा अर्थ ग्रहण में बाधा पड़ सकती है। सस्वर वाचन को चार वर्गो में विभाजित किया जा सकता है–

1. **आदर्श वाचन** – जब कक्षा में विद्यार्थियों के समक्ष शिक्षक स्वयं गति–यति, आरोह, अवरोह, स्वराघात, बलाघात, लय–ताल इत्यादि को ध्यान में रखकर वाचन करता है तो उसे आदर्श वाचन कहा जाता है।
2. **अनुकरण वाचन** – शिक्षक द्वारा आदर्श वाचन के उपरान्त विद्यार्थी कक्षा में शिक्षक के आदर्श वाचन के अनुरूप वाचन करने का प्रयास करता है या उससे वाचन करवाया जाता है। इसे ही अनुकरण वाचन कहते हैं। अनुकरण वाचन से बालक में लय–गति, आरोह–अवरोह व भाव ग्रहण के साथ पढ़ने की योग्यता का विकास होता है।
3. **व्यक्तिगत वाचन** – एक विद्यार्थी द्वारा किये गये वाचन को व्यक्तिगत वाचन कहते हैं। विद्यार्थी के वाचन को सुनकर अध्यापक उनकी उच्चारण सम्बन्धी त्रुटियों का निवारण करता है। इस विधि में पठन दोषों का निदान सरलता से हो जाता है और उपचारात्मक शिक्षण के लिए व्यक्तिगत रूप से ध्यान देने में अध्यापक को सरलता होती है।
4. **सामूहिक वाचन** – दो या दो से अधिक विद्यार्थियों द्वारा आवाज सहित किये गये वाचन को सामूहिक वाचन कहते हैं। इस वाचन से विद्यार्थियों का संकोच दूर हो जाता है। उनमें मौखिक अभिव्यक्ति के लिए आत्मविश्वास उत्पन्न होता है। सामूहिक वाचन तेरह–चौदह वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए ही किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों की संख्या उतनी ही रखनी चाहिए जिससे बगल की कक्षा में शान्ति भंग न हो।

सस्वर पठन के गुण /सस्वर वाचन से लाभ

- उच्चारण शुद्ध होता है।
- विद्यार्थियों में स्वर माधुर्य आता है।
- विद्यार्थी उचित लय एवं गति से वाचन करने लगता है।
- विद्यार्थी के स्वर में रसात्मकता आती है।
- वाचन में प्रभावोत्पादकता आती है।
- अर्थ ग्रहण क्षमता में वृद्धि होती है।
- विद्यार्थी के हाव–भाव में सकारात्मकता आती है।

मौन पठन/वाचनः–

लिखित भाषा को बिना उच्चारण (ध्वनि) किए मन ही में शान्तिपूर्वक पढ़ने और पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की क्रिया को मौन पठन कहते है। मौन पठन करते समय पद्यांश में वर्णित भावों और विचारों की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है। व्यावहारिक जीवन में मौन पठन बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। सार्वजनिक स्थानों, पुस्तकालयों में, पत्र–पत्रिकाओं, मनोरंजन, साहित्य, धर्मदर्शन इत्यादि को मौन पठन से पढ़ना उचित रहता है। मौन पठन में पठनकर्ता मौखिक पठन की अपेक्षा अधिक मनोयोग से पढ़ता है। वह कम समय में अधिक पढ़ लेता है तथा उसे थकान भी कम होती है। विद्यालयी जीवन व उसके बाद स्वाध्याय में मौन पठन अत्यंत उपयोगी होता है। मौन पठन के मुख्य रूप से दो प्रयोजन हैः– पाठ्य–सामग्री में निहित विचारों को आत्मसात करना तथा पठन गति में तीव्रता लाना। मौन पठन के द्वारा हम गहराई से अर्थग्रहण

करते हुये चिन्तन–मनन एवं तर्कशक्ति का विकास करते हैं। मौन पठन करते समय हमारा सारा ध्यान पाठ्यवस्तु में निहित विचार पर ही होता है। हम एकाग्रचित्त होकर उसका विश्लेषण करते हैं, मूल्यांकन करते हैं और उसके प्रति अपनी मानसिक प्रतिक्रिया भी करते रहते हैं।

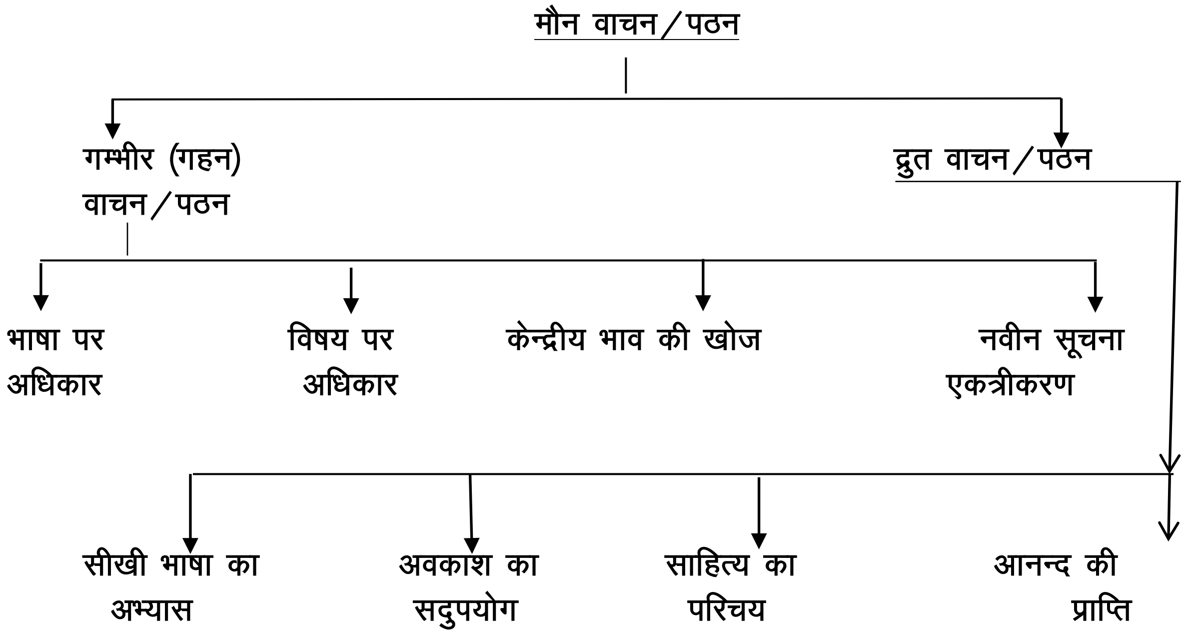

गम्भीर मौन पठन – गम्भीर मौन पठन विषयवस्तु पर अधिकार प्राप्त करने अथवा अधिक जानकारी खोजने के लिए किया जाता है। इसके अर्न्तगत पठन के प्रयोजन पर ध्यान रखना चाहिए। प्रत्येक अनुच्छेद के केन्द्रीय भाव को दृढ़ता से ग्रहण किया जाता है। इस प्रकार यह कह सकते हैं कि गंभीर मौन पठन के अन्तर्गत पूरी विषयवस्तु पढ़ने के उपरान्त मन में उसकी एक रूपरेखा बना ली जाती है तथा स्वयं द्वारा विकसित टिप्पणियों को प्रश्नों के रूप में संगठित करके विषयवस्तु की पुनरावृत्ति की जाती है।

द्रुत मौन पठन – द्रुत (त्वरित) मौन पठन में विषयवस्तु का एक–एक शब्द पढ़ना आवश्यक नहीं होता है। इसके द्वारा पढ़ी गई विषयवस्तु का केवल सार ग्रहण कर लिया जाता है। इसका उद्देश्य मात्र आनन्द की प्राप्ति एवं सूचनाओं का संकलन करना है। द्रुत पाठों तथा समाचार पत्र आदि के पठन में इसका प्रयोग होता है। कक्षा में मौन पठन का अभ्यास इसलिए कराया जाता है जिससे विद्यार्थी उचित अवसरों पर उसका प्रयोग कर सकें और धीरे–धीरे उनके हृदय में स्वाध्याय प्रेम उत्पन्न हो सके।

मौन वाचन/ पठन से लाभ

- वाचन गति का विकास होता हैं।
- पाठ के केन्द्रीय भाव की समझ विकसित होती है।
- उपसर्ग, प्रत्यय, सन्धि–विच्छेद आदि के द्वारा शब्द के अर्थ को समझा लेना।
- अवकाश के समय का सदुपयोग होता है।
- एकाग्रचित्त होकर ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता बढ़ती है।
- भाषा सम्बन्धी कठिनाईयों का निवारण होता है।
- पठित सामग्री का निष्कर्ष निकालने की क्षमता विकसित होती है।

- विस्तार एवं संश्लेषण की क्षमता विकसित होती है।
- श्रुत पठन की क्षमता का विकास होता हैं।
- स्वाध्याय की क्षमता विकसित होती है।

पठन सम्बन्धी त्रुटियाँ एवं निराकरणः–

पठन को अनेक कारक प्रभावित करते हैं, जैसे शारीरिक कारक, मानसिक कारक, संवेगात्मक कारक, व्यक्तिगत कारक तथा वातावरण।

पठन में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ पायी जाती हैं जिसकी विवेचना निम्न प्रकार हैः–

- **शब्दों की पहचान में कठिनाईः** अधिकांशतः देखा जाता है कि बच्चों को शब्दों तथा वर्णों की ठीक प्रकार से पहचान नहीं होती है जिसके कारण बच्चे अटक–अटक कर पढ़ते हैं। इसका प्रभाव पठन की गति पर पड़ता है। इसका प्रमुख कारण एक जैसी ध्वनियों में अन्तर न कर पाना तथा एक जैसे वर्णों की पहचान न कर पाना है, जैसे – ड–ड़,व–ब,श–स,भ–स,ह–क्ष इत्यादि। इस कारण बच्चे वर्णों को दो–दो बार पढ़ते हैं तथा वाक्य पढ़ते हुये शब्दों को छोड़ देते हैं।
- **नेत्र सम्बन्धी दोष–** यदि दृष्टिदोष के कारण बच्चा अक्षरों को ठीक से नहीं देख पा रहा है तो वह शब्द की ओर संकेत करके पढ़ता है। बच्चे वाक्य पढ़ते हुए शब्दों को छोड़ देते हैं तथा भावानुकूल नही पढ़ पाते है। वाक्य पढ़ते हुय बच्चा ठीक से वर्णों को नही पढ़ता है। इसका प्रमुख कारण स्नायु सम्बन्धी दोष भी हो सकता है। इससे बच्चा अनुचित मुद्रा में पढ़ता है तथा पुस्तकों को ऑखों के निकट या दूर रखता है।
- **अशुद्ध उच्चारण –** यदि बच्चों को पढ़ाते समय ध्वन्यात्मक विधियों का प्रयोग न करवाया जाय तो बच्चे अशुद्ध उच्चारण करते हैं। इसका कारण वाणी सम्बन्धी दोष या मात्रा एवं स्वरों के प्रति दृष्टिकोण भी हो सकता है। इसमें बच्चे ह्रस्व तथा दीर्घ स्वर का अशुद्ध उच्चारण करते हैं, जैसे – कलम को कमल, लड़की को लकड़ी। स्थानीय बोली के कारण शब्दों का गलत उच्चारण करते हैं, जैसे – सवेरा को छावेरा, स्थान को अस्थान पढ़ते हैं।
- **पठन के समय अर्थ न समझना –** इसका प्रमुख कारण कठिन पाठ्य सामग्री हो सकता है। शब्द भण्डार में कमी तथा अनुभव अभ्यास का अभाव भी इसका प्रमुख कारण है। अर्थग्रहण क्षमता के बिना पठन कौशल अधूरा है, निरर्थक है। इसलिए यदि बच्चा पढ़ते समय पठित सामग्री का अर्थ नहीं समझेगा तो मूल्यांकन की क्षमता नहीं विकसित हो पायेगी।
- **आरोह–अवरोह का अभाव –** वाचन का श्रोता पर सीधा प्रभाव पड़ता है। उच्चारण में बल, सरसता, लय, प्रवाह, गति एवं आरोह का ध्यान रखना अपेक्षित है। उच्चारण स्थानों के अनुरूप वर्णों का उच्चारण होना चाहिए तथा साथ–साथ हमें आरोह तथा अवरोह में वाचन करना/कराना चाहिए जिससे उचित रसानुभूति हो सके।
- **बलाघात का अभाव –** विद्यार्थियों को इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि कहाँ पर अधिक बल देना है। वाक्यांश के कौन से शब्द के अर्थ पर अधिक बल देना है जिसका अर्थ या भाव की दृष्टि से अधिक महत्व है।
- **विराम चिह्नों के अनुसार न पढ़ना –** पठन क्रिया के समय कुछ विद्यार्थी विराम चिन्हों का उचित प्रयोग नहीं करके पढ़ते हैं जिससे कई बार वाक्यों के अर्थ परिवर्तित हो जाते हैं तथा श्रोता को समझने में कठिनाई होती है।

- **नवीन तथा अपरिचित शब्दों को ठीक से न पढ़ना –** कई बच्चों को कक्षा में नवीन शब्द पढ़ने में कठिनाई होती है। इसका प्रमुख कारण ध्वनि सम्बन्धी प्रशिक्षण का अभाव होता है। जब पठन सम्बन्धी विधियों का ठीक से प्रयोग नहीं किया जाता है तो इस प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

पठन सम्बन्धी त्रुटियों का निवारण

पठन सम्बन्धी त्रुटियों को दूर करने के लिए अध्यापक निम्नलिखित उपाय अपना सकता हैः–

- विद्यार्थियों को लिपि का पूर्ण ज्ञान करवाना चाहिए।
- अध्यापक द्वारा कक्षा में आदर्श वाचन किया जाना चाहिए।
- आवृत्ति व पुनरावृत्ति के माध्यम से अभ्यास करवाना चाहिए।
- पूरी पठन सामग्री पढ़ने के लिए बच्चों को प्रेरित करना चाहिए।
- विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार रोचक सामग्री उपलब्ध कराना चाहिए।
- वाचन प्रतियोगिताओं का आयोजन कराना चाहिए।
- बालकों के शब्द भण्डार में वृद्धि करनी चाहिए।
- बच्चों में उपसर्ग–प्रत्यय, मूलशब्द, पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द इत्यादि का ज्ञान कराना चाहिए।
- पठन के लिए समय निश्चित करना चाहिए एवं पुस्तकालय के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- शारीरिक एवं सांवेगिक दोषों का निवारण करवाना चाहिए।
- कक्षा में पठन हेतु सकारात्मक वातावरण बनाना।

समेकन

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पठन का विशेष महत्त्व है। जीवन में विभिन्न तथ्यों को जानने व समझने के लिए हमें पठन की आवश्यकता पड़ती है। मानव जीवन को प्रभावशाली बनाने हेतु हम पठन योग्यता को विकसित करने के लिए किन–किन विधियों को अपना सकेंगे इस इकाई के माध्यम से हमें एक दिशा मिलती है।

पठन एक सोद्देश्य चिन्तन प्रधान क्रिया है। पठन प्रक्रिया में प्रत्याभिज्ञान, अर्थग्रहण, मूल्यांकन, प्रतिक्रिया एवं अनुप्रयोग सोपनो का पालन किया जाता है। पठन की प्रक्रिया दो प्रकार से सम्पन्न की जा सकती है – सस्वर पाठन तथा मौन पाठन। इसमें दोनों का अपना एक विशिष्ट महत्व व उपयोग है। इस दृष्टि से इसमें विभिन्न रूपों पर चर्चा की गयी है। पठन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास में सहायक होता है। विद्यार्थी पठन में किस प्रकार की सामान्य त्रुटियाँ करते हैं और उन त्रुटियों का निवारण कैसे हो? इस विषय पर भी इकाई में चर्चा की गयी है। हम जिस प्रकार उन त्रुटियों का निवारण कर सकते हैं।

लेखन कौशल

प्रस्तावनाः–

भाषा के दो रूप होते है– लिखित और मौखिक। भावों को प्रकट करनें के लिए ध्वन्यात्मक संकेतो का प्रयोग मौखिक भाषा कहलाता है। यही भाषा लिपिबद्ध कर दी जाय तो लिखित रूप में बदल जाती है।

लिखित भावाभिव्यक्ति के लिए शब्द चयन, वाक्य गठन, विचार–क्रम की सुसम्बद्धता, शुद्ध वर्तनी लेखन, विराम चिन्हों का प्रयोग तथा उपयुक्त भाषा शैली का शिक्षण आवश्यक है।

रचना शिक्षण के विभिन्न शैक्षिक स्तरों के अनुसार अनेक रूप है। माध्यमिक स्तर पर लिखित अभिव्यक्ति की क्षमता के विकास के लिए हम निर्देशित रचना, स्वतंत्र रचना, सृजनात्मक रचना का सहारा लेते है। लिखने की प्रक्रिया वाचिक व्यवस्था को स्थायित्व प्रदान करने का साधन मात्र है किन्तु व्यवहारिक दृष्टिकोण से यदि हम विचारते है तो पाते है कि लिखना, बोलना, सुनना अभिव्यक्ति के ही साधन है। इस इकाई से हम लेखन कौशल के स्वरूप, प्रकार, सृजनात्मक लेखन के विभिन्न रूपों, लेखन के दोष आदि के सम्बन्ध में अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य :–

- लेखन कौशल को परिभाषित कर सकेंगे।
- लेखन के महत्व एवं उसकी प्रक्रिया का उल्लेख कर सकेंगे।
- अनुलेख, श्रुतिलेख, सुलेख एवं स्वतंत्र लेख के अन्तर को स्पष्ट कर सकेंगे।
- लिखित रचना के प्रकारों को जान सकेंगे।
- पत्र लेखन, निबन्ध लेखन, कहानी लेखन, भाव पल्लवन, तथा सार लेखन के क्रम का महत्व बता सकेंगे।
- सृजनात्मक लेखन का महत्व बता सकेंगे।

लेखन कौशल/लिखना सम्प्रत्यय :–

लेखन एक कौशल है। भाषा पर अधिकार प्राप्त करने के लिए जिस प्रकार सुनना, बोलना और पढ़ना महत्व रखता है उसी प्रकार लिखने का भी अपना विशेष महत्व हैं।

मारिया माण्टेसरी के अनुसार– '' लेखन एक शारीरिक क्रिया है जिसमें बालकों को हाथों की गतिविधियाँ करनी पड़ती है।''

राबर्ट लैडो के अनुसार –'' लेखन कौशल से आशय लेखन व्यवस्था के परम्परागत प्रतीकों को लिपि–बद्ध करना है जिन्हे लिखते समय लेखक ने मौन अथवा उच्चारित रूप से प्रयुक्त किया हो अथवा दोहराया हो।''

मनोवैज्ञानिकों में इस बात पर मतभेद है कि पहले लिखना सिखाया जाना चाहिए अथवा पढ़ना सिखाया जाना चाहिए। माण्टेसरी ने पहले लिखने की क्रिया को सरल मानकर लिखना सीखाने की बात पर जोर दिया है लेकिन लेखन की क्रिया वाचन की क्रिया से कठिन है। लिखना भावों एवं विचारों की कलात्मक अभिव्यक्ति है। लेखन कौशल शब्दों, प्रतीकों एवं चिह्नों को क्रम से लिपिबद्ध एवं सुव्यवस्थित करने की कला है।

लेखन का महत्वः–

भाषा पर अधिकार प्राप्ति के लिए जिस प्रकार किसी भाषा का सुनना, बोलना और पढ़ना महत्व रखता है उसी प्रकार लेखन का भी महत्व है। प्राचीन समय से ही भारतवर्ष में सुन्दर लेखन पर विशेष महत्व दिया जाता रहा है। मध्यकाल में भी फारसी भाषा में सुन्दर और सुडौल लेखन(मस्तालीक) को महत्व दिया जाता था। मुद्रण एवं टंकण यन्त्रों के अत्याधिक प्रयोग से लेखन कला का कुछ ह्रास हुआ है फिर भी इसके महत्व को कमतर नही आंका जा सकता है। किसी भी भाषा में दक्षता प्राप्त करने के लिए मौखिक अभिव्यक्ति के साथ–साथ लेखन कौशल में दक्ष होना आवश्यक है। लिखित रचना मौखिक रचना की अपेक्षा अधिक सुगठित, सरल, सशक्त एवं प्रभावपूर्ण होती है। लिखित सामग्री को लम्बे समय तक उसी रूप में संरक्षित रखा जा क्षमता है जिस रूप में वह लिखी गई हो। सांस्कृतिक, व्यावहारिक, साहित्यिक, सामाजिक, शासकीय प्रयोजनों में अधिकांश कार्य व्यवहार लिखित रूप से संचालित होते है। किसी बात के लिखित रूप को ही प्रमाण माना जाता है। ज्ञान के आदान–प्रदान एवं सूचनाओं की प्राप्ति में लिखित माध्यम का अपना विशेष स्थान है। विद्यालयी स्तर पर भी लिखित रचनाओं एवं सामग्रियों के महत्व को हम भली–भाँति जानते है। किसी भी विषय पर क्रमबद्ध रूप में एवं सुसम्बद्ध विचार प्रकट करने का कौशल बिना लेखन कौशल के प्राप्त नही किया जा सकता। लेखन कौशल के विकास से ही छात्रों में साहित्यिक लेखन, सृजन एवं स्वतंत्र भाव प्रकाशन के लिए प्रेरणा प्राप्त होती है। किसी भी भाषा के साहित्य और उसमे अन्तर्निहित ज्ञान को चिरकाल तक बनाये रखने के लिए तथा भावी पीढ़ियों को उससे परिचित व लाभान्वित करने के लिए लिखित रचना का विशेष महत्व हैं। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था तो शिक्षण लेखन के बिना एक पग भी आगे नही बढ़ सकती है। स्वाध्याय के लिए लिखित रचना का होना अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य है।

लेखन कौशल/लेखन की प्रक्रियाः–

लेखन से पूर्व विद्यार्थियों में लेखन तत्परता(तैयारी) का विकास करना आवश्यक होता है। तैयारी के लिए हमे शिक्षण सूत्रों का सहारा लेना चाहिए। इस सम्बन्ध में **जे. मुनरो** का कथन है कि जिन वस्तुओं पर लिखने की शिक्षा दी जाए उनका क्रम इस प्रकार रहे– जमीन पर अंगुली से , श्यामपट्ट पर चॉक से, स्लेट पर चॉक से अन्त में कागज पर कलम से। प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षार्थियों को तख्ती या स्लेट अथवा कापी पर वर्ण रचना का अभ्यास कराया जाता है। धीरे–धीरे वह सुलेख और अनुलेख द्वारा सुन्दर, सुडौल और समाकृतिक शब्दों तथा वाक्यों का लेखन सीखता है।

माध्यमिक स्तर पर लिखित अभिव्यक्ति के विकास के लिए सामान्यतः निर्देशित रचनाओं पर बल दिया जाता है एवं रचना के सम्बन्ध में विद्यार्थियों से चर्चा की जाती है।

रचना शिक्षण के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया अपनायी जाती है–

- विषय तथा विधा का चयन
- विषय का मौखिक विवेचन– चित्र वर्णन, प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के द्वारा
- रूपरेखा प्रस्तुत करना
- लेखन कार्य
- संशोधन कार्य

लिखित रचना शिक्षण की विधियाँः—

लिखित अभिव्यक्ति— लेखन शिक्षण की निम्नलिखित सामान्य विधियों का आश्रय लिया जा सकता है।—

1.**रूपरेखा अनुकरण विधिः—** इस विधि में छात्रों को सुलेख की मुद्रित अभ्यास कापी दी जाती है जिसमें अक्षर या वाक्य बिन्दु के रूप में लिखे रहते है। छात्र उन बिन्दुओं पर पेंसिल घुमाकर अक्षर व शब्द लिखने का अभ्यास करता है।

2. **स्वतंत्र अनुकरण विधिः—** इसमे शिक्षक श्यामपट्ट पर या बालक की कापी में अभ्यास अक्षर या शब्द लिख देता हैं। बालक उनकी नकल कर हूबहू लिखने का अभ्यास करता है।

3.**मॉण्टेसरी विधिः—** इस विधि में छात्र लकड़ी, प्लास्टिक, गत्ते के बने वर्णों के कटआउट के बाहर पेंसिल घुमाता है। इस तरह बालक अक्षरो के स्वरूप से परिचित होता है तथा उसे लिखने का अभ्यास होता है।

4. **जकोटा विधिः—** इस विधि में बालक के समक्ष पूरा वाक्य रखा जाता है तथा बालक अनुकरण के आधार पर एक—एक शब्द लिखता है और मूल वाक्य से मिलाकर अशुद्धि का पता लगाकर उसे दूर करता है।

5. **वर्ण परिचयः—** इस परम्परागत विधि में पहले क्रमशः अक्षर तथा मात्राओं का ज्ञान कराया जाता है उसके बाद मात्राओं तथा वर्णों के मेल से सरल शब्दों को लिखने का अभ्यास कराया जाता है।

6.**शब्द द्वारा अक्षर ज्ञानः—** इस विधि में शब्दों द्वारा बालक को अक्षर ज्ञान कराया जाता है। इसके लिए चित्र या वस्तु को दिखाया जाता है। जैसेः— कबूतर का क, खरगोश का ख।

7.**वाक्य द्वारा अक्षर ज्ञानः—** इसमें वाक्यों द्वारा अक्षर ज्ञान कराया जाता है।

8.**चित्र विधिः—** इसमे चित्रों की सहायता से शब्द और शब्दों की सहायता से अक्षर सिखाया जाता हैं।

कक्षा शिक्षण की दृष्टि से रचना/लेखन के विविध रूप

- → वर्णन
- → पत्र
- → लेख एवं निबंध
- → व्याख्या
- → समीक्षा
- → रिपोर्ट
- → जीवनी
- → आत्मकथा
- → कहानी भावार्थ
- → कविता/रचनाएँ

→ समसामयिक मुद्दों पर स्लोगन

<u>लेखन कराते समय ध्यातव्य बिन्दु</u>:— लेखन कराते समय अध्यापक को निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिएः—

1. चयनित विषय छात्रों के मानसिक एवं बौद्धिक स्तर के अनुरूप होना चाहिए।
2. विषय छात्रों के लिए चिर—परिचित होना चाहिए ताकि वे विषय में स्वाभाविक रूचि ले सकें।
3. वर्णनात्मक विषयों को माध्यमिक/मध्य स्तर पर ही लेना चाहिए।
4. कठिन शब्दों के अर्थ से छात्रों को लेखन से पूर्व ही परिचित करा देना चाहिए।
5. लेखन कार्य का मूल्यांकन सजगता से किया जाना चाहिए।

<u>लेखन कौशल के विकास में आने वाली समस्याएँ :—</u>

लेखन कौशल के विकास में कलम को सही ढ़ग से नहीं पकड़ना, लिखते समय सही तरीके से नही बैठना , प्रारम्भ से ही पेन का प्रयोग के साथ—साथ कुछ अन्य समस्याएँ अधोलिखित है—

1.**शिरोरेखा की उपेक्षा—** देवनागरी लिपि में सभी अक्षरों के ऊपर रेखा होती है जिसे शिरोरेखा कहते है, किन्तु कुछ छात्रों को शिरोरेखा विहीन अक्षर लिखने की आदत पड़ जाती है जो सुन्दर लेखन की दृष्टि से अनुचित है।

2.**शब्दों के बीच स्थान का अभावः—** दो शब्दों के बीच उचित दूरी छोड़नी चाहिए लेकिन कुछ छात्र ऐसा नही करते फलतः लेखन खराब हो जाता है।

3.**अक्षरों का विकृत आकारः—** कुछ छात्र अक्षरों को टेढ़े—मेढ़े या छोटा—बड़ा लिखते है जिससे लेखन विकृत हो जाता है।

4.**विराम चिह्नों का अभावः—** लेखन में विराम चिह्नों का अभाव प्रायः देखने को मिल जाता है इससे लेखन को पढ़ने व समझने में कठिनाई होती है।

5.**सुलेख, प्रतिलेख एवं श्रुतिलेख का अभावः—** आजकल कक्षाओं मे इनका अभ्यास नही कराया जाता जिससे छात्रों की लेखनी सुंदर नही बन पाती एवं गति भी प्रभावित होती है।

6.**लिपि, स्वर, मात्रा के ज्ञान का अभावः—** छात्रों में लिपि स्वर एवं मात्रा सम्बन्धी ज्ञान का अभाव होने के कारण लेखन में अशुद्धता एवं मात्रात्मक दोष देखने को मिलता है।

<u>लेखन कौशल विकास में आने वाली समस्याओं का निराकरण</u>:—

लेखन कौशल/लेखन विकास में आने वाली समस्याओं के निराकरण हेतु अद्योलिखित प्रयास किये जाने चाहिए—

1.छात्रों को सही ढ़ंग से बैठकर लिखने, कलम पकड़ने व कॉपी सीधा रखने का तरीका बताना चाहिए।

2.छात्रों को स्वर मात्रा एवं लिपियों की समझ/ज्ञान सही ढ़ंग से कराना चाहिए।

3.सुलेख, श्रुतलेख एवं अनुलेख का पर्याप्त अभ्यास का अवसर देना चाहिए।

4.छात्रों को विराम चिह्नों के उचित प्रयोग के बारे मे अवगत एवं अभ्यास कराना चाहिए।

5.लेखन की विषयवस्तु उनके मानसिक स्तर के अनुकूल रखनी चाहिए।

6.लेखन की सुधारात्मक जाँच छात्रों के समक्ष ही करनी चाहिए।

7.छात्रों को उनकी त्रुटियों एवं कमियों से अवगत कराते रहना चाहिए।

8.लेखन सामग्री का मूल्यांकन सजगता से करना चाहिए।

समेकनः—

इस इकाई के माध्यम से यह सीखा गया कि भावों और विचारों को क्रमबद्ध रूप से लिखित रूप में अभिव्यक्त करना ही लेखन है। लेखन का महत्व हमारे जीवन के विभिन्न संदर्भों से जुड़ा हुआ है। सृजन, भावप्रकाशन एवं स्वाध्याय के लिए लिखित रचना का अपने विशेष महत्व है। लेखन कौशल का विकास उसकी सही प्रक्रिया के अनुसार होना चाहिए। कक्षा शिक्षण की दृष्टि से लेखन के विविध स्वरूप होते हैं और हर स्वरूप के लेखन की एक विशेष देन होती है। लेखक कौशल का विकास करते समय अनेक विधियों पर कार्य किया जाता है जिसका उद्देश्य सम्पन्न रूप से छात्रों को लेखन कौशल में प्रवीण बनाना होता है। लेखन का अभ्यास कराते समय छात्रों के मानसिक स्तर, रूचि, विषय—वस्तु पर विशेष ध्यान देना चाहिए। लेखन कौशल के विकास में आने वाली समस्याओं जैसे अक्षरों का बड़ा—छोटा आकार, मात्रात्मक त्रुटियों, शब्दों एवं पंक्तियों के बीच में अधिक दूरी का सजगता से आकलन करते हुए उन्हे दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

इकाई के अंत में अभ्यास कार्य—

1.भाषाई कौशलों से आप क्या समझते है ? बताइयें।

2.श्रवण कौशल को प्रभावित करने वाले कारको पर चर्चा कीजिए।

3.मौखिक अभिव्यक्ति से आप क्या समझते हैं?

4.पठन कौशल का अर्थ एवं महत्व बताइये।

5.पठन के प्रकारों का संक्षेप में वर्णन करें।

6.सस्वर वाचन और मौन वाचन की उपयोगिता बताइये।

7.लेखन कौशल के उद्देश्य एवं अर्थ पर प्रकाश डालिए।

8.लिखित रचना शिक्षण की विधियों की चर्चा कीजिए।

9.लेखन कौशल के विकास में आने वाली समस्याओं एवं उनके समाधान पर प्रकाश डालिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ एवं उपयोगी पठन सामग्रीः—

- पाण्डेय, रामसकल (1993) हिन्दी शिक्षण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- लाल, रमन बिहारी (2003) हिन्दी शिक्षण रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ
- भटनागर, शरद (2013) हिन्दी भाषा शिक्षण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- चतुर्वेदी, शिखा (2005) भाषा एवं साहित्य आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
- त्यागी, एस. के (2011) हिन्दी भाषा शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- मंगल, उमा (2003) हिन्दी शिक्षण, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली
- सिहं, निरंजन कुमार (2000) राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
- NCERT: सरल हिन्दी व्याकरण व रचना
- NCERT: हिन्दी शिक्षण प्रविधि ES-345

- कुमार, कृष्ण (2007): बच्चे की भाषा और अध्यापक, नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली।
- श्रीवास्तव, रविन्द्रनाथ (1989): भाषा शिक्षण, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
- IGNOU (2008) हिन्दी शिक्षण प्रविधि खण्ड–2
- योग्यताओं का विकासः IGNOU: नई दिल्ली।
- पाण्डेय, के.पी. (2001): हिन्दी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा

ई–विषय सूचीः–

https://ncert.nic.in

https://scert.gov.in

e-LOTS

इकाई –4:

कक्षा प्रक्रियाएँ तथा आकलन

कक्षा प्रकिया की समझ छात्रों की उपलब्धि में वृद्धि करने में मदद करती है। इसमें अध्यापन के दौरान कक्षा में होनेवाली समस्त क्रियाएँ, गतिविधियाँ, चिंतन, विमर्श इत्यादि शामिल होते हैं। **पी. डब्ल्यू जैक्सन** के अनुसार– ''शिक्षा अंतःक्रिया के दौरान शिक्षक छात्रों का प्रश्न सुनकर अनुक्रिया व निर्देशन करके उनको शाब्दिक अभिक्रियाएँ प्रदान करता है।'' अध्यापक जब कक्षा में पढ़ाता है तो उसका अध्यापन अधिकांशतः अध्यापक कथन होता है। इसके बीच में कभी–कभी छात्रों के प्रश्न व उत्तर अवश्य सम्मिलित होते हैं। अध्यापक व छात्रों की यह शाब्दिक अन्तःक्रिया अध्यापन की प्रमुख विशेषता है। इस अन्तःक्रिया के विश्लेषणात्मक अध्ययन से इसके स्वरूप के विभिन्न आवश्यक पक्ष स्पष्ट होते हैं जिन्हे अध्यापन प्रक्रिया में समाविष्ट करने पर अध्यापन की प्रभावशीलता को बढ़ाया जा सकता है।

कक्षा कक्ष की प्रक्रियाओं एवं क्रियाकलापों में हिन्दी की अनुभूति, ज्ञान और मूल्यों का अधिगम कराने के लिये शिक्षक व विद्यार्थियों के मध्य अंतःक्रियाएँ होती है। विद्यार्थियों को अपने जीवन के संबंध में नये आयामों, पक्षों एवं क्षेत्रों से अवगत कराया जाता है। हिन्दी विषय में आने वाली विषय वस्तु के प्रति समझ विकसित की जाती है ताकि विद्यार्थी स्वयं की अवधारणा बना सके। इससे हिन्दी अध्ययन की कक्षाओं में विद्यार्थियों को स्वतंत्र चिंतन की ओर अग्रसर करने का प्रयास किया जाता है।

कक्षा की प्रक्रिया में निम्नलिखित तीन अवयव होते हैं–

- **शिक्षक व्यवहार–** इसमें शिक्षक द्वारा योजना, निर्देश और प्रबंधन जैसे कक्षा में किये जाने वाले सभी कार्यों का समावेश होता है।
- **छात्र व्यवहार–** इसमें अकादमिक अधिगम के साथ कक्षा में छात्र द्वारा किये जाने वाले सभी कार्य शामिल होते है।
- **व्याख्यान–** यह एक मौखिक विधि है और विचारों को पाठ में प्रकट करने की प्रक्रिया है।

कक्षा–कक्ष की प्रक्रियाओं को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

- शिक्षण के पूर्व
- शिक्षण के दौरान
- शिक्षण के पश्चात्

➢ योजना / परिकल्पना शिक्षण के उद्देश्य
विद्यार्थियों का आकलन

➢ विद्यार्थियों को समझना शिक्षण की विधि का चयन
प्रगति पर चर्चा

- विषय ज्ञान
  दोहराव

विभिन्न गतिविधियाँ

सहायक सामग्री का प्रयोग
उदाहरण देना
श्यामपट्ट कार्य

के. डेविस ने कक्षा–कक्ष व्यवस्था की प्रक्रिया में निम्नलिखित चार स्तरों या पदो को स्थान दिया है–

- **नियोजन** – शिक्षण कार्य प्रारंभ करने से पूर्व शिक्षक पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु को तार्किक रूप से व्यवस्थित करें। इसके बाद शिक्षण उद्देश्यों का निर्धारण करें और उनको व्यावहारिक पदों में लिखें। इसके उपरान्त वह प्रकरण की शिक्षा हेतु उपयुक्त रणनीतियों का निर्धारण करें।
- **व्यवस्था** – शिक्षक अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये सीखने के संसाधनों को संगठित करें साथ ही कक्षा में उपयुक्त सीखने के वातावरण की रचना करें।
- **छात्रों को अग्रसर तथा प्रेरित करना** – शिक्षक का प्राथमिक कार्य छात्रों को सीखने के लिये प्रेरित करना है। वह छात्रों को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए अग्रसर तथा प्रेरित करें।
- **नियंत्रण** – इस पद में निम्न क्रियाएँ निहित हैं–
  (1) सीखने या अधिगम प्रणाली का अवलोकन करना।
  (2) शिक्षण–अधिगम प्रणाली का मूल्यांकन करना।
  (3) शिक्षण–अधिगम प्रणाली को उन्नत बनाना।

हिन्दी भाषा में अध्यापक को अपनी विषय वस्तु के स्पष्टीकरण के लिये परिचर्चा, संगोष्ठि, अभिनय का सहारा लेना होता है। अतः इसके लिये एक अलग कक्षा–कक्ष की आवश्यकता होती हैं।

परिचय

पढ़ने-पढ़ाने के प्रक्रिया के दौरान अकसर इस बात पर बल दिया जाता है कि इसका आकलन कैसे किया जाय। पढ़ने-पढ़ाने कि प्रक्रिया तभी सफल मानी जाती है जब हमारे बच्चे अच्छे अंको से उत्तीर्ण होते हैं। लेकिन सवाल उठता है कि क्या केवल अंक ही अच्छी पढाई कि कसौटी है? फिर सवाल यह भी उठता है कि अगर अच्छे अंक इसकी कसौटी नही है तो फिर ऐसा क्या है जिसके लिए कक्षायी अभ्यासों में इतनी कवायद की जाती है। हिन्दी भाषा में आकलन के क्या मायने हैं और बच्चों की भाषिक क्षमताओं का आकलन कैसे किया जाए? बच्चों की विभिन्न भाषिक क्षमताओं का आकलन करते समय किन-किन बिन्दुओं का ध्यान रखा जाए।

आकलन :- आकलन का तात्पर्य उन प्रक्रियाओं से है जो अधिगम कर्ता की उपलब्धियों को निरंतर मापने के लिए किया जाता है। इसके अंतर्गत आंकड़ों का संग्रह कर व्याख्या के लिए

उसे व्यवस्थित किया जाता है। उदाहरण के लिए बाजार में जब कोई भी इंसान सामान खरीदने जाते है। इस क्रम में कई दुकानों से उसका मूल्य, ब्रांड, रंग, आकार का मिलान करते है। अपनी जरूरत के हिसाब से तथा आर्थिक स्थिति के आलोक में यह तय करते हैं कि वह सामग्री लेना उपयुक्त होगा या नहीं।

इसी प्रकार अगर हम विद्यालय में किसी बच्चे की उपलब्धि का आकलन करते है तो इसके लिए भी कई विधि अपनाते है। उदाहरण स्वरूप - अगर पर्यावरण की कक्षा ले रहे होते हैं तो पाठ्य विषय वस्तु की जानकारी देने के उपरांत उपलब्धि परीक्षण हेतु कुछ मौखिक या लिखित प्रश्न भी पूछ सकते है।

इसके अतिरिक्त कोई परियोजना कार्य या कक्षा से बाहर पर्यावरण अध्ययन के पाठ से जुड़ी जानकारियों के उपयोग से संबंधित बच्चों की क्रियाओं का अवलोकन कर सकते हैं। इस प्रकार आकलन में अधिगम से जुड़े सभी आंकड़ो एवं प्रमाणों का संकलन किया जाता है। ये आँकड़े या सूचनाएँ विभिन्न स्तरों से अलग-अलग प्रकार के क्षेत्रो एवं प्रक्रियाओं द्वारा एक्त्रित किए जाते हैं। आकलन का उद्देश्य हमेशा बच्चों की शैक्षिक प्रगति की जानकारी एकत्रित करना एवं उनके स्तर मे सुधार करना होता है। आकलन का उद्देश्य निश्चय ही सीखने - सिखाने कि प्रक्रिया का चुनाव एवं सामाग्री का सुधार करना है और उन उद्देश्यों पर पुनर्विचार करना है जो विद्यालयों के विभिन्न चरणों के लिए तय किये गए हैं। आकलन के द्वारा यह तय किया जााता है कि अधिगमकर्ता की क्षमता किस हद तक विकसित हुई है।

आकलन के विभिन्न तरीके :-

आकलन के चार मूलभूत तरीके है :-

I.व्यक्तिगत आकलन- यह आकलन शिक्षार्थी विशेष को केन्द्र में रखकर किया जाता है।

II.सामूहिक आकलन- इसके अन्तर्गत कक्षा के सभी या छोटे-बड़े समूह में बँटे शिक्षार्थियों के कार्य,व्यवहार,सहयोग,नेतृत्व आदि का आकलन किया जाता है।

III स्व आकलन-इसमे शिक्षार्थी द्वारा स्वयं के सीखने सें संबंधित आकलन किया जाता है।

IV सहपाठियों द्वारा आकलन- इसमें शिक्षार्थी एक-दूसरे का आकलन करते हैं।

- क्या, कैसे और किसे पढाना है?
  आपके विचार से ये तीनो सवाल अलग है या एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए है? 'क्या पढ़ाना है'-वाला सवाल इस बात का जवाब चाहता है कि हम हिन्दी भाषा में बच्चों को क्या पढाते है या क्या पढ़ाना चाहिए। यह सवाल हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्यों के साथ जुड़ा हुआ है और उद्देश्य जुड़े है- भाषा के प्रकार्यों के साथ। हम हिन्दी भाषा को जिन कार्यो के लिए इस्तेमाल करते है-उन कार्यों को बेहतर तरीके सें पूरा कर सके इसके लिए हिन्दी भाषा पर पकड़ बनाना जरूरी है। अगर हम यह समझ जाएंगें कि हमें उच्च प्राथमिक स्तर पर बच्चों को हिन्दी भाषा में क्या पढाना है तो आकलन की प्रक्रिया भी सही तरीके से संपादित कर सकेगें।

दूसरा सवाल ‘कैसे पढाना है’ -वास्तव में हिन्दी भाषा के शिक्षण– शास्त्र से जुड़ा है। इस सवाल के जवाब में उन सभी तौर-तरीकों की चर्चा की जाएगी जिनके द्वारा हम बच्चों को हिन्दी भाषा पढाते है यानी पद्धति की चर्चा की जाएगी,उपागम की चर्चा की जाएगी और उन सभी उपकरणों,तकनीकों की चर्चा की जाएगी जिनके सहारे हम अपनी हिन्दी भाषा की कक्षा का ताना-बाना बुनते है। यह दूसरा सवाल इस मायने में महत्वपूर्ण है कि उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सही तरीकों को अपनाया जाना चाहिए। हमारी कक्षाओं में जितने बच्चे होते है उनके अनुभव, सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अलग होती हैं और एक ही पद्धति या तरीके से सभी की आवश्यकताओं को पूरा करना संभव नही होता यही कारण है कि कक्षा में शिक्षण के लिए एक से अधिक तरीकों के इस्तेमाल पर बल दिया जाता है।

तीसरा सवाल ‘किसे पढ़ाना है’, बेहद महत्वपूर्ण है और यह हिन्दी भाषा से मांग करता है कि वे बच्चों के मन को समझें,उनकी भाषाई क्षमताओं के स्तर को समझें,उनकी भाषिक पृष्ठभूमि को समझे और यह भी समझने की कोशिश करें कि जिन बच्चों को हिन्दी भाषा पढ़ानी है,उनके लिए इस भाषा को पढ़ने का उद्देश्य क्या है। इस सवाल का प्रमुख कारण यह है कि हिन्दी भाषा विभिन्न प्रकार्यो को सम्पन्न करती है। ‘किसे पढ़ाना है’ में एक भाव यह भी छुपा है कि बच्चे किस वर्ग के है और उस वर्ग में हिन्दी भाषा पढाने के उद्देश्य क्या है?

हिन्दी भाषा पढ़ाने के उद्देश्यों की स्पष्टता बच्चों की हिन्दी भाषा संबंधी क्षमताओं का आकलन करने में मददगार होती है। अगर उच्च प्राथमिक स्तर पर हमारा उद्देश्य यह है कि बच्चे हिन्दी भाषा में चिंतन, वाद-विवाद, अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित कर सके तो हमारे कक्षायी अभ्यासों का पूरा बल इस बात पर होगा कि बच्चों को स्व-अभिव्यक्ति और चिंतन के अवसर मिल सके। भारतीय भाषाओं के शिक्षण में स्पष्ट उल्लेख है कि “मूल्यांकन एक सतत् चलने वाली प्रक्रिया है और इसका उद्देश्य है-सीखने वाले की भाषा की संरचना और एकरूपता की समझ का आकलन। इसे विभिन्न संदर्भो में उपयोग करने की क्षमता और इसके सौंदर्यपरक पहल को परखने की क्षमता का भी आकलन के रूप में समझा जा सकता है।” बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2008) में यह कहा गया है कि स्कूली भाषा के संदर्भ में भाषा पाठ्यचर्या का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग है। संवाद और संप्रेषण के अनिवार्य प्राथमिक कार्यो के अतिरिक्त शिक्षण के संपूर्ण क्रिया-कलापों में भाषा माध्यम बनती है तथा अवधारणाओं के निर्माण एवं ज्ञान के सृजन में बुनियादी भूमिका निभाती हैं।

- **विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति का आकलन करने के पैमाने और तरीके–**

मौखिक आकलन -यह भाषायी कौशलों के आकलन की बहुत ही सरल और सटीक तकनीक है । विद्यालय में औपचारिक या अनौपचारिक गतिविधियों के रूप में संवाद कौशल एवं अभिनय कौशल आदि का आकलन किया जाता है। मौखिक आकलन के लिए निम्नलिखित औपचारिक गतिविधियों का आयोजन किया जा सकता है।

I.प्रश्न–उत्तर सत्र-

क. प्रश्न उत्तर सत्र- बच्चों की भाषा संबंधित तत्परता, शब्द संपदा आचरण और भाषा की बनावट संबंधी कौशल जानने के लिए तरह तरह के सवाल बनाये जा सकते है। सवाल पाठ्य पुस्तक की चहारदीवारी के बाहर के भी होने चाहिए। जो शिक्षार्थियों के दैनिक जीवन से जुड़े हों और उनकी रूचियों में शामिल हों।

ख. कहानी से रिश्ता बचपन का ही एक भाग है। कहानी सुनते–सुनते गढ़ने का कौशल या कहानी अपने शब्दों में सुनाते समय शब्दों का चयन और वाक्यों की बुनावट भी आकलन योग्य होते हैं।

ग. बोल कर पढना-भाषा संबंधी-आकलन की पारंपरिक विधियों में यह विधि आज भी समीचीन और प्रासंगिक है। इसके द्वारा शिक्षार्थी के पठन कौशल के साथ उनके उच्चारण, विराम चिन्हों का सटिक प्रयोग, भाषा अभिव्यक्ति आदि का सफल आकलन किया जा सकता है।

घ. वर्णन करना –वर्णन करना प्राथमिक कक्षा के शिक्षाथियों में मौखिक आकलन का एक कारगर जरिया है। देखी, सुनी या पढ़ी बातों का वर्णन करना भी भाषायी कौशल का द्योतक है।

ड०. प्रस्तुती और अभिनय-प्रस्तुती के क्रम में अपनी बात रखने के तरीके, संवाद–कौशल और उसकी प्रभाव उत्पादकता, तथ्य, विषय की समझ आदि का आकलन किया जा सकता है। अभिनय में शिक्षार्थी के संवाद–कौशल के तहत बलाघात, अनुतान, शारीरिक भाषा, हाव-भाव आदि का आकलन किया जाता है।

II **अवलोकन :–** अवलोकन द्वारा चर्चा करना, अभिनय, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, समूह में संवाद, चित्र पढ़ना आदि गतिविधियों का औपचारिक या अनौपचारिक अवलोकन–आकलन का महत्वपूर्ण अंग बन जाता है। इसे कक्षा के अन्दर या बाहर किसी भी स्थान पर कभी भी किया जा सकता है। इसके द्वारा हम सभी शिक्षार्थियों के व्यवहार, रूचि, चुनौती आदि के बारें में जानकारी इकट्ठा करते हैं। अवलोकन के क्रम में किए गए प्रेक्षणों की टिप्पणियों में पूर्वाग्रह से सर्वथा बचने की आवश्यकता है।

III **पोर्टफोलियो :–** पोर्टफोलियो शिक्षार्थी का उद्देश्य विशेष के लिये किए गए कार्य के चुने हुए हिस्सों का संकलन होता है। पोर्टफोलियो किसी भी बच्चा/बच्ची में क्रमिक विकास का सबसे प्रमाणिक रिकार्ड उपलब्ध कराता है। यह स्वमूल्यांकन करने के कौशलों का परिचालन का एक प्रभावी उपकरण सिद्ध हो सकता है। जो विद्यार्थियों को स्वतंत्र चिंतन के लिये प्रेरित करता है। एक समयावधि में एक कक्षा या पूरे विद्यालय सत्रान्त में संकलित कार्य के आकलन हेतु पोर्टफोलियो का उपयोग विशेषकर रचनात्मक मूल्यांकन करने में प्रभावकारी हो सकता है।

पोर्टफोलियो निर्माण के समय मूल सावधानी बरतने की आवश्यकता होगी। पोर्टफोलियो में रिकार्ड सम्मिलित करने से पूर्व उसमें औचित्य पर विचार करना होगा। सभी कागज वस्तुऐं शामिल करने से पहले पोर्टफोलियो निरर्थक एवं कागजों का जंजाल बनकर रह जाएगा।

पोर्टफोलियो में शिथार्थी के समारोह या अवसर विशेष पर बनाये गये प्रदर्शन, फोटोग्राफी, चित्रांकन आदि को भी शामिल किया जा सकता है।

IV **जाँच सूची :–** जाँच सूची विद्यार्थियों से संबंधित विशेषताऐं, व्यवहार तथा घटना विशेष की स्थिति के बारें में अवलोकन करके उनके आधार पर विश्लेषण करने का दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह शिक्षक को शिक्षार्थी के उन कौशलों की जाँच करने में सहायता करता है जिनमें उन्हें और अधिक प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। शिक्षार्थी के अधिगम के जिन हिस्सों का आकलन करना है उससे संबंधित प्रश्नावली तैयार रहती है। शिक्षार्थी को अपना जबाव हाँ/ना में देना होता है।

V **रेटिंग स्केल :–** रेटिंग स्केल एक यंत्र है, जिसमें निर्धारित किए जाने वाले वस्तु को संख्यांक निर्दिष्ट किया जाता है। रेटिंग स्केल भी एक तरह से जाँच सूची के समान है, लेकिन इसका इस्तेमाल तब करते हैं जब सूक्ष्म विवरण की आवश्यकता पड़ती है। इसमें निर्धारण किए जा रहे वस्तु में गुणस्तर को सूचित करना होता है।

- **विद्यार्थियों की लिखित अभिव्यक्ति का आकलन करने के पैमाने और तरीके–**

  हिन्दी भाषा शिक्षण के संदर्भ में यह महत्वपूर्ण है कि बच्चे भाषा के दोनो रूपों के प्रयोग में कुशलता हासिल कर सके। इसका अर्थ यह है कि भाषा के मौखिक और लिखित दोनो रूपों का प्रयोग । दोनो रूपों में हिन्दी भाषा के प्रयोग की कुशलता का मुख्य लक्ष्य है। हिन्दी भाषा में लिखित अभिव्यक्ति का उद्देश्य यह है कि बच्चे विभिन्न परिचित और अपरिचित संदर्भों और परिस्थिति के अनुसार भाषा का लिखकर प्रयोग कर सकें। लिखित अभिव्यक्ति के बारे में एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि हम न केवल विभिन्न उद्देश्यों बल्कि विभिन्न पाठकों के लिए लिखित अभिव्यक्ति करते है।

  लिखित आकलन सिर्फ लेखन कौशल का ही आकलन नहीं है। इसके द्वारा पढ़ना, समझना, ग्रहण करना, कल्पना करना, स्वतंत्र अभिव्यक्ति देना आदि का आकलन किया जाता है। शर्त बस यह है कि आकलन हेतु जिस उपकरण का प्रयोग किया जा रहा है उसे सर्जनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया हो। यथा जाँच–पत्र संदर्भ का विस्तार करने वाला, कल्पनाशीलता का पोषण करने वाला, अनुभव आधारित उत्तरों का पोषण करने वाला एवं विश्लेषण क्षमता को बढ़ाने वाला हो। हम शिक्षकों को ये जिद छोड़नी होगी कि यदि बालक या बालिका गाय पर निबंध लिख रहा है या रही है तो गाय को चौपाया ही लिखें। यदि वह चार टाँग भी लिख रहा है तो उसे स्वीकृति देनी होगी।

  प्राथमिक कक्षाओं में लिखित आकलन हेतु श्रुति लेख जाँच उपकरण के रूप में प्रयुक्त होता है। यह बच्चों की स्मृति और मात्राओं, तिथि आदि की जाँच नहीं है बल्कि समग्र भाषिक निपुणता/क्षमता की जाँच में भी सहायक है।

  दरअसल हिन्दी भाषा सीखने सीखाने की प्रक्रिया में हमें यह ध्यान रखना होगी कि बच्चे अनेक बार अपने मन की बात कहने के लिये लिखित भाषा का प्रयोग करते हैं। लेकिन हमारी कक्षाओं में लेखन के अभ्यास इतने निरस और उद्देश्यहीन होते हैं कि बच्चे लेखन में कोई रूचि प्रकट नहीं करते। लिखित अभिव्यक्ति का आकलन करते समय हमें इन बिदुओं का ध्यान रखना होगा कि हिंदी भाषा में अपनी बातों या विचारों

के प्रकटीकरण के लिये लिखित भाषा का प्रयोग करने की क्षमता का आकलन उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए ना कि बंधी बंधायी परिभाषा या तयशुदा उत्तर पूछना।

लिखित अभिव्यक्ति एक प्रकार से बातचीत है। जिस प्रकार मौखिक अभिव्यक्ति में बच्चे हिन्दी भाषा की ध्वनियों के सार्थक संयोजन से अपनी बात कहते हैं उसी प्रकार से लिखित अभिव्यक्ति के अन्तर्गत वे हिन्दी भाषा की ध्वनियों के प्रतीक लिपि–चिह्नों के सार्थक संयोजन से अपनी बात कहते हैं। इसमें विराम चिन्हों की भी महती भूमिका है, क्योंकि ये भाषा–प्रयोग को अर्थ भी प्रदान करते हैं । इसमें बच्चों को हिन्दी भाषा में अपने विचार, भाव और कल्पनशीलता एवं सृजनात्माकता को अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है। यही वह क्षमता है जिसमें उनकी भाषायी ज्ञान के प्रयोग की झलक मिलती है।

इसके अतिरिक्त लिखित अभिव्यक्ति का आकलन करने के लिए शिक्षक निम्नलिखित तरीके अपना सकते हैं :–

I गद्य को पद्य में रूपांतरित करना।

II पद्य को गद्य में रूपांतरित करना।

III दिये गये निर्देशों के आधार पर कहानी, कविता, निबंध, पत्र आदि विधाओं की रचना करना।

IV किसी आँखों देखी घटना का लिखित वर्णन करना।

V भाषागत या भाषा–प्रयोग की बारीकियों का विश्लेषण करना।

- **विद्यार्थियों की पढ़ने की क्षमता का आकलन करने के पैमाने और तरीके–**

प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों की भाषायी क्षमताओं में से पढ़ने की क्षमता एक महत्वपूर्ण क्षमता है जिसके माध्यम से बच्चे अपने ज्ञान का विस्तार तो करते ही हैं साथ ही पढ़ी गयी सामग्री के बारे में समझ भी विकसित करते हैं। पढ़ना केवल लिपिबद्ध भाषा को भेदना ही नहीं बल्कि छपी सामग्री से कई स्तरों और उसके कई पहलुओं से अंतःक्रिया करना भी है। पढ़ने की इस समग्र परिभाषा में बहुत से ऐसे कौशल और क्रियाऐं सम्मिलित हैं। हर एक कौशल की सफलता दूसरे कौशलों पर निर्भर करती है यह कहना गलत नहीं होगा कि सिर्फ एक या कुछ कौशलों का होना पढ़ने को अधूरा बनाता है। इस प्रकार पढ़ना एक कौशल नहीं है उसमें बहुत से कौशल निहित हैं जो एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं और पढ़ने का मूल इन कौशलों के अंतः संबंध में ही छिपा है। हम कह सकते हैं कि –

- लिपि (अक्षर–ध्वनि) से परिचय
- भाषा से परिचय
- भाषा की वाक्य–संरचना और शैली से परिचय
- विषय से परिचय

  इनकी मदद के बगैर हम नहीं पढ़ सकते हैं। पढ़ने में ये सभी सहायक होते हैं।

पठन कौशल के मूल्यांकन में मौखिक मूल्यांकन पर विशेष ध्यान देना चाहिए –

I अनुकरण वाचन द्वारा – इसमें बालक की वाचन की गति स्पष्टता, शुद्धता देखना चाहिए। निर्धारित अनुच्छेद देकर उसे पढ़ने के समय को नोट किया जाय। अशुद्ध शब्दों की गणना की जाय। विराम चिन्हों के अनुसार स्वराघात, बलाघात के अनुसार वाचन होना चाहिए।

II कविता पाठ के द्वारा – कविता के पठन में आरोह–अवरोह, गति यति और लय का ध्यान रखा जाय। शुद्ध व स्पष्ट उच्चारण आवश्यक है।

III मौन पठन के द्वारा– एक छोटा सा पाठ या अनुच्छेद को पठन के लिये कहा जाय। तत्पश्चात प्रश्नों द्वार बालक से उत्तर प्राप्त किया जाय। सार, भावार्थ या केंद्रीय भाव के बारे में भी पूछा जा सकता है अथवा प्रारंभ में कुछ प्रश्न श्यामपट्ट पर लिख दिया जाय। मौन पठन करके उन प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ कर बताने को कहा जाय। इसके लिये समय की पाबंदी होनी चाहिए।

IV पूरक या सहायक पुस्तक के द्वारा – शिक्षक पूरक पुस्तक या पुस्तकालाय से अन्य समान स्तर की पुस्तक पढ़ने के लिये दे सकते हैं तथा दूसरे दिन उन पर प्रश्न पूछकर या सारांश पूछ कर पठन कौशल का आकलन कर सकते हैं।

V प्रतियोगिता का आयोजन करके – पठन, कविता पाठ अथवा श्यामपट्ट पर कठिन एवं बड़े शब्द लिखकर वाचन कराकर आकलन किया जा सकता है।

उपर्युक्त विधियों से पठन क्षमता का आकलन संभव है।

आकलन के लिये हमें कुछ बातों को ध्यान में रखना होगा। पठन संबंधी मुख्य बातें इस प्रकार से हो सकते हैं :–

1. आनंद लेते हुए कविता को पढ़ना।
2. आवश्यकतानुसार शब्दों पर बल देना।
3. पढ़ी गयी कविता को अनुमान से आगे बढाना।
4. कविता–कहानी का अर्थ समझते हुए पढ़ना।
5. कविता या कहानी के घटनाक्रम को अपनी कल्पना के आधार पर विस्तार देना।
6. पढ़ी जा रही सामग्री में आगे अपरिचित शब्दों का संदर्भ के आधार पर मतलब ढूँढ़ना।
7. पढ़ी गयी सामग्री को अपनी तरह से प्रस्तुत कर पाना।
8. परिवेश में उपलब्ध सामग्री जैसे– पोस्टर, विज्ञापन बोर्ड, संकेतों, स्कूल, सड़क, दुकानों के नाम, स्कूल में लिखी इबारतों आदि को पढ़ पाना और उनके प्रति समझ बनाना।
9. आवश्यक सूचना एवं संदेशों को समझकर पढ़ पाना।
10. चित्रों को लिखित सामग्री से जोड़ते हुए घटनाओं के बारे में अनुमान लगाना और अपने अनुमान के लिए तर्क भी सुझाना।
11. पोस्टर, विज्ञापन, साईन बोर्डों से अब पत्र–पत्रिकाओं को पढ़ने की तरफ प्रोत्साहित होना।
12. पाठ्य पुस्तक से इतर अपनी पसंद की पुस्तकों चित्रकलाओं, कॉमिक्स आदि पढ़ना और उन्हें पढ़ने के लिये ललक पैदा होना।
13. नये तथा अपरिचित शब्दों के अर्थ ढूँढ़ने के लिये सिर्फ अनुभवों पर या फिर बड़ों की मदद पर ही निर्भर ना रहें अपितु शब्दकोष की सहायता भी अपेक्षित है।

14. भिन्न–भिन्न विधाओं को पढ़ने में रूचि दिखाना और किसी खास विधा के प्रति आर्कषण प्रदर्शित करना।
15. तरह–तरह की पठन सामग्री का संकलन करना और उन्हें पढ़ने के लिये लालायित रहना।
16. बच्चों के सामने किसी घटना या दृश्य का चित्र दिखाकर उस पर अनेक छोटे–छोटे प्रश्न करना, जिनका उत्तर एक वाक्य में हो। बालक चित्र को देखकर प्रश्नों के उत्तर देगा। प्रश्नों में आकार, रंग, वेश–भूषा प्रकृति, दृश्य कौन सा काम कर रहा है आदि अनेक प्रकार के प्रश्न हो सकते हैं।

इन सभी संकेतकों के आधार पर बच्चों के पठन कौशल एवं क्षमता का आकलन किया जा सकता है।

- **विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता, चिंतन क्षमता, वर्णन करने की क्षमता आदि का मूल्यांकन करने के पैमाने और तरीकेः–**

  हिन्दी भाषा शिक्षण के अनेक उद्देश्यों मे से एक उद्देश्य है– बच्चों की कल्पनाशीलता, चिंतन– क्षमता आदि का विकास करना। वैसे जहाँ तक चिंतन क्षमता का सवाल है, वह विभिन्न भाषायी क्षमताओं में उपस्थित होती है। जब हम सुनते हैं तो कही जा रही बातों कें बारें में चिंतन करते हैं कि क्या कहा जा रहा है और कही गयी बात का मंतव्य क्या है? जब हम बोलते हैं तो सोच–समझकर ही बोलते हैं। क्या कहना है और कैसे कहना हैं?जब हम पढ़ते हैं तो पढ़ी जा रही और पढ़ी गयी सामग्री के बारें में चिंतन करते हैं कि इसमें क्या कहने का प्रयास किया गया है और वह उचित है या नहीं आदि? जब हम लिखतें हैं तो उसमें भी चिंतन शामिल होता है क्या कहना/लिखना है और जो कहना/लिखना है उसके लिये किस तरह से सटीक भाषा का प्रयोग करना है?

  अन्य विषयों की तरह हिन्दी भाषा में भी चिंतन–क्षमता एक महत्वपूर्ण पक्ष हैं जिसमें ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। हिन्दी भाषा शिक्षण में कल्पनाशीलता का विकास एक मुख्य उद्देश्य है जो बच्चों में भाषायी सृजनशीलता पर बल देता है। कल्पना और चिंतन बच्चों को एक बेहतर तथा प्रभावी वक्ता एवं लेखक बनने में मदद करते हैं। शिक्षक शिक्षण के दौरान अनेक तरीकों से बच्चों की इन क्षमतओं का आकलन कर सकते हैं। उदाहरण के लिये :–

- बच्चों से आँखों देखी घटना का वर्णन करने के लिए कहना। उनसे अक्सर इस बात पर चर्चा करना कि आज खास क्या घटा? आज जब तुम स्कूल आ रहे थे या स्कूल से वापस जा रहे थे तो तुमने क्या–क्या देखा? उसके बारे में बताओं। यह बातचीत जितनी अनौपचारिक होगी उतना ही बच्चे निःसंकोच रूप से अपनी बात कहेंगें और वर्णन करेंगें। यह वर्णन मौखिक और लिखित दोनो तरीकों से हो सकता है। यहाँ लिखित वर्णन से पहले बच्चों के साथ मौखिक रूप से बातचीत अवश्य कर ली जानी चाहिए।
- बच्चों से कहा जा सकता है कि वे पढ़ी गयी किसी कहानी का अंत परिवर्तित करके कहानी को दोबारा सुनायें/लिखें। स्वयं कोई कहानी शुरू करके उसका विकास और अंत भी विभिन्न बच्चों से करवाया जा सकता है। कहानी को आगे बढाने और कहानी का अंत परिवर्तित करने के लिए एक ओर जहाँ कल्पनाशीलता की आवश्यकता होगी

वहीं दूसरी ओर तर्क, चिंतन–क्षमता की भी आवश्यकता होगी क्योंकि कहानी को आगे बढ़ने के लिए एक आधार की आवश्यकता होगी।

- बच्चों को विषय देकर उससे कहानी, कविता, निबंध, पत्र विज्ञापन, संदेश, सूचना आदि लिखवायी जा सकती हैं।
- बच्चों से कहानी कहने के लिये भी कहा जा सकता है।
- बच्चों से पहेलियाँ बनवायी/पूछी जा सकती हैं।
- बच्चों के साथ उनके घर–मुहल्ले, गाँव–शहर, देश की विभिन्न समस्याओं और समाधानों पर चर्चा की जा सकती है।
- किसी विषय पर बच्चों को भाषण, वाद–विवाद आदि के लिए कहा जा सकता है। इससे बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के साथ–साथ कल्पनाशीलता और चिंतन क्षमता– दोनो का आकलन हो सकता है।

शिक्षा की गुणवत्ता का आकलन करने के लिए मूल्यांकन की विधियाँ आवश्यक होती है। परन्तु सीखने की परिणामों का छोटी और बड़ी परीक्षाओं के माध्यम से आकलन करने की प्रक्रिया के रूप में आकलन पर एकतरफा ध्यान केन्द्रित करने के फलस्वरूप नीति निर्माताओं ने शिक्षा के समग्र उद्देश्य तथा अभिप्राय की प्राप्ति को संभव बनाने वाली प्रक्रियाओं की उपेक्षा की है। आकलन कहलाने वाली यह चीज क्या है इसका उत्तर तभी दिया जा सकता है जब हम पहले तीन बुनियादी प्रश्न पूछें– आकलन किस लिये है? वह किसके लिये है तथा वह किस चीज को मापता है ? यदि हम इन प्रश्नों के उत्तरों को स्पष्ट और सुसंगत रूप से शिक्षा के लक्ष्यों तथा प्रयोजनों से जोड़ने में समर्थ होते हैं तो आकलन अर्थपूर्ण होता है।

संदर्भ :–

- अग्निहोत्री, रमाकान्त (1996) कौन भाषा कौन बोली, शैक्षिक संदर्भ, एकलव्य, गोपाला।
- कुमार, कृष्ण (2007) : बच्चे की भाषा और अध्यापक – एक निर्देशिका, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
- प्रारंभिक स्तर की कक्षाओं का पाठ्यक्रम (2008) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- भारतीय भाषाओं का शिक्षण शास्त्र आधार पर (2009), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा – 2005, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- वसंत भाग 1, हिंदी भाषा की कक्षा 6 की पाठ्य–पुस्तक (2006), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- वसंत भाग 1, 2 हिंदी भाषा की कक्षा 7 की पाठ्यपुस्तक (2007), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।
- शर्मा, ऊषा (2012) : कैसा हो शिक्षण पाठन चिंतन धारा, चैरिटेबल, गाजियाबाद, उत्तरप्रदेश।
- चतुर्वेदी, स्नेहलता (2020) : पाठ्यक्रम में भाषा, अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।
- ई विषय सूचीः–
- https://ncert.nic.in
- https://scert.gov.in
- e-LOTS